Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेहरुन्निसा परवेज़ और उनका कहानी-संसार

डॉ० जाहिदा जबीन
डॉ० जौहरा अफ़जल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेहरुन्निसा परवेज़ और उनका कहानी-संसार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेहरुन्निसा परवेज़

और

उनका कहानी-संसार

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 5697 8 (VI)
Dated 17-5-03

डॉ० ज़ाहिदा जबीन
एवं
डॉ० ज़ौहरा अफ़ज़ल

G.M.C.E.J
5697

मोहित पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली 110 002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम प्रकाशित 2003

© Authors

मोहित पब्लिकेशन्स

4675/21 अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली 110 002

दूरभाष : 3255141, 3284136

भारत में मुद्रित

श्री पी.के. गोयल द्वारा मोहित पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 110 002 के लिये प्रकाशित एवं तरूण ऑफसेट प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य, विशेषकर गद्य साहित्य, का आश्चर्यजनक विकास हुआ है, जिसमें हिन्दी कहानी का विशेष स्थान है। सन् 1960 के उपरांत कई नए प्रतिभावान कहानीकारों का आगमन हुआ, पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी यथार्थ का चित्रण करके अपना योगदान दिया। पुरुषों की अपेक्षा महिला लेखिकाओं ने अधिक सच्चाई और ईमानदारी से मानव भावनाओं का चित्रण किया, साठोत्तरी महिला कहानीकारों में श्रीमती मेहरून्निसा परवेज़ का विशेष महत्व है।

इनकी कई कहानियाँ मध्यप्रदेश, दिल्ली, आगरा, केरल के शिक्षा मण्डल विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम में निहित की गई हैं और कई शोधार्थी इनके साहित्य पर शोध कार्य कर रहे हैं, साहित्य जगत में इनके 40 वर्ष पूरे हो चुके हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं ने बड़े ही साहस और आत्मविश्वास के साथ एक क्रांति सी लाई है और मेहरून्निसा परवेज़ ने भी बराबर इस परम्परा की कड़ी को जोड़े रखा है।

सर्वहारा वर्ग, शोषित वर्ग एवं बस्तर जिले के आदिवासियों की दरिद्रता, शोषण, समस्याओं को तीव्र दृष्टि से देख कर लेखिका इस ढंग से कहानियों में प्रस्तुत करती हैं कि पाठक भावुक होकर समाधान के बारे में सोचने के लिए विवश हो जाता है। इसके अतिरिक्त आप नारी की समर्थक होने के नाते नारी के दुख-दर्द, समस्याओ, शोषण, तड़प, छोटी से छोटी भावना को पहचानने की क्षमता रखती हैं। लेखिका के अनुसार नारी स्वतंत्रता के लिए किया जाने वाला काम पर्याप्त नहीं है। यह सब ढकोसला है। नारी एक अधूरा-सा जीवन जी रही है। उसे जो मिला है, वह सब अधूरा और बनावटी है। उसे इस अधूरेपन और बनावटी जीवन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से स्वयं निकल कर आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान से जीना है तथा छोटे-छोटे दुखों से निकल कर स्वयं को मज़बूत करना है। यही शिक्षा, यही गुरूमंत्र लेखिका अपने साहित्य के माध्यम से आज की नारी को देना चाहती हैं।

नारी से सहानुभूति होने या उसकी पक्षपाती होने का यह अर्थ नहीं है कि उन्होंने नारी की खोट या कमियों को प्रकाश में न लाया हो। लेखिका ने उसके भद्दे एवं कलंकित रूप पर भी प्रकाश डाला है। नारी दमन का विरोध करते हुए भी उन्होंने नारी की कमियां चुनी हैं और पुरुष को मात्र खलनायक के रूप में न प्रस्तुत कर उसके सहायक रूप में भी दर्शाया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

	भूमिका	*vi*
प्रथम अध्याय	मेहरुन्निसा परवेज़–एक परिचय	1
द्वितीय अध्याय	"आदम और हव्वा" की कहानियों का मूल्यांकन	13
तृतीय अध्याय	"ग़लत पुरुष" की कहानियों का मूल्यांकन	46
चतुर्थ अध्याय	"अंतिम चढ़ाई" की कहानियों का मूल्यांकन	61
पंचम अध्याय	"एक और सैलाब" की कहानियों का मूल्यांकन	75
षष्ठ अध्याय	"सोने का बेसर" की कहानियों का मूल्यांकन	94
सप्तम अध्याय	"अयोध्या से वापसी" की कहानियों का मूल्यांकन	112
	उपसंहार	131
	परिशिष्ट	151

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम अध्याय

मेहरुन्निसा परवेज़–एक परिचय

(क) जीवन-परिचय

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ जी का जन्म मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में दिनांक 10 दिसम्बर 1944 सन् को हुआ है, इनके पिता श्री अब्दुल हमीद खान मध्यप्रदेश के कई शहरों में डिप्टी-कलेक्टर रहे हैं और वह मध्य प्रदेश में ही सेवा-निवृत्त हुए। इनके पिता हिन्दी भाषा के प्रेमी और एक विद्वान व्यक्ति थे, माता शहजादी बेगम एक मुगल घराने से थीं, वह एक घरेलू महिला थीं और उर्दू-अरबी भाषा का उन्हें भरपूर ज्ञान था। इनके माता-पिता का देहान्त हो चुका है। इनके एकमात्र छोटे भाई अब्दुल रहीम खान एक सरकारी अधिकारी हैं।

माता-पिता की इकलौती पुत्री होने के कारण इन्हें भरपूर स्नेह और ममता मिली। यह अपने माता-पिता की लाड़ली पुत्री रही हैं बेटी होने के अतिरिक्त यह अपने माता-पिता की मित्र भी रही हैं। मेहरुन्निसा जी अपने पिता के बारे में कहती हैं–"हम लोग दोनों बाप-बेटी तो रहे ही, बहुत अच्छे दोस्तों में रहे, यानी मेरी ऐसी कोई भी चीज जो उनसे छुपी हो, ऐसा कभी नहीं रहा, चाहे वह कितनी भी गोपनीय बात हो, वह सब जानते थे और उनकी हर बात मैं जानती थी।"[1] लेखिका अपने माता-पिता से सदा प्रभावित रही हैं और उनसे प्रेरणा लेती रही हैं। इन्होंने अपनी कई पुस्तकें अपने माता-पिता के नाम से समर्पित की हैं। माता-पिता के आपसी तनाव के कारण इनका बचपन दुःखी भी रहा है। उनके अलगाव न होने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के कारण उनका पुत्री के प्रति स्नेह ही था। दोनों ही आपको चाहते थे जिस कारण वे आपसे अलग नहीं होना चाहते थे और स्वयं पति-पत्नी भी अलग न हो पाए। तीनों—माता, पिता, पुत्री—नजदीकी दोस्त थे, इसी दोस्ती ने तीनों को बांधे रखा।

इनके जन्म की एक विचित्र कहानी यह है कि इनका जन्म एक चलती बैलगाड़ी में यात्रा के दौरान हुआ। फिर उन्हें और इनकी माता को वापस गांव ले जाया गया और मुस्लिम परम्परा के अनुसार एक मौलाना ने इन्हें गोद में उठाकर इनके कान मे अज़ान दी और इनका नामकरण यह कह कर दिया कि पहले इतिहास में एक महान महिला नूरजहाँ का जन्म इसी ढंग से हुआ है, जिसका वास्तविक नाम मेहरुन्निसा था, इस प्रकार उस मौलाना ने इनका नाम भी मेहरुन्निसा रखा।

(ख) शिक्षा

अपनी शिक्षा के विषय में मेहरुन्निसा लिखती हैं—"मुझे इतनी तालीम मिली कि मैं अपना साहित्य लिख सकती हूँ और इतनी भी तालीम नहीं मिली कि मैं अपनी जिन्दगी के लिये नौकरी कर सकती थी—सरकारी नौकरी जिसको कहा जाये, ... "।[2]

मात्र 15 (पन्द्रह) वर्ष की आयु में विवाह होने के कारण मेहरुन्निसा जी की शिक्षा छूट गई। उस समय इन्होंने 9वीं कक्षा तक शिक्षा पाई थी, फिर इन्होंने महारानी लक्ष्मी बाई कन्या विद्यालय जगदलपुर में हायर सैकेण्डरी (बारहवीं कक्षा) तक शिक्षा पाई, बाद में टुकड़े-टुकड़े करके स्वयंपाठी के रूप में (प्राइवेट) बी॰ए॰ (स्नातक स्तर) तक शिक्षा पाई।[3]

यद्यपि आपने अधिक पदवियाँ प्राप्त नहीं कीं किन्तु अध्ययन करने की आपको बचपन से ही रुचि रही है, इनके पिता का एक छोटा-सा पुस्तकालय था जहाँ बैठकर ये बड़े-बड़े महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ा करती थीं। "मैंने अपने आस-पास की जिन्दगी से भी अध्ययन किया है जैसे एक मामूली सी चींटी, एक पक्षी, यह मौसम, पेड़-पौधे और यह महसूस किया है कि इनक अंदर भी एक फीलिंग—एक गृहस्थी है, जितनी हमारे अंदर है।"[4]

संस्कार

लेखिका का जन्म एक अच्छे खाते-पीते घराने में हुआ है। माता-पिता की चहेती पुत्री होने के कारण ये उनके बहुत निकट रही हैं, और उनसे प्रेरणा ली है। अध्ययन करने की रुचि और आदत इन्हें अपने पिता से मिली है। "मैंने बड़े-बड़े महापुरुषों से तो खैर जिन्दगी में सीखा ही है, उनकी जीवनी पढ़ी है, क्योंकि मेरे पिताजी की बहुत अच्छी लाइब्रेरी थी तो उन पुस्तकों के बीच में अध्ययन किया है।"[5] अपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माता-पिता से मित्रता का सम्बंध होने के कारण ये उनकी राज़दार रही हैं अर्थात् ये उनके सुख-दुखः, आपसी तनाव आदि से परिचित थीं और लेखिका के जीवन में भी ऐसी कोई बात न थी, जो उनके माता-पिता से छुपी हो। "मेरी माँ बेहद सहनशील महिला थीं, बोल्ड भी बहुत थीं।"[6] लेखिका की लोगों के दु:ख-दर्द को पहचानने की शक्ति अपनी माँ से मिली है। लेखिका के शब्दों में, "मैंने अपनी माँ के नाम से एक पुस्तक समर्पित की है और उसमें ये शब्द लिखे हैं कि–"शहजादी बेगम (माँ) के नाम, जिसने मुझे दर्द की पहचान कराई ..... इस दर्द को मैंने हर जगह से ढूंढ निकाला। यह पहचान मेरी आंख में इतनी समा गई कि मैंने इस दर्द को, जहाँ-जहाँ भी मुझे दिखा, उन पात्रों को कभी नहीं छोड़ा, उनके दर्द को लिखा।"[7] इस प्रकार के लोगों के दर्द को पहचान कर साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने की शक्ति इन्हें माँ से मिली है। वैसे इनके घर का वातावरण साहित्यिक नहीं था, फिर भी इन्होंने साहित्य के माध्यम से अपने मन की बात और लोगों के दुख-दर्द को व्यक्त किया। लेखिका ने अपने साहित्य में निजी अनुभव, परिचित लोगों के जीवन की घटनाओं, भावनाओं, समस्याओं और कुण्ठाओं को भर दिया है।

लेखिका एक स्वाभिमानी महिला हैं जो अपने बल पर जीने, आत्मनिर्भर होने को महत्व देती हैं। "वैसे मैं बहुत स्वाभिमानी रही हूँ और मैं दूसरे की जिन्दगी जीऊं या दूसरे का नाम स्वीकारना, यह मुझे पसंद नहीं रहा।"[8] लेखिका ने अपने पात्रों के माध्यम से पाठकों को भी स्वाभिमान से जीने और आत्मनिर्भर होने की शिक्षा दी है। विशेषकर नारी पात्रों को इन्होंने जीवन के छोटे-छोटे दुखों के पीछे अपना जीवन नष्ट न करके मजबूत होकर जीने की शिक्षा दी है। नारी इनकी सहानुभूति की विशेष केन्द्र रही है। लेखिका समझती हैं कि नारी अधूरा जीवन जीती है क्योंकि उसे जो मिलता है, वह अधूरा होता है और बनावटी होता है। लेखिका के अनुसार, "सिर्फ एक ढकोसला या समझ लिजिए एक बनावटी रूप में उन्हें सारी चीजें प्राप्त हैं।"[9] लेखिका के अनुसार महिलाओं के लिए जो काम हुआ है या हो रहा है वह पर्याप्त नहीं है इसलिए महिलाओं के संदर्भ में एक बहुत बड़ा मिशन करने की आवश्यकता है। लेखिका दूसरों की सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटी। इन्होंने सदा निर्धन, विवश, असहाय लोगों की सहायता की है।

रूढ़िवादी परिवार में जन्म लेने के कारण इनका विवाह पन्द्रह वर्ष की आयु में ही कर दिया गया। लेखिका को आत्मसम्मान से जीने और घुट-घुट कर मरने की अपेक्षा स्वतंत्र व्यक्तित्व से जीने की प्रेरणा अपने परिवार से पैतृकदाय के रूप में प्राप्त हुई थी। वे कठिनाइयों से घबराना नहीं जानती अपितु उनका सामना बड़े साहस से करने की शक्ति रखती हैं। इसी शक्ति के बल पर वह अपने पहले पति से तलाक ले पाई और अन्य नारियों की भाँति समझौता करके घुट-घुट कर नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिया। धार्मिक संकीर्णता का भाव भी इनसे कोसों दूर है, तभी इन्होंने दूसरा विवाह एक हिन्दू व्यक्ति से किया है। हर व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण बचपन में ही माता-पिता के हाथों होता है और लेखिका के इस दृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण भी बचपन में ही अपने माता-पिता द्वारा हुआ है।

इन्होंने बचपन से ही अपने जीवन, आस पास के लोगों और अन्य परिचित लोगों के जीवन, प्रकृति आदि से शिक्षा लेकर लिखना आरम्भ किया था और आज तक निरंतर हिन्दी-साहित्य को अपना योगदान दे रही हैं। वे कहती हैं, "आज भी मैं छुपकर लिखती हूँ, तब तो खैर लिखा करती थी और मैं आज भी किसी को पढ़कर सुनाना पसन्द नहीं करती, जब प्रकाशित हो जाता है, तब भले ही कोई पढ़ता रहे, लेकिन मैं अपनी तरफ से कभी पढ़कर नहीं सुनाती।"[10]

साहित्यिक वातावरण

मेहरुन्निसा हिन्दी जगत के साठोत्तरी कथा-साहित्य की माननीय एवं महत्वपूर्ण लेखिका हैं। लेखनकार्य उनको बचपन से ही प्रिय था। सन् 1963 में, लगभग 19 वर्ष की आयु में उन्होंने साहित्य जगत में पदार्पण किया, जब उनकी पहली कहानी, "पाँचवीं कब्र" छपी। मेहरुन्निसा कहती हैं–"मैं अपने पिताजी से बहुत ज्यादा प्रभावित रही और शायद लेखन शक्ति जो है, मुझे उनसे ही प्राप्त हुई। आप आश्चर्य करेंगे कि मेरी जो लिखावट है, मेरे पिता से बहुत मिलती-जुलती रही है।"[11] इन्होंने अपनी कई पुस्तकें अपनी माता-पिता को समर्पित की हैं। "मैं माँ की भी बहुत ज्यादा ऋणी हूँ।.........दर्द की पहचान मैंने माँ के द्वारा ही जानी, उन्होंने ही मुझे सिखाया दर्द क्या होता है।"[12]

लेखिका "भीगे हुए यथार्थ" को मानती हैं अर्थात् इन्होंने अपने जीवन से शिक्षा लेकर, अपनी कुण्ठाओं को कहानियों में व्यक्त किया है। लेखिका मानती हैं कि लेखक बाहरी जगत से भी बहुत कुछ सीखता है, और ऐसा आवश्यक नहीं है कि लेखक केवल अनुभवों को ही लिखे। साहित्य लेखक के जीवन के निकट होता है लेकिन पाठक के जीवन से दूर नहीं होता। लेखिका ने भी व्यक्तिगत जीवन की छाप अपने साहित्य पर डाली है। "मेरे जीवन में मेरे अपनों ने मुझे जो भी दिया, वह चाहे सुख हो, दुख हो, चाहे घृणा हो, सम्मान हो, चाहे अपमान हो, सब-सब........सबको मैंने अपनी कलम की बत्ती बनाकर, स्याही के तेल में डुबा कर जला दिया और कच्चे माटी के दिये की तरह उसे अपने में समेटे भी रही। दीये की भाँति ही सबको सहकर, अंधेरा झेल कर नन्हा-सा प्रकाश फैलाया।"[13]

इनकी कहानियाँ किसी देश, काल, वर्ग के बन्धनों में सीमित नहीं हैं निम्न वर्ग और आदिवासियों की गरीबी और शोषण को तीव्र नजर से देखकर इन्होंने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। आम नारी के दुख-दर्द, समस्याओं, और छोटी से छोटी बात को पहचानने की क्षमता रखने वाली इस लेखिका ने अपनी अधिकांश कहानियाँ नारी-जीवन पर ही लिखी हैं। लेखिका समझती हैं कि नारी को वह सम्मान नहीं मिलता जिसकी वह अधिकारिणी है।

लेखिका ने महिलाओं की दयनीय स्थिति, शोषण, अंधविश्वास, भीतरी तड़प, पीड़ा को इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि पाठक सोचने के लिए विवश हो जाता है। वे नारी की प्रबल हिमायती हैं। लेकिन ऐसा भी नहीं कि उन्होंने नारी का झूठा रूप प्रस्तुत किया है। इन्होंने नारी की खोट, कमजोरी को भी दिखाया है। उन्होंने नारी के मुंह पर से नक़ाब हटाकर उसका वास्तविक एवं घिनौना रूप भी दिखाया है।

लेखिका ने "चिड़िया" शब्द को एक प्रतीक की तरह लिया है। "मेरे साहित्य के अंदर एक चिड़िया बहुत बार आती है, जो यह चिड़िया बाहर की नहीं, मेरे भीतर की है, जिसे मैंने संदर्भ के रूप में लिया है।........मैंने हमेशा इस चिड़िया से प्रेरणा ली, बार-बार टूटकर फिर खड़े होने की शिद्दत से कोशिश की। यही आत्मबल मैंने अपने पात्रों को देना चाहा।"[14] इनकी कहानियों में मानव जीवन की विभिन्न अनुभूतियों, भावनाओं, सोच का चित्रण हुआ है, जिससे पाठक परिचित तो होता है, लेकिन कहानी पढ़कर पाठक को ऐसा लगता है कि यही है......... यही है वही घटना, वही स्थिति। "मैं अपने पाठकों को उंगली पकड़ कर उन्हें दूर-दूर ले गयी हूँ। उन्हें भटकाया भी, रुलाया भी, हंसाया भी है।"[15]

अपने साहित्य के माध्यम से घर, औरत, पुरुष, जीवन की लाचारियों को करीब से जान कर इन्होंने पाठकों को भी उनसे परिचित कराया है, आप निरंतर अपनी रचनाओं में मानव-जीवन के शाश्वत सत्य को खोज कर प्रस्तुत कर रही हैं। आज आप जानी-मानी और उच्च स्तर की लेखिकाओं में से एक हैं। इनका विशाल साहित्य किसी खजाने से कम नहीं। लेखिका के शब्दों में, "मैं अपने इस खजाने का जिक्र कर रही हूँ, जिसे मैंने शब्द-शब्द करके जोड़ा था। देखती हूँ, कभी घरवालों की चोरी से और अपनी तन्हाई से ऊब कर मैंने जो शब्द-शब्द करके अक्षरों को जोड़ा था, वह मेरे अतीत के मटके में एक कंजूस कुबेर के धन की तरह ही ढेरी में बदल गया।"[16]

आज लेखिका के साहित्यिक जीवन के लगभग तीस वर्ष बीत चुके हैं, सचमुच उन्होंने अपने साहित्य का खजाना जमा किया है और निरन्तर साहित्य जगत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनकी लेखनी की छाया हिन्दी साहित्य-जगत पर दीर्घकाल तक रहेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) विवाह

मुस्लिम परिवारों की पुरानी परम्परा के अनुसार ही लेखिका का विवाह छोटी आयु में ही किया गया। केवल पन्द्रह वर्ष की आयु में इनका विवाह रऊफ परवेज़ से 30 अक्टूबर 1959 में हुआ। तब मेहरुन्निसा जी एक छोटी सी बालिका थीं। वे विवाह जैसी भारी जिम्मेदारी को संभाल पाने में असमर्थ थीं। रऊफ परवेज़ में कट्टरता अधिक थी। इनके सम्बन्ध अधिक देर तक नही टिके। सन् 1970 में इनके पहले पुत्र–सलीम परवेज़–का जन्म हुआ। सन् 1977 में मेहरुन्निसा जी का रऊफ परवेज़ से तलाक हुआ।

इनकी दूसरी शादी 18 दिसम्बर सन् 1978 में श्री भागीरथ प्रसाद (आई॰ए॰एस॰) से हुई। प्रसाद जी और मेहरुन्निसा जी की समस्या एक ही थी। इन्होंने समझौता करके प्रेम-विवाह कर लिया। इनसे इनके दो बच्चों का जन्म हुआ। बेटी–सिमाला प्रसाद–का जन्म सन् 1977 को और पुत्र–समर प्रसाद–का जन्म सन् 1981 को हुआ है। इनके पहले पुत्र सलीम परवेज़ अपने पिता रऊफ परवेज़ के पास ही रहते थे। जवान होने पर स्वयं सलीम अपनी मां से मिलने आए। लेखिका लिखती हैं–"सलीम से मैं पूरे बारह वर्ष बाद मिली, वह भी, वह जब मुझ तक आया।"[17]

व्यवसाय, समाज सेवा तथा राजनीति

छोटी आयु में विवाह हो जाने के कारण आपकी शिक्षा अधूरी ही रह गयी। फिर भी इतनी शिक्षा तो प्राप्त कर ही ली थी कि वे अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकें अपनी लेखनी के माध्यम से। इन्होंने कभी कोई सरकारी नौकरी नहीं की है।

समाज-सेविका के रूप में आपने कई पदों का भार संभाला है। वर्ष 1974 में आपने बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना, जिला बस्तर की अध्यक्षता की है। वर्ष 1975 से ही आकाशवाणी सलाहकार समिति की सदस्य रहीं। वर्ष 1977 में बस्तर जिले की ओर से आप समाज कल्याण परिषद् मध्य-प्रदेश की सदस्या नियुक्त हुई। आप जिले की महिला कांग्रेस की अध्यक्षा भी रहीं हैं।

आप आधुनिक युग की समाज सेविका हैं। विवश और असहाय नारियों से आपको सदा सहानुभूति रही है। आदिवासी एवं महिलाओं की सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए इन्होंने बहुत सहायता दी है। इन्होंने बांछड़ा जाति पर शोध भी किया है। इस जाति के लोग अपनी बेटियों से पेशा करवाते हैं। आपने सन् 1982 में कई गाँवों में बसे बांछड़ा जाति के लोगों के बीच रहकर उनका अध्ययन किया और फिर साप्ताहिक पत्रिका, "धर्मयुग" के 29 मई, 1983 के अंक में इसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांछड़ा जाति से सम्बंधित आपका एक लेख भी प्रकाशित हुआ, इन्हीं बांछड़ा लड़कियों में से एक लड़की "सायरा" है, जिसे आपने उस गन्दगी से निकालकर "हरिजन आदिवासी छात्रावास" जावरा में पढ़ने के लिए भेजा और वहीं उनके रहने की व्यवस्था करवाई। सायरा वह लड़की है जो ग्यारह वर्ष की थी तभी से पेशे पर बैठने से मना कर रही थी कि और तीन बार उसने आत्महत्या करने के असफल प्रयत्न किए थे। इसी सायरा को नया जीवन लेखिका ने दिया।

लेखिका ने शोषित-पीड़ित लोगों, बस्तर जिले के आदिवासियों की समस्याओं पर कई लेख लिखे और उनकी सहायता भी की। जिन पर समाज की नज़र नहीं जा पाती थी, आपने उनको अपनी लेखनी द्वारा समाज और सरकार के सामने लाने का प्रयास किया और उनको उन लोगों पर सोचने के लिए विवश किया।

आजकल आप "बैंकिग बोर्ड" की सदस्या हैं और "नई दुनिया" नामक अखबार के महिला पेज की सम्पादिका का कार्य संभाले हुए हैं।

(घ) साहित्यिक परिचय

लेखिका का साहित्यिक जीवन सन् 1963 से आरम्भ हुआ जब वह 19 वर्ष की थीं। सन् 1963 अक्टूबर में इनकी पहली कहानी, "पाँचवीं कब्र" दिल्ली में छपने वाली मासिक पत्रिका "नई कहानियाँ" में प्रकाशित हुई। इस पत्रिका का सम्पादन कमलेश्वर जी करते थे, "इस कहानी के साथ संपादक जी का वक्तव्य भी छपा था, डेढ़ पेज का। उन्हें यह कहानी बड़ी हैरान-परेशान करती हुई ओर बड़ी विचित्रताएं लिये हुए यानी महसूसा था, जिसे उन्होंने पूरा कर उंस टिप्पणी में लिखा था।"[18]

सन् 1963 अक्टूबर में ही इनकी एक और कहानी, "जंगली हिरनी" साप्ताहिक पत्रिका "धर्मयुग" में प्रकाशित हुई थी। इस बात का उल्लेख लेखका ने "धर्मयुग" पत्रिका के 29 अक्टूबर 1989 अंक में पृ॰ 17 पर किया है।

सन् 1963 से इनकी कहानियां लगभग सभी राष्ट्र-स्तरीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होती आ रही हैं।

इन्होंने साहित्य की कई विधाओं पर लेखनी चलाई है। लेख, डायरी, संस्मरण, यात्राएं, आत्म-परिचय, निबंध, कविता आदि में इन्होंने नियमित लेखन का कार्य किया है। लेकिन यह सब फुटकल रूप में ही पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं, पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित नहीं हुए हैं।

कथा-साहित्य में इन्होंने विशेष रूप से लेखनी चलाई है:-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपन्यास:-

1. "आंखों की दहलीज" प्रकाशन वर्ष 1969.
2. "उसका घर" प्रकाशन वर्ष 1972.
3. "कोरजा" प्रकाशन वर्ष 1977.
4. "अकेला फलाश" प्रकाशन वर्ष 1981.

कहानी-संग्रह:-

1. "आदम और हव्वा" प्रकाशन वर्ष 1972.
2. "टेहनियों पर धूप" प्रकाशन वर्ष 1977.
3. "ग़लत पुरुष" प्रकाशन वर्ष 1977.
4. "फाल्गुनी" प्रकाशन वर्ष 1978.
5. "अंतिम चढ़ाई" प्रकाशन वर्ष 1982.
6. "कोई नहीं".
7. "एक और सैलाब" प्रकाशन वर्ष 1990.
8. "सोने का बेसर" प्रकाशन वर्ष 1991.
9. "अयोध्या से वापसी" प्रकाशन वर्ष 1991.
10. "कानी बाट".
11. "ढहता कुतुबमीनार".
12. "निर्णय".
13. "रिश्ते".
14. "अम्मा".
15. "समर".

बांछड़ा जाति की लड़कियों पर रिसर्च सम्बंधी पुस्तक–

"म्हारी गोरी सी हथेली में
छाला पड़ गयो मारूजी"

बस्तर जिले के आदिवासियों की समस्याएं, शोषित जातियां एवं सामान्य सामाजिक समस्याओं पर लिखे हुए इनके लेख काफी लोकप्रिय रहे हैं।

पुरस्कार

"कोरजा" उपन्यास पर वर्ष 1980 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा इन्हें राष्ट्रीय पारितोषिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अखिल भारतीय महाराजा वीरसिंह देव, पुरस्कार दिया गया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा भी "कोरजा" उपन्यास पर ही पुरस्कृत किया गया है। इनकी रचनाएं भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनुवादित की गई हैं। सन् 1982 एवं सन् 1983 में इनके उपन्यास "उसका घर", और "आँखों की दहलीज" कन्नड़ भाषा में प्रकाशित हुए हैं।

इनकी कुछ कहानियां मध्य प्रदेश, देहली, आगरा, केरल के शिक्षा मण्डल, विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम में निहित की गई हैं।

मेहरुन्निसा के प्रमुख उपन्यास

"आँखों की दहलीज" (प्रकाशन वर्ष 1969) लेखिका का पहला उपन्यास है। इसमें लेखिका ने तालिया के जीवन के प्रति उदासीनता, ऊब, तड़प, मानसिक पीड़ा आत्मग्लानि का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। तालिया सिद्दीकी साहब की इकलौती पुत्री है। तालिया ने शमीम से प्रेम-विवाह तो कर लिया लेकिन माँ न बन सकने का दुख उसे सताता रहा। अपने पति से उदासीन होकर तालिया गगऊडैम के सुन्दर वातावरण में जावेद से प्रेम और फिर शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लेती है। इसमें उसकी माँ और उसकी सखी–जमीला–उसका साथ देती हैं। तालिया की माँ यह सोच कर तालिया को जावेद से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता देती है ताकि तालिया को संतान प्राप्ति का सुख मिले। लेकिन उसे यह बात मालूम न थी कि संतानोत्पत्ति की असमर्थता उसके दामाद में नहीं बल्कि उसकी अपनी ही बेटी तालिया में है। तालिया अपनी सन्तानोत्पत्ति की असमर्थता से परिचित थी। जावेद की पत्नी को जावेद और तालिया के प्रेम के बारे में पता चलने के कारण इनका प्रेम आगे नहीं बढ़ पाता है। जावेद के दुत्कारने पर तालिया को आत्मग्लानि और पति से विश्वासघात करने का पश्चाताप होता है और वह आत्महत्या करने का असफल प्रयास करती है। तालिया अपने पति को सुखी बनाना चाहती है। इसी कारण वह अपनी सहेली-जमीला को अपने पति के साथ धोखे से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तैयार करती है, जिससे उसका पति जमीला से विवाह करने के लिए विवश हो जाए, और उसे संतान का सुख मिले। तालिया इस काम में सफल होती है। स्वयं वह सदैव के लिए घर छोड़कर दिशाहीन मंजिल की ओर चली जाती है।

लेखिका ने इस उपन्यास में नारी की मानसिक पीड़ा और कमजोरियों को दिखाया है। इस प्रतीकात्मक उपन्यास में लेखिका ने फ्लैश बैक अर्थात् पूर्व दृश्य पद्धति और पत्र शैली का प्रयोग किया है। लेखिका ने उपन्यास में सुंदर शब्दावली का प्रयोग किया है। यह उपन्यास लेखिका का सफल प्रथम प्रयास है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"उसका घर" (प्रकाशन वर्ष 1972) नामक उपन्यास एक शिक्षित आधुनिक महिला–ऐलमा–के घर से बेघर होने की कथा पर आधारित है। ऐलमा का पति उसे शादी के कुछ समय बाद ही ऐलमा की दमे की बीमारी के कारण उसे तलाक देकर दूसरा विवाह करता है। ऐलमा अपने अकेलेपन से तंग आकर एक स्कूल में नौकरी करती है। ऐलमा का भाई उसे अपने अफसर आहूजा के साथ सिनेमा देखने, रातों को सैर के लिए भेजता है, और बदले में ऐलमा के भाई का "बैंक बैलेन्स" बढ़ाता रहता है और आहूजा उसके झूठे वोचरों (रसीदों) पर अपने हस्ताक्षर देकर भी उसे पैसे वसूल करने का मौका देता है। पहले ऐलमा समझती थी कि भैया चाहते हैं कि वह सब पुरानी बातें भूलकर आहूजा के साथ नया जीवन आरम्भ करें। लेकिन वास्तविकता जानने पर उसे दुख होता है। आहूजा का भी अपनी पत्नी से तलाक हुआ था। लड़कियाँ बदलना आहूजा का शौक था। ऐलमा में इतना साहस नहीं था कि वह भाई का विरोध करे। अतः उसे न चाहते हुए भी आहूजा के साथ जाना पड़ता है।

ऐलमा के चरित्र के विपरीत उसकी आन्टी की लड़की–रेशमा–का चरित्र है। वह जिद्दी, हठी, साहसी और दृढ़ संकल्प वाली नारी है। रेशमा एक प्रोफेसर–देव–से प्यार करती हैं माँ से शादी की अनुमति न मिलने पर वह माँ की इच्छा के विरुद्ध विवाह तो नहीं करती, लेकिन अविवाहित होते हुए भी वह और देव विवाहितों-सा जीवन व्यतीत करते हैं। साहस की बात तो यह है कि रेशमा देव की बेटी को जन्म देती है और उसे घर में ही पालती है। रेशमा की माँ फिर भी उसे कुंआरी कहती है और उसकी शादी एक ईसाई लड़के से कराना चाहती है। आन्टी कट्टर ईसाई थीं लेकिन उसकी बेटी रेशमा स्वयं को ईसाई नहीं मानती क्योंकि आन्टी ने हिन्दू पुरुष से विवाह किया था। रेशमा स्वयं को हिन्दू बाप की बेटी समझती थी और हिन्दू लड़के–देव–से ही विवाह करने की ज़िद करती है। मृत्यु से पहले आन्टी ने रेशमा के लिए कोई आदेश नहीं दिया। इसलिए उनकी चुप्पी को सबने रेशमा की शादी के लिए मौन-स्वीकृति माना, रेशमा और देव का विवाह देव के घर में हिन्दू धर्म के अनुसार होता है।

ऐलमा को सोफिया से माँ का सा प्यार मिलता है। सोफिया अपने पति के साथ बेकरी की दुकान चलाती है। अपने जीवन से तंग आकर ऐलमा अपने भाई, भाभी, आहूजा से दूर जाने के लिए मद्रास में नौकरी ढूँढ लेती है और बिना किसी को अपना पता दिए, सारे सम्बन्ध तोड़ कर अनजान भविष्य और अनजान दुनिया की और जाती है। घर का मोह उसकी आँखों से पिघल कर बहा लेकिन उसका घर कहाँ था? इस संसार में ऐसा कोई स्थान न था जिसे वह अपना घर कह सके।

"कोरजा" (प्रकाशन वर्ष 1977) एक नारी प्रधान उपन्यास है जिसमें मुस्लिम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाज में नारी स्थिति का चित्रण हुआ है। यह एक असहाय बूढ़ी नानी की कथा है जो अकेली अपनी विधवा बेटी और उसके तीन बच्चों, अपनी मरी हुई बेटी की बेटी नसीमा और अपनी ननद के लड़के की लड़की रब्बो का सहारा बनी है। यह उपन्यास नानी, रब्बो, कम्मो, साजो, नसीमा, मोना दीदी और उसकी माँ मंदाकिनी की भिन्न-भिन्न कथाओं पर आधारित है।

कम उम्र में विवाह होने के कारण और शराबी पति के अत्याचारों के कारण नसीमा की मां की मृत्यु होती है। उसका शराबी बाप उसे पालने में असमर्थ है इसलिए वह नानी के पास रहती है। रब्बो भी अपनी सौतेली मां के अत्याचारों से दूर नानी के पास रहती है। रब्बो की सहेली कम्मो के घर पर रब्बो का परिचय कम्मो के खालाजाद भाई एहसान से होता है। रब्बो और एहसान प्रेमबन्धन के बंध जाते हैं। लेकिन दहेज न होने के कारण रब्बो की नानी उसका ब्याह एक अधेड़ दो बच्चों वाले से करती है। अनाथ कम्मो चाचा-चाची के पास रहती थी। चाचा की मृत्यु के बाद कम्मो पढ़ाई छोड़कर नौकरी क़रके चाची का भार संभालती है। कम्मो और अमित दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं। सेक्स की असमर्थता होने के कारण अमित शराब पीता है और एक दिन अधिक शराब पीने के कारण अस्पताल में अमित की मृत्यु होती है। अमित की मृत्यु सहन न कर पाने के कारण कम्मो अपने गले में फांसी का फंदा डालकर आत्महत्या करती है। नानी की छोटी बेटी सज्जो का पति सारा घर और सामान गिरवी रखकर ऐश करता है और बीवी-बच्चों को असहाय छोड़कर मर जाता है। सज्जो को रोज रात को उस बूढ़े मकान मालिक के पास जाना पड़ता है जिसके पास उसका मकान गिरवी है। वह रात भर उसके शरीर से खेलता है और बदले में उसे उस मकान में रहने देता है। नानी सब देखकर भी आँखें मूंद लेने के लिए विवश है। मोना दीदी का सद्व्यवहार और शांत प्रकृति पाठकों को अच्छी लगती है। उसका और उसकी मां-मंदाकिनी—का जीवन भी दुखी है। नसीमा इन सभी नारी पात्रों के दुख-दर्द का देखती रही। ऐसे में वह सुख की आशा कैसे कर सकती है?

लेखिका ने इस उपन्यास में चेतना प्रवाह शैली को अपनाया है। नसीमा रब्बो की बेटी की शादी पर आती है और वहाँ नसीमा के मस्तिष्क में सारी पुरानी घटनाएँ घूमती हैं। लेखिका ने उपन्यास में पिछड़े गांव और मुस्लिम समाज के रीति-रिवाजों का चित्रण किया है।

संदर्भ

1. ऋतुचक्र/मार्च-जून/1989-लेखिका का वक्तव्य, शीर्षक-"मुझे, मां से मिली दर्द की पहचान", पृ॰ 44.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. वही, पृ० 45.
3. प्रश्नावली से।
4. ऋतुचक्र/मार्च-जून/1989-लेखिका का वक्तव्य, शीर्षक-"मुझे, मां से मिली दर्द की पहचान", पृ० 46.
5. वही।
6. प्रश्नावली से।
7. ऋतुचक्र/मार्च-जून/1989-लेखिका का वक्तव्य, शीर्षक-"मुझे, मां से मिली दर्द की पहचान", पृ० 49.
8. वही, पृ० 44.
9. वही, पृ० 45.
10. वही, पृ० 46.
11. वही, पृ० 44.
12. वही, पृ० 44.
13. धर्मयुग पत्रिका - 29 अक्टूबर, 1989 (मेहरुन्निसा जी का लेख) शीर्षक- "एक बिन्दु शब्द कोश बन गया", पृ० 17.
14. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह की "मेरी बात" से, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
15. धर्मयुग पत्रिका - 29 अक्टूबर, 1989 (मेहरुन्निसा जी का लेख) शीर्षक- "एक बिन्दु शब्द कोश बन गया" पृ० 18
16. धर्मयुग - साप्ताहिक पत्रिका - 29 अक्टूबर, 1989, (मेहरुन्निसा जी का लेख), शीर्षक-"एक बिन्दु शब्द कोश बन गया", पृ० 17.
17. प्रश्नावली से।
18. ऋतुचक्र/मार्च-जून/1989-लेखिका का वक्तव्य, शीर्षक-"मुझे, मां से मिली दर्द की पहचान", पृ० 47.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वितीय अध्याय

"आदम और हव्वा" की कहानियों का मूल्यांकन

"आदम और हव्वा" (1972) लेखिका का प्रथम कहानी संग्रह है। इसमें जन-साधारण के दुख-दर्द, आर्थिक अभावों से पीड़ित लोगों की मन:स्थितियों का चित्रण हुआ है। आलोच्य संग्रह की प्रमुख कहानी "आदम और हव्वा" में लेखिका ने पुरुष मन की ईर्ष्या का चित्रण किया है। "त्यौहार" और "सीढ़ियों का ठेका" में आर्थिक तनाव से पीड़ित परिवारों का चित्रण हुआ है। "शनाख्त" में लेखिका ने दिखाया है कि एक घृणित, निंदनीय पति भी अपनी पत्नी की करूणा का पात्र होता है। "चमड़े का खोल" में पुरुष के स्वतंत्र जीवन और नारी की कठिनाई देखने को मिलती है। "खाली आँखों की पीड़ा" में नायिका माता, पिता, पति से पीड़ित और ऊबी हुई है। "जाने कब" में लेखिका ने इस यथार्थ को प्रस्तुत किया है कि आज के युग में नारी का अशिक्षित होना उसका सबसे बड़ा दोष है। "भोगे हुए दिन" में एक लोकप्रिय कवि के बुढ़ापे की गरीबी का चित्रण हुआ है। जिन दिनों वह लोकप्रिय थे तो ऐश्वर्य और प्रतिष्ठा के दिन बिताते थे लेकिन उनकी मांग खत्म होने पर उन्हें कोई नहीं पूछता। "विद्रोह" की नायिका विवाह न करके अपने माता-पिता, भाई-बहन का पालन पोषण करने के लिए विवश है। "बंजर दोपहर" और "अपने-अपने दायरे" पति-पत्नी के आपसी ऊब, खीझ, तनाव की कहानियाँ हैं।

प्रस्तुत संग्रह में अधिकांश कहानियाँ पुरुष पर आश्रित नारी पर आधारित हैं। कहीं पर नारी समाज के बनाए बन्धनों के कारण पुरुष पर आश्रित है, कहीं आर्थिक रूप से और कहीं अपनी ही कोमल भावनाओं से विवश होकर पुरुष के अधीन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो जाती है। संग्रह में दहेज और अन्य सामाजिक बुराइयों पर भी प्रकाश डाला गया है।

कहानी के छः तत्व हैं–कथानक, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, भाषा-शिल्प और विषय-उद्देश्य।

(क) कथानक

यह कहानी का प्रमुख तत्व है। कथानक को अंग्रेजी में "प्लॉट" कहते हैं। जिस प्रकार एक इमारत बनाने के लिए भूमि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार कहानी लिखने के लिए भी कथानक का होना आवश्यक है। यह कथानक जीवन के किसी विशिष्ट अंग से सम्बंधित घटनाओं, समाज की विशिष्ट समस्याओं पर आधारित होता है। कहानी का कथानक संक्षिप्त होता है और गौण कथाओं को अधिक महत्व नहीं दिया जाता। कहानी के कौतुहल को बनाए रखने के लिए आवश्यक घटनाओं और कहानी के संघर्ष को महत्ता दी जाती है। संघर्ष के तीव्र होने के साथ-साथ कथा चरम सीमा की ओर बढ़ती है। कभी-कभी कहानी को मर्मस्पर्शी और प्रभावशाली बनाने के लिए कथानक और संघर्ष को चरमसीमा पर ही छोड़ दिया जाता है।

कहानियों का कथ्य

"आदम और हव्वा" कहानी में लेखिका ने नारी-मन की विवशता और पुरुष-मन की ईर्ष्या का चित्रण किया है। इस कहानी में उमी अपने परिवार और एक पुरुष मित्र-महिम–के साथ एक पहाड़ी इलाके पर सैर के लिए जाती है। महिम अचानक सबको डाक-बंगले में अकेला छोड़कर लौटा जाता है, जिसका कारण केवल उमी जानती है। वास्तव में एक चांदनी रात में महिम उमी को जगाकर डाक-बंगले के पास एक डैम पर ले गया। बातों-बातों में महिम उमी से उसके मृत पति और पूर्व गृहस्थी के बारे में प्रश्न करता है। महिम उमी की हर बात से परिचित था। लेकिन फिर भी अतीत के बारे में प्रश्न करके उसने उमी को दुःखी किया। महिम के अगले प्रश्न से उमी की आँख भर जाती है। महिम ने पूछा था कि क्या वह महिम से उतना ही प्यार करती है, जितना अपने मरे हुए पति से करती थी। भला कौन स्त्री ऐसे प्रश्न का उत्तर दे सकती है। वह दिन की बुरी शुरुआत के साथ डाक-बंगले पर लौट आई। महिम ने नाश्ता किया और अपना सामान बांध लिया, उमी ने अपने टूटे मन से महिम को रोकने का असफल प्रयास किया। महिम फिर मिलने का वादा करके, उमी की पीठ पर हाथ रखकर तसल्ली देकर चला गया, लेकिन उमी महिम की चालाकी को समझ गई। "शायद यह भी नारी दृष्टि थी जो ताड़ गई थी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि महिम तसल्ली दे नहीं रहा है बल्कि हमेशा के लिए विदा ले रहा है।"[1]

"त्यौहार" एक छोटे से परिवार की कहानी है जिसमें अम्मा, आपा और शानो रहते हैं। हर घर की तरह पहले इनके घर में भी ईद का त्योहार आने पर खुशी होती थी। किन्तु अब ईद का नाम सुनकर ही सारे घर में सन्नाटा छा जाता है, क्योंकि घर में नए कपड़े खरीदने, मिठाइयाँ आदि लाने या घर को सजाने के लिए पैसा नहीं है। शानो ईद के त्योहार पर गुलाबी साटन का गरारा सिलाने की ज़िद करती है। नया कपड़ा न खरीद पाने के कारण अम्मा अपनी एक बनारसी साड़ी काट कर शानों के लिए कपड़े बनाने का निर्णय करती है, तभी डाकिया आकर पार्सल देता है जो 'मुंगेर' के एक संबंधी–जीया भाई–ने भेजा था। पार्सल से निकला पीले फूलों वाला साटन का कपड़ा देखकर अम्मा खुश हुई और मन ही मन खाला को दिखाने का निश्चय करती है। अम्मा की सारी खुशी दु:ख में बदल जाती है जब शाम को खाला आई और पोटली में से ही पीले फूलों वाल कपड़ा शानो को देते हुए अम्मा से बोली–"अरे वहीं मुंगेर वाला जीया है न, वह ज़कात (दान) निकालता है तो शानो के लिए सूट का कपड़ा भेजा है।"[2]

अम्मा को यह जानकर दु:ख हुआ कि जीया भाई ने उन्हें सम्बन्धी समझकर भेंट नहीं बल्कि गरीब समझकर ज़कात भेजी है। जिस खाला के सामने वह अपना सम्मान बनाए रखना चाहती थी, उसी खाला से यह कड़ुवा यथार्थ पता चला। पिछली गर्मियों में जीया बाल-बच्चों समेत इनके घर ठहरा था तो तभी उसने इनके घर की गरीबी को समझ लिया था। अम्मा चुपचाप आँसू बहाती है मानों टूटे मन, टूटे स्वाभिमान से उसने गरीब होना और ज़कात लेने वालों की लाइन में खड़ा होना स्वीकार कर लिया हो।

"सीढ़ियों का ठेका" नामक कहानी एक वृद्ध महिला करीमन की कहानी है जो मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर भीख मांगती है। वह अपनी बेटी के लड़के-करीम के साथ रहती हैं। करीम से वह डरती है। "करीम खुद अर्जीनवीस है। उसे नानी का भीख मांगना बुरा लगता है, आए दिन वह झगड़ा करता है, कुछ दिन करीमन भीख के लिए जुमे-जुमेरात निकलना बंद कर देती है, पर कब तक? एक दिन बहू खाना देती है, दूसरे दिन दरवाजा दिखाती है।.........."।[3] इस प्रकार करीमन विवश होकर भीख मांगती है। कुछ पैसे बहू को देती है और कुछ छुपा लेती है।

कुबड़ी फातिमा और नसीबन दोनों मां बेटी भी भीख मांगती हैं। करीमन, फातिमा, और नसीबन तीनों विधवा हैं। रहीमन और उसका पति गफ्फार तो सुख से जीते हैं। गफ्फार मुरदों को दफनाने का काम करता है ओर रहीमन महिला शवों को नहला कर उन मृत महिलाओं की सारी चीजें उठा लाती है। इनकी कोई संतान नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करीमन को अक्सर रात को बुखार आने लगा। बीमारी के कारण वह बिस्तर से उठ नहीं पाती थी। उसे चिंता लगी कि कहीं फातिमा मस्जिद की सीढ़ियों पर उसकी जगह न बैठ गई हो। कल जुमा था और आज तक उसका कोई जुमा नहीं छूटा था, जबकि वह मस्जिद भीख मांगने न गई हो। उसे कल के जुमा की भी चिंता लगी। किन्तु इस बार के जुमा की सुबह वह मृत पड़ी थी। करीमन की पोटली में से बहू से छुपाए हुए सात रुपए आठ आने निकले तो उसके कफन-दफन के खर्चे की समस्या भी हल हो गई। इस बार जुमा के दिन करीमन जीवित मस्जिद तो न जा पाई लेकिन उसका शव अवश्य गया। नमाज के बाद मस्जिद की सीढ़ियों से करीमन का जनाजा ले जाया जा रहा था और सारे नमाजी जनाजे के पीछे-पीछे कब्रिस्तान जा रहे थे। आज मस्जिद की सीढ़ियों पर फातिमा ने करीमन की जगह ले ली थी। फातिमा को नमाजियों से बहुत भीख मिलने की आशा थी, लेकिन सब लोग जनाज के पीछे जा रहे थे, उसे भीख किसी ने न दी, वह देखती ही रह गई। फातिमा को लगा कि आज भी करीमन उसे अंगूठा दिखा रही है कि आज भी फातिमा खाली हाथ लौटेगी। फातिमा गुस्से से बड़बड़ाई, "मरी बुढ़िया, तूने एक भी जुम्मा नहीं छोड़ा।"[4]

"श्नाख्त" कहानी में पत्नी अपने पति के शव को पहचानने से इंकार करती है। उसका शराबी, चरित्रहीन, विवेकहीन पति, "कच्ची शराब बनाने का धंधा करता था। पकड़ा जाने पर वह जेल भी हो आता, पर छूटने पर फिर इसी धंधे में लग जाता।"[5] वर्षों पूर्व जब वह माँ बनने वाली थी तो उसका पति घर से किसी अन्य स्त्री के साथ भाग गया था। एक दिन जब वह लौटा तो उसकी बेटी-बत्री-चार साल की हो गई थी। उके बाद जब कभी वह उस गाँव में आता तो घर आकर रात को अवश्य ठहरता। पिता के आने से बत्री डर के कारण और शराब की दुर्गन्ध से काँप उठती। वह कभी पिता के सामने नहीं आती थी। एक शाम जब उसकी मां घर पर नहीं थी तो उसका पिता आया और उसने पिता के लिए दरवाजा खोला। वर्षों बाद अपनी जवान बेटी के यौवन और सौन्दर्य को देखकर वह हक्काबक्का रह गया, शायद वह भूल चुका था कि उसकी कोई बेटी भी है, उस रात वह पत्नी को कोठरी में अकेला छोड़कर चुपचाप बत्री के बिस्तर पर आ गया। बत्री समझी कि माँ होगी, लेकिन शराब की दुर्गन्ध से वह जाग गई और तभी बत्री की माँ ने अपने पति को बेटी के बिस्तर से निकाल कर घर से बाहर निकाल दिया।

कई दिनों बाद पुलिस आई और उसे पति के शव की श्नाख्त के लिए ले गई। वह एक गाड़ी के नीचे आकर कुचल गया था। उसने पति के शव और उसके भूरे चैक के कोट को पहचानते हुए भी पहचानने से इंकार किया। बत्री और उसकी माँ शव को देखकर भी चुपचाप घर आई और कोई शोक नहीं मनाया। कई दिनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद घर पर अपने पति के उसी भूरे चैक कोट की कतरनों से बने अचकन को पहने गुड्डे को देखकर वह फूट-फूट कर रो पड़ी और बेटी से कहने लगी, –"बत्री, मैंने उसे पहचान लिया, देख यह.........यह पड़ी है उसकी लाश।"[6]

"चमड़े का खोल" में पुरुष अधेड़ उम्र में दूसरा विवाह करके दूसरा घर बसाता है और अपनी पहली पत्नी और बच्चों को पैसे-पैसे के लिए तड़पता छोड़ता है। शुभा की मां का कहना है कि किसी दिन यदि उसके पति ने घर का खर्च के पैसे देने बंद किया, "तो हम माँ-बेटे की आत्महत्या की नौबत आ जायेगी।"[7]

शुभा जानती थी कि इस बार उसके मायके आने पर बाबूजी घर इसलिए नहीं आए कि कहीं ससुराल लौटते समय बेटी को कपड़े न देने पड़ें। शुभा ने खत लिखकर अपने मायके आने का समाचार दिया था किन्तु फिर भी उसके पिता शुभा से मिलने घर नहीं आए। पिछली बार जब वह मायके आई तो मां ने बाबूजी से शुभा के लिए कपड़े बनवाने को कहा, किंतु वह चिल्ला पड़े थे–"मैं कहां से लाऊं? .....कपड़े पहली दफा बेटी आए तो बनने चाहिए। हमेशा नहीं.......।"[8] शुभा सुन रही थी। उसे स्वयं पर तरस आया था। उसे लगा था कि शादी के बाद भी वह बाबूजी पर बोझ है और उन बाप-बेटी के बीच मानों कपड़े की एक दीवार हो। आज इसी झगड़े से बचने के लिए बाबूजी दूसरी पत्नी के घर से नहीं आए। इस बार माँ ने न जाने कहाँ से पैसे निकालकर शुभा को साड़ी खरीदने के लिए दिए, न चाहते हुए भी उसे माँ की ज़िदद् के कारण वह पैसे लेने पड़े। जाते समय माँ ने मायका न छोड़ने और फिर आने के लिए बहुत कहा। माँ ने कहा, "मैं अपनी चमड़ी के भी कपड़े बनवाकर अपने बच्चों को पहना सकती हूँ।"[9] इस बार मायके जाने से शुभा को इतना दुःख हुआ कि उसने फिर कभी मायके न जाने का निर्णय किया, पति ने चकित होकर कारण पूछा तो वह चुप हो गई। "देव (पति) का कहा "क्यों" उसके सामने घूम जाता है और.......लगता है कि वह उस "क्यों" का उत्तर कभी नहीं दे पायेगी।"[10]

"खाली आँखों की पीड़ा" उमा की मानसिक पीड़ा, कुण्ठा और ऊब की कहानी है। कठोर परिश्रम, माता-पिता के आपसी तनाव, पति-राकेश–के कटु व्यवहार से वह पीड़ित है। माँ की चिट्ठी मिलने पर वह दफ्तर से छुट्टी लेकर मायके जाती है। वह जानती है कि मायके जाने से उसे दुख होगा किन्तु माँ का प्यार उसे खींच लाता है। इकलौती संतान होने के कारण माता-पिता उमा को अपना सहारा समझते थे। जबकि वह स्वयं असहाय है। उमा माँ-बाप का आपसी तनाव देखकर हैरान और परेशान है। वह उन दोनों को अलग-अलग समझाने के असफल प्रयास करती है। उमा के माता-पिता अपने दामाद को अपना सहारा समझते हैं लेकिन उमा उनको कैसे समझाती कि पति उसे हर समय माँ-बाप को लेकर उलाहने देता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है और उससे कटुता से पेश आता है। एक बार बाबूजी ने एक दिन अपने मन का शक राकेश–दामाद–पर उगल दिया था, "उमा की माँ के पास बहुत पैसा जमा है, वह तुम लोगों को चोरी से मेरे घर का धन देती रहती है।"[11] इस बात से माँ, उमा को बहुत दु:ख हुआ था और राजेश भी चिढ़ गया था, उमा तीनों की बातें सुनती और चुप रहती। वह इन सब से मुक्त होना चाहती थी। मायके से वापस लौटते समय ट्रेन छूटने से पहले बाबूजी ने स्टेशन पर उमा से कहा कि डॉ॰ सूद ने बताया है कि उन्हें उमा की माँ के पेट में कैंसर का भ्रम है। उमा के दु:खों पर एक और दु:ख आ पड़ा। "......उसे लगता है कि मोह-माया उसे जीवन भर न आत्महत्या करने देंगे, न कहीं भागने। उसे सब कुछ सहते हुए जीना होगा–इतने दु:खों के बोझ में एक और सही।"[12]

"जाने कब" कहानी में शन्नो के माता-पिता और स्वयं शन्नो अपने विवाह के लिए चिन्तित हैं। "शन्नो जब छोटी थी तो फातमा (माँ) ने कितना छाती फूला-फूलाकर अपने पुराने गहने निकलवाकर नए गहने बनवाए थे।"[13] शन्नो ने भी ईद की ईदी को बचा कर चीजें लाकर जमा की थीं, "शन्नो ने दूसरी लड़कियों के साथ मिलकर जो दहेज के लिए सारी चीजें तैयार की थीं, कब की संदूक में रखी हैं।"[14] लेकिन आसपास की सब लड़कियाँ, जिनके साथ शन्नो खेलती थी, दहेज जमा करती थी, वे सब लड़कियां दो-दो बच्चों की मां हो गई हैं। लेकिन शन्नो 22 वर्ष की होने के उपरांत भी अविवाहित है, पिता ने एक बार अपने एक मित्र से शन्नो के बारे में बात की तो उन्होंने झट से शन्नो के अशिक्षित होने के कारण इंकार कर दिया था। अब उन्हें दु:ख होता है कि उन्होंने शन्नो को क्यों नहीं पढ़ाया, "शन्नो की उम्र बाईस पार कर रही है, इस बात का एहसास तो घर में सबको है ही, पर आस-पड़ोसियों को और ज्यादा है।"[15] आज सुबह ही एक पड़ोसन घर आई तो जाते-जाते एक बात कह गई–"शन्नो के हाथ पीले करने का कब इरादा है, भई? उम्र बढ़ रही है।......क्या जवानी का जिस्म अपने ही घर में सड़ा कर दूल्हे को बूढ़ी हड्डियाँ ही पकड़ाओगे।"[16] इस बात से सारे घर में सन्नाटा छा गया। शन्नो तो पूरा दिन रोती रही, न जाने कब तक शन्नो के घर वाले उसके ब्याह के लिए चिंतित रहेंगे।

"भोगे हुए दिन" में शांदा साहब अपने जमाने के माने हुए शायर थे। तब उन्होंने बड़े ऐश्वर्य और प्रतिष्ठा के दिन बिताए थे। उन्हें लोग दूर-दूर से कवि सम्मेलन में बुलाते थे। किन्तु आज जब वह बूढ़े हैं, उनकी कविता लोग पसंद नहीं करते। वे निर्धनता से ग्रस्त जीवन बिता रहे हैं।

शांदा साहब के परिवार में उनके अतिरिक्त उनकी पत्नी, विधवा बेटी और उसके दो बच्चे हैं। फातमा (बेटी) प्रायमरी उर्दू स्कूल में अध्यापिका है। वह रोज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्कूल से आने के बाद "बिना घर में घुसे ट्यूशन पढ़ाने चली जाती है।"[17] और रात के नौ बजे लौटती है। आठ साल की लड़की–सोफिया–दिन भर लकड़ियां बेचती है। और माँ–फातमा उसे शाम को घर पर ही पढ़ाती है। दस साल का लड़का–जावेद–भी घर का काम करके स्कूल जाता है। शांदा साहब की पत्नी घर संभालती है। स्वयं शांदा साहब भी लड़खड़ाते हुए बाल्टी से पानी भर लाते रहते हैं। उनके घर आए मेहमान-शमीम–को यह देखकर कष्ट हुआ कि उर्दू के कवि इकबाल के समकालीन कवि शांदा साहब की ऐसी स्थिति है। साथ ही उन्हें यह प्रसन्नता भी होती है कि घर का हर सदस्य परिश्रमी है और परिश्रम से जीवन की कठिनाइयों, निर्धनता का सामना करते हैं। "घर का हरेक प्राणी, एक-एक क्षण को जीना जानता है।"[18]

"विद्रोह" एक युवा महिला-नीना–के अकेलेपन और परिवर्तनहीन जीवन की कहानी है। उसके पिता सेवा-निवृत्त हो गए हैं और अब नीना नौकरी करके घर चलाती है, "वह हर महीने की पहली तारीख को बच्चों के लिए कपड़े, माँ के लिए साड़ी और बाबूजी के लिए दवा ले जाती है।"[19] नीना की उम्र की लड़कियाँ कई वर्षों से गृहस्थ जीवन बिता रही हैं। दफ्तर में भी उसकी सामने वाली मेज पर कई लड़कियाँ आई और शादी करके चली गईं। लेकिन वह वर्षों से उसी मेज पर ढेरों फाइलों को देखती और टाइप करती रही है। घर की बुरी आर्थिक हालत होने के कारण उसे विवाह न करके नौकरी करके घर चलाना पड़ता है। पहले कभी रोज रात को उसके विवाह की चर्चा उठती थी, पर अब तो कभी अपने विवाह की बातें उसके कानों में नहीं पड़तीं।"[20] उम्र बढ़ने के कारण अब उसके लिए वर मिलना भी कठिन हो गया है। पास पड़ोस वाले जब नीना के बूढ़ी होने और माता-पिता के बुढ़ापे में भी बच्चे पैदा करने के बारे में व्यंग्य करते हैं तो नीना दु:खी होती है। बात सच भी है–एक तो वह बड़े मुश्किल से इतने बड़े घर के खर्च को चला पाती है, और उस पर उसके माता-पिता बच्चों की संख्या बढ़ाते हैं। पिता को बच्चे गोद मे लिए टहलते देखकर उसकी आँखों में घृणा तैरने लगती है। माँ ने फिर उल्टियाँ शुरू की थीं। उसने सरकारी डाक्टरनी का दिया हुआ दवाइयों का पर्चा भी नीना को दिया। "कई बार तो उसका मन हुआ, माँ के लिए इससे उल्टी दवा ले जाकर दे दे या ले जाकर अस्पताल में ऑपरेशन ही करवा दे, पर साहस नहीं हुआ। ....मां ने बिना दवा के ही एक तंदुरुस्त बच्चे को जन्म दिया।"[21] कम आय, बढ़ती मंहगाई और बढ़ते परिवार के बीच वह पिसती हुई। उसने नौकरी छोड़कर दफ्तर के एक हब्शी नायडू से विवाह करने का निर्णय किया, जो उसे पसंद करता था। नीना ने ज्यों ही पिता को दिखाने के लिए त्यागपत्र उठाया, तभी उसने देखा कि बाबूजी नंगे पांव, फटी बनियान पहने लड़खड़ाते हुए उसके कमरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में आए और रोते हुए कहने लगे कि डा॰ ने उन्हें आँखों का ऑपरेशन कराने को कहा है, वरना वे अंधे हो सकते हैं। नीना पर मानो पहाड़ टूट गया। अब एक और खर्चा उस पर आ पड़ा है। "वह स्तंभित हो बाबूजी को रोते हुए देख रही थी। .... उसकी मुट्ठी में रखा त्यागपत्र टुकड़े-टुकड़े हो रहा था।"[22]

"बंजर दुपहर" पति-पत्नी के आपसी ऊब और ठंडेपन की कहानी है। सपना दिर भर सूने बरामदे पर अकेली बैठी इधर-उधर की बातें सोचती। पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकें उलटती रहती है। शादी के कुछ वर्षों बाद ही वे पति-पत्नी इतना ऊब चुके हैं कि एक ही घर में रहते हुए भी मानो अलग-अलग रह रहे हों, राजेन्द्र कॉलेज और यात्रा से इतना थक जाता है कि फिर "उसे पत्नी की कोई जरूरत नहीं होती। .....कभी भूल से राजेन्द्र उसके पास आ भी जाता है, तो उसके (सपना के) मन में इतना सारा रोष और असन्तोष भर जाता है कि वह करवट बदल कर सो जाती है और वह घड़ी भी खो जाती है।"[23] वास्तव में वे दोनों एक दूसरे के प्रति ठंडे हो गए हैं। दोनों अनचाहे बंधन में बंधे हैं। लेकिन सपना किसी अन्य पुरुष को पति का स्थान नहीं दे सकती।

"अपने-अपने दायरे" भी पति-पत्नी की आपसी ऊब की कहानी है। दो साल बाद माया मायके आयी तो पहले उसे सब सामान्य लगा किन्तु फिर उसने अपने माता-पिता के बीच एक दरार को महसूस किया। बाबूजी चपरासी के हाथ कुछ पैसे भेजते हैं और कम पड़ने पर माँ अपने गहने बेच देती है। वे पति-पत्नी कभी भी एक साथ बैठकर खाना नहीं खा पाते। पत्नी की साड़ी फट जाए तो कोई ध्यान नहीं किन्तु आया के लिए हर तीसरे-चौथे दिन नई साड़ी लाते हैं। कहीं से डिनर की दावत का निमंत्रण आए तो बाबूजी अकेले जाते हैं और मां को पता भी नहीं होता, माया को दुख होता है कि बाबूजी इतने बड़े अफसर होकर भी नौकरों के क्वांटरों में रात बिताने जाते हैं और आया से भी उनके सम्बंध हैं और मां सब कुछ देखते हुए भी अनजान बनती है।

माया को गाड़ी में छोड़ने मां-बाबूजी दोनों आए। माया से बिछुड़ने का दुख दोनों को था। माया को लगा, दोनों "एक ही मोह में बंधे हुए, एक ही वेदना में तड़पते हुए, पर ...... पर थोड़ी देर के बाद यह दोनों अलग हो जाएंगे। ..... अपनी-अपनी सीमा में, अपने बनाये दायरे में, जो कभी नहीं टूटेगा।"[24]

चरित्र-चित्रण

चरित्र-चित्रण कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है। पात्र कथा का पूरक है। श्रीकान्त वर्मा ने स्पष्ट कहा है, "कहानी की गति और कहानी नियति कहानी का चरित्र है।" चरित्रीकरण को अंग्रेजी में "करैक्ट्रेजेशन" कहते हैं। कहानी में चरित्र का पूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकास नहीं होता केवल अभिव्यक्त होता है। चरित्र-चित्रण करने की बहुत सी प्रणालियां हैं—वर्णन द्वारा, संकेत द्वारा, वार्तालाप द्वारा, घटनाओं द्वारा। अधिकतर कहानीकार वर्णन द्वारा की चरित्र का चित्रण करते हैं। इसमें लेखक स्वयं पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालता है। इसे विश्लेषणात्मक प्रणाली भी कहते हैं। कहानी में पात्रों की संख्या अधिक नहीं होती। कहानी कुछ या किसी एक पात्र को लेकर लिखी जाती है। कुछ पात्र सरल और सामान्य होते हैं। वे पात्र किसी वर्ग विशेष के प्रतिनिधि होते हैं। कुछ पात्र गूढ़ होते हैं। वे निजी चारित्रिक विशेषताओं से पूर्ण होते हैं।

(ख) कहानियों के प्रमुख पात्र

"आदम और हव्वा" की नायिका उमी विधवा है जो अपनी मां और बहन के साथ रहती है। एक अकस्मात दुर्घटना में उमी के पति की मृत्यु हो जाती है। पति उसे बहुत प्यार करते थे। और वह सुखी थी।

उमी स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली नारी है जो विधवा होते हुए भी महिम से प्रेम करती है, यहां तक कि वह उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भी तैयार है। महिम उमी के घर भी आता है।

आधुनिक और स्वछन्द प्रकृति वाली नारी होते हुए भी उमी में पुरुष पर निर्भर होने की भावना मिलती है। महिम जब उसे छोड़कर जाने का निर्णय करता है तो वह दुखी होती है और अपने स्वाभिमान को छोड़कर उसे रोकने का असफल प्रयत्न करती है।

उमी एक साधारण नारी हैं उसे देखकर कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता कि वह कभी शादीशुदा थी। शायद वह स्वयं भी भूल चुकी थी क्योंकि जब कभी उसे ससुराल वालों में से कोई मिलता और भाभी कह कर पुकारता तो वह चौंक-सी जाती और उसे वह ध्वनि बिल्कुल पराई लगती। "कॉलेज के समय भी वह सिर्फ सोने की पतली चूड़ियां और घड़ी बांधती थी और अब भी वैसे ही रहती, वह तो भूल सी गयी है कि कुछ दिनों तक वह हाथ भर-भर कर कांच की खनखनाती चूड़ियां पहनती थी। चूड़ियों भरे व हाथ पहले उसके थे या पराये? अपने हाथों की तो अब उसे याद ही नहीं।"[25]

"त्यौहार" की अम्मा एक वृद्ध महिला है जिसे अपना, आपा और शानो का पेट पालना पड़ता है। अम्मा के पति और बेटे शमीम की मृत्यु हुई है। पहले वह खाते-पीते घर की बहू थी, पर अब पैसे-पैसे के लिए परेशान होना पड़ता है। "अम्मा हाथ की बनी दवाई और टोटके खूब जानती है।"[26] पति की दमे की बीमारी का उसने बहुत इलाज किया था, किन्तु उसे बचा न सकी थी। उसकी बेटी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने शानो जब सालभर की थी तो उसके पति की मृत्यु हो गई। अब अम्मा स्वयं देशी-दवाइयाँ बनाकर बेचती है। "उनकी बनाई दवा बहुत जल्द फायदा पहुंचाती है इसलिए सारे लोग यहीं आते हैं।"[27] अम्मा स्वाभिमानी है। वह खाला की तरह भीख मांग कर नहीं खाती। जीया भाई जब अम्मा के घर रहा तो अम्मा ने बहुत प्रयत्न किया कि उसे घर की गरीबी का पता न चले। जीया ने जाते समय शानो को दस का नोट दिया तो वह खुश नहीं हुई, बल्कि "शानो को इस गन्दी आदत पर अम्मा ने उसकी पिटाई की थी।......."[28] जीवन की कठिनाइयों ने उस पर चिड़चिड़ेपन की छाप डाली है। "दुबली-सी हड्डियों का पिंजर थी, अम्मा, अब कितनी चिड़चिड़ी हो गई है।"[29]

"सीढ़ियों का ठेका" में करीमन अपनी बेटी के लड़के-करीम-के साथ रहती है। करीम के लिए वह एक बोझ है और करीम पर अपने बीबी-बच्चों का भार भी है। तंग आकर "करीमन ने अपना खर्चा भीख से निकालना शुरू किया, तभी से वह भीख मांगती है।"[30] बहू को खुश रखने के लिए करीमन उसे भी भीख के पैसे करीम से छुपाकर देती है। मस्जिद के मौलाना भीख मांगने के विद्रोही है। किन्तु वह भी करीमन से कुछ नहीं कहते, "क्योंकि वह जानते हैं कि यह कितने वर्षों से इन्हीं सीढ़ियों का दामन पकड़े है। ......फिर करीमन आज के भिखमंगे फकीरों की तरह नीच नहीं जो एकदम गले पड़ते हैं। करीमन को सब मानते हैं।"[31] बुढ़ापा तो कष्ट में बीता ही, जवानी में भी उसने सुख नहीं देखा था, "उसने तो आदमी के सुख को सिवाय लात-घूसों के जाना ही नहीं।"[32] उसके पति के सम्बन्ध कई पराई औरतों के साथ थे। जब कभी उनसे जी ऊब जाता तो वह सोई हुई करीमन के पैर का अंगूठा पकड़कर उसे खींचता और जगा कर अपना स्वार्थ निकालता। पति किसी बीमारी के कारण मरा तो वह "गोद में बच्ची को लिये और सारी गृहस्थी समेट कर जगदलपुर आ गई।"[33] करीमन पहले चिड़चिड़ी और गंवार थी। किन्तु कुछ वर्षों से वह काफी सभ्य हो गई है। "किसी को ज़रा सा पैर लगते ही वह माफी मांग लेती। करीमन खुद ताज्जुब करती है, पर अंदर बहुत अंदर इस परिवर्तन की हामी उसका मन भरता है।"[34] एक दिन करीमन को बुखार आया और जुमा की सुबह मर गई। सारे गाँव की औरतों ने करीमन की जुमा के दिन की मौत को सराहा।

"शनाख्त" कहानी की नायिका एक आदर्श पत्नी है। वह घर में अपनी बेटी बत्री के साथ रहती है। वह मेहनत मजदूरी करके अपना और बेटी का पेट पालती है। पैसों के लिए कई बार उसे अपना शरीर भी बेचना पड़ता है। उसे अपने पति के आने पर प्रसन्नता होती है, हालांकि वह दूसरी पत्नी के साथ रहता है। पति के घर आने पर उसके लिए भात, मछली, अंडे पकते हैं। पति "शराब के नशे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेशर्म हो उठता था।.... फिर वह घर बाहर, अंधेरा-उजाला, लोकलाज कुछ नहीं देखता था।"[35] वह पति की हर बात सहती है किन्तु उसकी श्रद्धा और पतिभक्ति उस दिन घृणा ओर क्रोध में बदल जाती है जब वह पत्नी और बेटी के अंतर को भूल जाता है। घृणा के कारण वह उसके शव को भी पहचानने से इंकार करती है।

वह अपने नारी-मन को नहीं मार पायी। पति की मृत्यु पर मातम नहीं करती है। लेकिन कई दिनों बाद पति की याद आने पर वह विलाप करती है।

"चमड़े का खोल" की नायिका का पति भी दूसरी पत्नी के साथ रहता है। नायिका आर्थिक रूप से पति पर आश्रित है। उसे हर समय डर रहता है कि यदि पति ने घर का खर्च देना बंद किया तो वह माँ-बेटा क्या करेंगे।

वह एक आदर्श माँ है। वह अपने बच्चों के लिए चिंतित है। "अधूरेपन का बोध माँ को शायद हमेशा रहा, पर उसे सहने की शक्ति जैसे अब उनमें नहीं रही। आज तीस साल के कठिन वैवाहिक जीवन के बाद भी वह अकेली ठूंठ-सी खड़ी थी।"[36] वह स्वयं दु:ख सहकर बच्चों की सहायता का ध्यान रखती है। पैसों की तंगी होते हुए भी वह अपनी बेटी को ससुराल लौटते समय प्रथानुसार साड़ी के लिए पैसे देती है। वह सारा जीवन दु:ख सहते-सहते अपने स्वास्थ्य को खो बैठी है। "…..मानों हड्डियों के ढाँचे पर चमड़े का खोल चढ़ा दिया गया हो।"[37] आज वह बुढ़ापे में भी जैसे-तैसे अपना घर संभाले हुए है और पति अपने कर्त्तव्यों का बोझ उस पर डाले निश्चित है।

उमा "खाली आंखों की पीड़ा" कहानी की नायिका है। माता पिता, पति से मिली परेशानियों से उसका जीवन कठिन हो गया है। अपनी परेशानियों के कारण वह बाहरी वातावरण से टूट चुकी है। वह स्वयं को भीड़ में भी अकेला अनुभव करती है। सुहागिनों की तरह सिंगार करना, सजना-संवरना उसके व्यक्तित्व में है ही नहीं। स्वयं उसके पति ने उससे कहा, "उमा ! तुम्हें कौन कहेगा कि हम पति-पत्नी हैं। तुम एकदम कुंआरी की तरह अस्त-व्यस्त रहती हो।"[38]

उमा एक आधुनिक शिक्षित नारी है जो अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए नौकरी करती है। "दो मील तक बस के धक्के खाकर उमा जो सर्विस करती है वह सिर्फ टाइम पास करने के लिए नहीं, बल्कि घर का खर्च कम करने के लिए।"[39] आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होते हुए भी वह अपनी कोई वस्तु पति से पूछे बिना किसी को नहीं दे सकती।

उमा एक स्वाभिमानी नारी है। वह अपने दुखों से दूसरों को दु:खी नहीं करती। "……यह लड़की जैसे, जितना अपने ऊपर अत्याचार कर लेगी, पर कहेगी कुछ नहीं।"[40] बचपन से ही उमा ने परेशानियों का सामना किया है। आज वह माता-पिता, पति की दी हुई समस्याओं से पीड़ित है। वह इन तीनों स्थितियों को झेलती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जाने कब" कहानी की शन्नो बाईस वर्षीय लड़की है जो दिनभर घर का काम, सीना-पिरोना, कढ़ाई आदि करती है। उसने और उसकी माँ ने उसकी शादी के लिए सब दहेज जमा किया है। शन्नो तेरह वर्ष की थी तो जब वह भी समझने लगी थी, तभी से उसने भी पैसा बचाकर चीजें खरीदना शुरू किया था, किन्तु अशिक्षित होने के कारण वह आज भी अविवाहित है। शन्नो की बात कहीं भी न लगी हो, ऐसी बात नहीं। एक बार तो कांकेर में सब तय हो गया था। ......अचानक बात बीच में ही टूट गई थी।"[41] शन्नो की उम्र के साथ-साथ उसके माता-पिता की चिन्ता और पड़ोसियों की बातें भी बढ़ती थीं। "शन्नो का जिस्म पहले खिला-खिला हुआ था, चेहरे पर कितनी रौनक थी, बदन भी कितना तराशा हुआ था, पर उधर लगता है चेहरा सूत दिया गया है। अब कितनी भद्दी लगने लगी है।"[42] शन्नो का हंसना-खेलना सब छूट गया हैं वह दिन भर अकेली बैठी रहती है। दहेज होते हुए भी रिश्ते की कोई आशा नहीं है। उसका अशिक्षित होना उसके लिए अभिशाप बन गया है।

"भोगे हुए दिन" में "शांदा साहब" हिन्दुस्तान के सबसे पुराने शायरों में हैं। इकबाल और इनका बहुत दिनों का साथ रहा है।"[43] शांदा साहब कभी अमीर थे, किन्तु आज वह आर्थिक तंगी के दिन बिता रहे हैं। एक समय ऐसा भी था जब लोग उन्हें दूर-दूर से मुशायरे में बुला कर मुशायरे का अध्यक्ष चुनते थे। शांदा साहब के शब्दों में –"एक-एक शेर को हजारों बार पढ़वाया जाता था। रेडियो वाले मेरा प्रोग्राम रिकार्ड करने दौड़ते थे। दिल्ली और बम्बई के लोग मेरे पीछे पागल से थे। दूसरा वक्त अब देख रहा हूँ, यही लोग जो मेरे दीवाने थे, अब मुझे भूल गये हैं। दिल्ली, बम्बई का तो छोड़ दो खुद नागपुर में मुशायरे होते हैं, तो मुझे बुलाया नहीं जाता।"[44] एक बार कश्मीर के एक मिनिस्टर इनसे मिलने इनके घर आए तो उनके घर की बुरी स्थिति देखकर उन्होंने बड़ी कोशिश के बाद उन्हें सौ रुपए का वजीफा दिलाया जिससे शांदा साहब के घर के कुछ खर्चो कम होते हैं। अब शांदा साहब बूढ़े हो गए हैं और लकड़ी के सहारे चलते हैं। किन्तु तब भी बैठे न रहकर वे घर के लिए पानी भर लाते हैं। कठोर परिश्रम से भले ही उन्हें कठिनाई होती है पर वह जीवन से हार नहीं मानते।

"विद्रोह" कहानी नीना में अपने जीवन की परिस्थितियों से जूझती है पर विद्रोह नहीं कर पाती। रोज-रोज एक ही राह पर चलते-चलते अब वह ऊब चुकी है, वह जीवन की कुंठा से मुक्त होना चाहती है। वह भी अन्य लड़कियों की भांति विवाह करके अपना घर बसाना चाहती है। लेकिन घर की आर्थिक तंगी उसे विवाह न करके भाई-बहन, माँ-बाप का पालन-पोषण करने के लिए विवश करती है। दफ्तर की एक लड़की, मिस पांडे की शादी हुई तो, "उसे लगता है, उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोरे गालों पर किसी सांवले हाथ ने तमाचा मारा है।"[48] आज नीना शांत और संजीदा हो गई है लेकिन वह भी पहले अपनी छोटी बहनों की तरह शौकीन थी और "दूसरी लड़कियों की तरह कच्चे सपने देखने वाली शरमीली लड़की थी।"[46] वह सदा अपने भाग्य के भरोसे बैठी रही और एक आशा बांधे रही कि वह भी फेरे लेगी और किसी पुरुष के सहारे जीवन बितायेगी। लेकिन अब उम्र बढ़ने के कारण उसके लिए वर नहीं मिलता और माँ–बाप भी अब इस संदर्भ में नहीं सोचते। कभी-कभी वह सोचती, "उसने किसी से प्रेम नहीं किया। कितनी लड़कियाँ प्रेम करके भाग जाती हैं। वह क्यों नहीं भाग गई?"[47] घर के सदस्यों की आवश्यकताओं के अतिरिक्त वह माँ-बाप के आराम का ध्यान भी रखती है, चाहे उसके अपने कष्ट बढ़ते ही जाए। "उसी ने तो माँ का हाथ बटाने के लिए एक महरी सात रुपए में रख दी थी, पर इसके लिए ऑफिस की कैंटीन की चाय के साथ नाश्ता बंद करना पड़ा था।"[48] बाबूजी अब राशन की लाइन में खड़े नहीं रह पाते क्योंकि उन्हें चक्कर आता है इसलिए वह स्वयं छोटी बहन को साथ लेकर राशन ले जाती है। वह केवल सोच कर ही रह जाती है कि वह अपने लिए दूध चालू करेगी क्योंकि कई दिनों से दफ्तर में काम करते समय उसकी आँखों के आगे अंधेरा-सा आ जाता है।

वह यह सब छोड़कर विवाह कर सकती थी। लेकिन उसका कोमल हृदय ऐसा भी नहीं करने देता कि वह अपने आप के लिए सारे घर के सदस्यों को असहाय छोड़ दे। अत: वह इसी प्रकार अपने कर्तव्य का पालन करके घर चलाने और अकेला कठोर जीवन जीने के लिए विवश है।

"बंजर दोपहर" कहानी की सपना अपने पति और जीवन से ऊब चुकी है। वह दिन भर घर पर बैठी समय व्यतीत करने का प्रयत्न करती रहती है। "सपना अपने एकांत की और अपनी इस नंगी अकेली दोपहर को देखने की इतनी आदी हो गई थी कि कभी-कभी किसी मेहमान के के आ जाने पर या कहीं उसके चले जाने पर उसे अजीब सा लगता है। लगता है वह अकेले क्षण कहीं खो गये हैं।"[49] सपना के हृदय में पति के लिए जरा भी स्नेह नहीं। उल्टे वह पति को अपने निकट आने का अवसर नहीं देती और खीझ उठती है।

वह अन्य स्त्रियों की तरह सिंगार भी नहीं करती। "अपने-आप को नये से नये कपड़े में सजाने, मेकअप से नयापन लाने की बात तो जैसे वह भूल ही गई है।"[50] सपना का जीवन, इच्छाएं सिमट गई हैं। उसका जीवन बरामदे में बैठकर उधर-इधर ध्यान लगाकर दोपहर व्यतीत करने तक ही सीमित रह गया है।

"अपने-अपने दायरे" कहानी में माया की मां ऐसी महिला है जो स्वयं अपनी आंखों से अपने पति को विश्वासघात करते और पथभ्रष्ट होते देखकर भी चुप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहती है और कभी कोई शिकायत नहीं करती। पहले वह भी अन्य महिलाओं की भांति स्वाभाविक रूप से पति से लड़ पड़ती थी, यदि वह किसी अन्य महिला की प्रशंसा मात्र भी करते और तब तक नहीं बोलती थी जब तक पति माफी नहीं मांगते। किन्तु आज वह जानती है कि उसके पति के कई स्त्रियों से अनैतिक सम्बन्ध हैं किन्तु फिर भी देखकर अनदेखा करती है। वह बिल्कुल पति की तरफ से ऊबी हुई एक नारी, जो सामने सब कुछ देखकर भी आंखे बंद कर लेती है। जैसे सामने वाले से कोई सम्बन्ध न हो, कोई रिश्ता न हो।"[51] पति जितना पैसा भेजता, वह लेती, कम पड़ने पर अपने गहने बेचती है किन्तु पति से नहीं मांगती, वह किसी बात का कारण पति से नहीं पूछती। यह उसका स्वाभिमान ही है जो उसे चुप रहकर सब कष्ट सहने के लिए विवश करता है। विवाहित होते हुए भी वह अपने पति के जीवन से दूर है। वह एक मशीन-सी हो गई है, जो काम करती रहती है और कुछ नहीं सोचती।

(ग) कथोपकथन

पात्र आपस में जो वार्तालाप करते हैं, उसी को कथोपकथन कहते हैं। अन्य साहित्यिक विधाओं की भांति कहानी भी कथोपकथन की आवश्यकता होती है। संवाद रहित कहानियाँ या अल्पसंवाद वाली कहानियों में उपयुक्त संवदेना उत्पन्न नहीं हो पाती। कथोपकथन में रोचकता, सजीवता और स्वाभाविकता का होना आवश्यक है। संवाद पात्र, वातावरण के अनुकूल रखा जाता है। संवाद संक्षिप्त हो तो स्वभाविक लगते हैं ओर यदि बड़े हो तो बोझिल और कृत्रिम लगते हैं। कथोपकथन पात्रों का चित्रण करने में भी सहायक होता है। कथा को स्वाभाविक बनाने के लिए कथोपकथन का होना आवश्यक है। कथोपकथन के माध्यम से ही पाठक पात्रों के दृष्टिकोण, आदर्श, भावों, विचारों से परिचित हो सकते हैं। कथोपकथन के माध्यम से कथा और कथा की घटनाओं को भी प्रवाह मिलता है।

"आदम और हव्वा" कहानी में लेखिका ने अधिक संवादों का प्रयोग किया है। उनमें अधिक संवाद छोटे-छोटे और रोज व्यवहार में लाए जाने वाले हैं। इससे कहानी में व्यावहारिकता आई है। कुछ संवाद उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं:–

> "क्यों भैया, रसोईघर कौन-सा है?"
> मोबिन को अपनी ड्यूटी शुरू करने की जल्दी थी।
> "वह लाइन से जो कमरे बने हैं, उनमें से तीसरे को खोल दो।"
> मोबिन परदा उठाकर बाहर चला गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ममी से पूछो चाय के लिए।"
"नहीं, ममी कॉफी लेती हैं, अभी मोबिन बनाकर ले आयेगा।"
"क्या बजा होगा?"
"आठ"
"बाप रे, और अभी से इतनी धूप।"
"ओह गॉड ! यहां तो फ्राई हो जायेंगे...."[53]

"त्यौहार" कहानी में कई संवादों के माध्यम से लेखिका ने घर की स्थिति का चित्रण किया है। त्यौहार आने से घर के सदस्यों को खुशी न होकर उदासी होती है क्योंकि उनके पास पैसा नहीं है ताकि वे त्यौहार को मनाने के लिए विभिन्न सामग्री खरीदें। एक संवाद उदाहरणार्थ प्रस्तुत है:–

"आखिर ईद में नये कपड़े पहनना क्या जरूरी है? लोग क्यों बार-बार पूछते हैं? हम किसी की ढकी हंडी खोलने तो नहीं जाते।"[54]

लेखिका ने ऐसे छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है जैसे हम रोज व्यवहार में लाते हैं।

"क्या नाम है।"
"सोफिया"
"बड़ा प्यारा नाम है। कितनी बिक्री हुई?"
सोफिया झेंप कर नीचे देखने लगी।
"पढ़ती नहीं हो?"
"अम्मा घर में पढ़ा देती है।"
"और जावेद !"
"वह जाता है, तीसरे में पढ़ता है।"[55]

लेखिका ने संक्षिप्त संवादों के माध्यम से घर की गिरी हुई आर्थिक स्थिति की ओर भी संकेत किया है:–

"माँ, चाय के लिए दूध है?"
"क्यों?"
"सिर में दर्द हो रहा है, एक कप चाय बना दो ना"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मगर दूध तो नहीं है, बस सुबह की चाय के लिए ही तो दूध आता है, एक उसमें भी इतने लोगों की चाय बन जाती है, गनीमत है।"[56]

लेखिका ने संवादों से सामाजिक स्थिति और लोगों की मानसिकता का चित्रण करने की सहायता भी ली है।

"शन्नो के हाथ पीले करने का कब इरादा है, भई? उम्र बढ़ रही है। इसके सामने की लड़कियाँ दो-दो बच्चों की माँ बन गई हैं। क्या जवानी का जिस्म अपने ही घर में सड़ाकर दूल्हे को बूढ़ी हड्डियाँ ही पकड़ाओगे?"[57]

लंबे संवादों के विषय में कहा जाता है कि वे बोझिल होते हैं। लेकिन लेखिका ने ऐसे लम्बे संवादों का प्रयोग किया है जो दिलचस्प होने के साथ-साथ कथा को गति देते हैं। "खाली आंखों की पीड़ा" कहानी में एक महिला पात्र का एक लम्बा संवाद है जिसमें जीवन के यथार्थ का चित्रण किया गया है। पाठक अवश्य ही संवाद को बड़ी उत्सुकता से पढ़ेगा।

संवादों के माध्यम से चरित्रों का चित्रण भी किया गया है। जैसे निम्नलिखित संवाद से नायिका के हाव-भाव का चित्रण होता है:-

रहीमन "चांदी के गहने पहने रहती, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनती, पर खैरात जरूर मांगती।"[58]

लेखिका ने अधूरे वाक्यों का प्रयोग किया है। लेकिन वास्तव में वे वाक्य अधूरे न होकर पूर्ण होते हैं क्योंकि उनसे पूरे अर्थ का ज्ञान पाठक को स्वयं होता है।

"तो क्या...... वह खुद राजेन्द्र की जगह दूसरे को.....?"[59]

नायिका अपने पति राजेन्द्र से ऊब चुकी है लेकिन किसी अन्य पुरुष को भी पति का स्थान नहीं दे सकती।

लेखिका ने संवादों में अपशब्दों का प्रयोग करके पात्रों के मानसिक स्तर का चित्रण किया है:-

"नीच, पापी, कुत्ते, उठ।"[60]

आलोच्य संग्रह में स्वाभाविक, व्यावहारिक एवं रोचक संवादों का प्रयोग किया गया है।

देशकाल वातावरण के माध्यम से लेखिका सामाजिक कहानियों में आलोच्य युग का इतिहास, भूगोलादि का चित्रण करती है। लेखक घटना, स्थान और वातावरण की योजना देशकाल के अनुसार ही करता है ताकि उसमें सजीवता और स्पष्टता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आए। कई कहानियों का आरम्भ ही वातावरण के चित्रण से होता है। लेखिका ने भी तीज-त्योहारों, सामाजिक वर्ग, काल, सामाजिक स्थिति, नारी स्थिति, रिवाजों, लोकगीतों आदि का विवरण वातावरण के माध्यम से दिया है।

(घ) कहानियों में चित्रित वातावरण

"आदम और हव्वा" में लेखिका ने मध्यमवर्गीय परिवार के आधुनिक मानसिकता वाले सदस्यों का वातावरण चित्रित किया है।

लेखिका ने कहानी में एक पहाड़ी इलाके छतरपुर के छोटे से गाँवों की ओर संकेत करते हुए गाँव के वातावरण ओर वहाँ के आसपास के लोगों के रहन-सहन के बारे में स्पष्ट चित्र अंकित किए हैं–

"…..कच्ची सड़क के दोनों ओर भयानक जंगल हैं। इस पहाड़ी रास्ते पर सिर्फ एक ही बस चल सकती थी जो मुसाफिरों को गंगडन, पलकोंहा आदि गाँव पहुँचाती थी। …….जब बस गाँव के निकट पहुंचती तो नंगे गन्दे से बच्चों का झुण्ड हो-हो कर गाड़ी के पीछे दौड़ता। वैसे गंगडन छतरपुर से ज्यादा दूर नहीं है। पर पहाड़ी कच्चे रास्ते से हड्डियों का एक-एक जोड़ खुल गया-सा लग रहा था।"[61]

लेखिका ने प्राकृतिक वातावरण का भी सुन्दर चित्रण किया है।

"त्यौहार" कहानी में आर्थिक तनाव से ग्रस्त एक निम्नवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। अम्मा दवाइयाँ बनाकर, टोटके करके घर का खर्च चलाती है। कहानी में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। "सामने का बड़ा-सा टीन का दरवाजा, जो पूरी तरह टूट कर एक ओर झुक गया था, उससे लगी दीवार भी पिछली बरसात में धसक गई थी। टूटी दीवार से सड़क का आधा भाग दीख जाता था।"[62]

पहले यह परिवार भी खाता-पीता था लेकिन अब वे "वे लोग कभी-कभी बिना तरकारी के ही रूखा खाना खा लेते हैं, और सारे खेत गुप्तजी के यहाँ गिरवी पड़े हैं, दो साल से खरीदकर अनाज खा रहे हैं।"[63] अदालत से कुरकी का नोटिस भी आ गया है।

"सीढ़ियों का ठेका" में निम्न मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय परिवार के वातावरण को प्रस्तुत किया गया है। कहानी में नारी की दयनीय स्थिति के स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। लेखिका ने नारी को पति की चरित्रहीनता से और पति से मिली मार-पीट से पीड़ित दिखाया है। नायिका के पति ने शादी की पहली रात को ही उससे कहा था, "देख, बीबी कुतिया की जात होती है, खाई और घर की रखवाली करती पड़ी रही, ज्यादा चूँ-चप्पड़ की तो बत्तीसी झाड़ दूंगा।"[64] करीमन, फातिमा, नसीबन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीनों बेवा हैं और आत्मनिर्भर न होने के कारण भीख मांगती हैं।

लेखिका ने मस्जिद और उसके आस-पास के वातावरण को सुन्दर और स्पष्ट शब्दों में प्रस्तुत किया है–

"मस्जिद के सहन में कुछ कबूतर घूम रहे थे। सहन की दीवार पर जूही की बेला घनी होकर झुक आई थी। यहां से महल के पिछवाड़े की ऊँची दीवार और उससे लगी साइकिल और चाय की टेम्परेरी दुकानें दिखती थीं। मस्जिद से लगा हुआ ही एक मदरसा था।.....[65]

"शनाख्त" कहानी में भी अत्यंत निम्नवर्ग के परिवार को दिखाया गया है। घर में एक-एक अंडे को बचा कर बेचा जाता है। "पैसे के लिए खुद मां को बिकते देखा था।"[66] कहानी में गिरा हुआ और असभ्य वातावरण मिलता है जहाँ घर के सदस्यों में कोई स्नेह, ममता, आदर, लज्जा सभ्यता के चिन्ह नहीं मिलते। शराब के नशे में पति घर-बाहर, पत्नी-बेटी में अंतर भूल जाता है। माँ-बेटी सारा दिन मेहनत करतीं और पैसा कमाती हैं। धर्म के नाम से सब अपरिचित हैं। "शायद यह सब गरीब घरों की विवशता है कि ईश्वर को वह नहीं जानते।"[67]

लेखिका ने घनपुंजी गाँव का उल्लेख किया है। "वह घनपुंजी एक गाँव है, पर दो भागों में बंटा हुआ, आधा बस्तर में आता था, आधा उड़ीसा में। यहां काफी लोग, कच्ची शराब बनाने का धंधा करते थे।"[68]

"चमड़े का खोल" में भी निम्न मध्यवर्गीय परिवार का आर्थिक तनाव दिखाया गया है। दो पत्नियाँ होने के कारण पुरुष पहले परिवार को ढंग से नहीं पालता। पहले परिवार को कुछ इने-गिने पैसे मिलते हैं और पिता ने पैसा बचाने के लिए मकान मालिक को कुछ कमरे खाली करके लौटा दिए और किराया कम करवाया। अब वह पहला परिवार पैसों और जगह दोनों की कमी में रहता है। लेखिका ने निम्नवर्ग के परिवर्तन हीन जीवन और रहन-सहन का चित्रण किया है–"कमरे में वही जानी-पहचानी चीजें थीं, जिन्हें वह बचपन से देखती आ रही है। वही सील खाते हुए कमरे, कोने-कोने में समाया हुआ सन्नाटा अपने-आप चौंका जाता।"[69]

लेखिका ने सामाजिक स्थिति का चित्रण भी किया है। जैसे बेटे की कामना एवं मन्नतें मांगना। "जाने कितनी मन्नतों के बाद माँ को पुत्र मिला था।"[70]

"खाली आँखों की पीड़ा" में लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार की नारी की कुण्ठा एवं ऊब का चित्रण किया है। नायिका अपने जीवन से इतनी पीड़ित और तंग हैं कि बाहरी वातावरण सामान्य होते हुए भी उसे समस्याओं से भरा लगता है। जैसे "........आंगन के एक किनारे ढेर सारे गुलाब के पौधे सालों से लगे हैं। उसे लगता है आंगन में एक तरफ समस्याओ के पौधे हैं जिन पर फली हैं समस्याएं, सिर्फ समस्याएं। जिधर देखो, एक रिसती हुई पीड़ा।"[71]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखिका ने मध्यवर्गीय बस्ती के वातावरण का स्पष्ट चित्रण किया है, जहां पर कई परिवार एक ही इमारत में रहते हैं। "ईसाई मौहल्ले की गंदी पक्की गली के किनारे पर धुंआ उगलते लैम्पपोस्ट, थोड़ा आगे सुअर बाजार का घ्रिन-घिनाता वातावरण, जैसे ऊब को और गहरा कर रहा था। बाबूजी कीचड़ के कारण उससे थोड़ा आगे चल रहे हैं।"[72]

"जाने कब" मैं निम्न मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि घर की मरम्मत आदि की जा सके।

"लालटेन के उजाले में कमरे की एक-एक बुराई झांकने लगती है। कितनी पौली हो गई इस कमरे की दीवारें, जरा कील ठोंकी तो ढेरसी मिट्टी गिरती है।"[73]

सारे घर में सूनापन, चिंता और उदासी का वातावरण है। यह उदासी पात्रों के मन-मस्तिष्क के अतिरिक्त घर के बाहरी वातावरण में भी मिलती है। –"रस्सी पर कुछ मक्खियां उलटी लटकी थीं। सूनापन घर की तपती दीवारों पर उलटा लटका लंबी-लंबी सांसे ले रहा था–..................घर की दीवारों पर निस्तब्धता ने अपने बड़े-बड़े दांत गाड़ दिए थे। हवा में एक पीड़ा-सी तैर रही थी।"[74]

लेखिका ने उस समाज का चित्रण किया है जहां लोग लड़की का छोटी उम्र में ही ब्याह करते हैं और उसकी बढ़ती हुई उम्र को देखकर चिंतित होते हैं। जैसे "कहां यह जब कुल तेरह की थी और अब बाईस की होने को आई, पर हल्दी नहीं चढ़ी।"[75]

"भीगे हुए दिन" में निम्न मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण मिलता है, जहां आर्थिक अभाव है और घर का हर छोटा-बड़ा सदस्य कड़ी मेहनत करके घर चलाने में सहायता देता है।

लेखिका ने महाराष्ट्र के निम्न वर्ग की ओर संकेत किया है जहां स्त्री-पुरुष दिनभर बीड़ी बनाकर घर बैठ कर कमा लेते हैं। लेखिका लिखती हैं–"यह एक ऐसा धन्धा है कि अच्छे-अच्छे घर की औरतें पैसों की तंगी से घर में बीड़ी बनाती हैं। महाराष्ट्र में यह धंधा जितना अधिक है उतना कहीं नहीं।"[76]

कई स्थानों पर लेखिका ने स्पष्ट शब्दों में घर का वातावरण के बारे मे लिखा है। जैसे – "मुझे घर के घुटे-घुटे वातावरण से अजीब लग रहा था।"[77]

"विद्रोह" कहानी मे निम्न वर्ग के परिवार का वातावरण देखने को मिलता है। जहां घर की बड़ी बेटी नौकरी करके घर चलाती है। "बाबूजी की पैंशन के दो सौ रुपए और उसकी तनख्वाह के पांच सौ सब मिलाकर सात सौ होते हैं। इससे इतने बड़े घर का खर्च चलाना कितना मुश्किल हो जाता है।"[78]

परिवार के सारे सदस्य किराए पर लिए हुए छोटे से कच्चे मकान में रहते हैं। –"तीन कमरों के छोटे से मकान में बड़ी मुश्किल से अपने लिए एक कमरा अलग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया है। वरना सब कमरों में अजीब सी उमस और बच्चों के पेशाब की गंध भरी रहती है। उसका कमरा अलग है, फिर भी कहने को ही, वरना घर की बहुत-सी चीजें वहीं रहती हैं।"[79]

"बंजर दोपहर" में पति-पत्नी के आपसी ऊब, ठंडेपन, खीझ भरे वातावरण को प्रस्तुत किया है। "ठंडापन, खिजलाहट, सीलन जैसे दोनों एक दूसरे की जरूरत को मजबूरन पूरी कर रहे हैं।"[80]

कहानी में मध्यमवर्गीय परिवार के रहन-सहन, वातावरण को चित्रित किया गया है। पात्रों में रुचि की कमी के कारण घर की स्थिति बिगड़ी हुई सी है। पुराना घर के कारण सारे घर में चिड़ियों के घोंसले बने हैं। –"खिड़की के नीचे वाली दीवार पर पानी गिरने के सफेद धारियाँ बन गई हैं। दीवार का नीला कलर उखड़ गया है। सोफे की सिचुएशन बदलनी पड़ेगी। सारा पालिश उखड़ रहा है।"[81]

"अपने अपने दायरे" में भी पति-पत्नी के आपसी ऊब का चित्रण हुआ है। दोनों एक ही घर, एक ही कमरे में होते हुए भी एक दूसरे से दूर हैं। "दोनों एक दूसरे से आंखे बचाते हुए ऐसे बैठे थे जैसे रेल के डिब्बे मे दो अजनबी मुसाफिर बैठे हों, जिन्हें एक दूसरे से कोई सरोकार नहीं।"[82]

कहानी में मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। "कमरे में एक तरफ पलंग बिछा था, किनारे कोने में पेटियाँ थीं। वहीं पेटियों के पास कपड़े बदलने के लिये दरी बिछी थीं......."[83]

गृहस्वामी बड़े अफसर हैं, लेकिन वह पैसा घर से बाहर के अपने बुरे कार्यों में खर्च करते हैं, जिसके कारण घर की स्थिति अच्छी नहीं है। इस कहानी में ईसाई समाज का वातावरण चित्रित है क्योंकि कहानी ईसाई परिवार पर ही आधारित है। जैसे खाना खाने से पहले अंग्रेजी में दुआ करके "आमीन" कह कर दुआ खत्म करके खाना शुरू करना आदि कई ईसाई धर्म की रीतियाँ कहानी में मिलती हैं।

कहानियों में चित्रित मुस्लिम समाज

"ईद" मुसलमानों का सबसे बड़ा त्यौहार है। साल में दो ईदें मनाई जाती हैं। एक जो रमजान के महीने के बाद मनाई जाती है। रमजान के पूरे महीने में रोजा (व्रत) रखा जाता है और फिर अगले महीने की पहली तारीख को ईद होती है। दूसरी ईद "बकर ईद" कहलाती है। इस ईद पर भेड़, ऊँट आदि कुरबान करके उसका मांस बांट कर खाया जाता है।

लेखिका ने "त्यौहार" और "जाने कब" कहानियों में "ईद" का उल्लेख किया है। "जाने कब" कहानी में "ईद" शब्द का प्रयोग भी हुआ है। ईद के रोज बच्चों,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोटे भाई-बहनों आदि को खर्च के लिए पैसे दिए जाते हैं –इन्हीं खर्च के लिए पैसों को "ईदी" कहते हैं। ईद आने पर घर की मरम्मत, सजावट की जाती है और ईद के दिन अच्छे पकवान पकते हैं। –"हरेक घर में कुछ न कुछ काम शुरू हो गया था। लिपाई, कपड़े सिल रहे थे या सेवइयां बन रही थीं।"[84]

हर धर्म की तरह मुस्लिम धर्म के लोग भी निर्धनों को खाना खिलाना, दान देना पुण्य मानते हैं और हर सुअवसर पर पीर-मौलवियों को घर पर बुलाकर घर पर "कुरान शरीफ" पढ़ाया जाता है। रमजान के महीने में इन पुण्य कार्यों पर अधिक बल दिया जाता है। –"जुमे-जुमेरात फकीरों की भीड़ उसके दरवाजे पर खड़ी रहती है। हर साल रमजान की सत्ताईस तारीख को "जकात" (दान) के कपड़े बांटता है। बाहर के मौलाना को बुलाकर अपने घर पर जोर-शोर से मिलाद वाज़ (कुरान शरीफ का पाठ) कराता है।"[85]

मुसलमानों में नमाज मस्जिदों में पढ़ने का रिवाज है। यदि बाकी नमाजें घर में ही अदा की जाएं, तो भी हर व्यक्ति यही प्रयत्न करता है कि जुमा के रोज की ज़ोहर (दोपहर) की नमाज मस्जिद में ही मिल कर पढ़ी जाए क्योंकि माना जाता है कि मस्जिदों में अधिक लोगों के साथ इकट्ठे नमाज से अधिक पुण्य मिलता है। लेखिका ने भी "सीढ़ियों का ठेका" कहानी में लिखा है कि जुमा के रोज मस्जिदों में अधिक भीड़ होती है।

किसी की मृत्यु हो तो, उस मृत व्यक्ति की सब चीजें शव नहलाने वाले को दी जाती हैं। शव नहलाने का धंधा करने वालो के विषय में लेखिका लिखती हैं, खाट तक दोनों उठाकर ले जाते हैं।"[86]

मुस्लिम लोग जिन्न, भूत, प्रेत में विश्वास रखते हैं क्योंकि "कुरान शरीफ" में प्रेतों का उल्लेख मिलता है। लेखिका ने भी मुसलमानों के इस विश्वास की ओर संकेत किया है–"बचपन से ही वह सुनती आ रही है कि अक्सर रात की नमाज में और दोपहर की नमाज में जिन्नात भी नमाज पढ़ने आते हैं।"[87]

"अज़ान की आवाज आने लगती है। वह गमछा सिर पर रख लेते हैं।"[88] हर मस्जिद में दिन में पाँच बार अज़ान दी जाती है। अजान पढ़ने की आवाज सुनते ही मुसलमान सिर ढक लेते हैं और घर या मस्जिद में नमाज पढ़ने की तैयारियाँ करते हैं।

मुस्लिम समाज में औरतों में पर्दा करने की प्रथा है। इस प्रथा का उदाहरण "भोगे हुए दिन" कहानी में मिलता है। शांदा साहब की पत्नी को देखते ही घर आए मेहमान ने उन्हें सलाम की किन्तु वह बिना उत्तर दिए घबरा कर रसोईघर में चली गई, जबकि वह उस मेहमान से उम्र में बड़ी है। किन्तु मुस्लिम समाज में पर्दा प्रथा हर छोटी-बड़ी नारी के लिए है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ड.) भाषा-शिल्प

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। साहित्यिक भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा से भिन्न होती है। साहित्यिक भाषा में लेखक परिष्कृत भाषा और अधिक तीव्र एवं गहरे शब्दों का प्रयोग करता है। अपने विचारों और अपने भीतर चल रहे संघर्ष का लेखक ऐसे शब्दों से साक्षात्कार कराता है कि पाठक भी उसी भावना का अनुभव करता है। अपनी भाषा में सौन्दर्य का समावेश करने के लिए लेखक प्रतीकों, उपमाओं, मुहावरों आदि का प्रयोग करता है। भाषा में स्वच्छन्द, स्वाभाविक प्रवाह के लिए, अर्थीद्योतन के लिए इन विशेषताओं का होना आवश्यक है।

लेखक कहानी लिखने की प्रणालियों में से आवश्यकतानुसार किसी शैली पद्धति, डायरी पद्धति, वार्तालाप पद्धति–कहानी लेखन की पद्धतियाँ या प्रणालियाँ है।

कहानियाँ कई प्रकार की हो सकती है–घटना प्रधान कहानी, चरित्र प्रधान कहानी, भाव प्रधान कहानी, वातावरण प्रधान कहानी, मनोविश्लेषणात्मक कहानी, प्रतीकात्मक कहानी, हास्य-व्यंग्यात्मक कहानी।

"आदम और हव्वा" कहानी-संग्रह की अधिकांश कहानियां वर्णनात्मक पद्धति के अनुसार लिखी गई हैं। अतः लेखिका ने कथा, चरित्रों का चित्रण, वातावरण आदि का विवरण स्वयं दिया है और पात्रों के वार्तालाप से भी सहायता ली है। "भोगे हुए दिन" कहानी में आत्मकथा पद्धति का प्रयोग हुआ है, जिसमें घर में आए मेहमान घर की स्थिति देखकर अपना अनुभव प्रकट करता है।

लेखिका ने आधुनिक पद्धति "फ्लैश बैक" का भी प्रयोग किया है। जैसे किसी पात्र को कोई पूर्व घटना का स्मरण होता है और वह घटना पात्र के मस्तिष्क में गुजरती है। इस पद्धति के उदाहरण "सीढ़ियों का ठेका", "चमड़े का खोल", "बंजर दोपहर" आदि कहानियों में मिलते हैं।

आलोच्य संग्रह की कहानियां सामाजिक कहानियाँ हैं जिनमे समाज की किसी न किसी समस्या को प्रस्तुत किया गया है। अधिकांश कहानियाँ नारी प्रधान हैं जिनमें नारी की विडम्बनाओं और कुण्ठाओं को सामने लाया गया है।

कई कहानियां सौम्य गति से प्रवाहित होती हैं। किन्तु कई कहानियों की घटनाएं क्रम से नहीं चलतीं। अतः पूर्व घटनाओं का विवरण बाद में मिलता है। "जाने कब" कहानी में भी घटनाएं मिश्रित रूप से चलती हैं और मुख्य घटना, जिस पर सारी कहानी आधारित है, का उल्लेख लगभग कहानी के अंत में मिलता है। कई कहानियों का आरम्भ और अंत एक ही दृश्य और एक ही घटना से होता है और फिर कहानी के मध्य में सारी पूर्व कथा का उल्लेख होता है। उदाहरणार्थ:–"आदम और हव्वा" कहानी। कई कहानियों में मुख्य कथा के साथ-साथ लघु कथा या

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथाओं को भी स्थान दिया गया है। जैसे "सीढ़ियों का ठेका" में कई परिवारों की कथाएं मिलती हैं।

लेखिका ने प्रश्न-शैली का प्रयोग भी किया है। जैसे–"बाबूजी और माँ ने समझ क्या लिया है? उसमें क्या ऐब है?....... इसमें किसका दोष है? उसका या बाबूजी और मां का? बाबूजी ने क्यों इतने बच्चे पैदा किए?......इन सब उपकारों का यही बदला है?"[89] प्रतीक शैली के उदाहरण भी मिलते हैं। जैसे–"सामने खिड़की के पट पर भटकी हुई चिड़िया फड़फड़ा रही थी।"[90] "चिड़िया" शब्द नायिका के मन का प्रतीक है जो जीवन का निर्णय करने के लिए छटपटा रहा है।

लेखिका ने पात्रों के चरित्र, स्थान, स्थिति आदि के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। जैसे आधुनिक वर्ग के लोग अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग करते हैं। –"ओह गॉड ! यहाँ तो फ्राय हो जायेंगे।"[91] "डोंट माइंड डियर।"[92] लेखिका ने प्रसंगानुकूल ग्राम्य भाषा और उर्दू शब्दों से भरे संवादों का प्रयोग भी किया है। "बुआ, तू सबको कोसने भेजती है।........."[93] "कब आई रे?"[94]

सरल-सहज शब्दावली के प्रयोग के अतिरिक्त लेखिका ने तत्सम शब्दावली का भी प्रयोग किया है, जिससे उनकी भाषा में गम्भीरता आ गई है। उन्होंने ऐसी क्लिष्ट भाषा का प्रयोग भी नहीं किया है कि भाषा में अस्वाभाविकता आ जाए।

भाषा को अधिक सुन्दर बनाने के लिए लेखिका ने देशी-विदेशी, लोक-प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी किया है। उनकी भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा लगती है। अंग्रेजी, अरबी, उर्दू, फारसी आदि विदेशी भाषाओं का प्रभाव जन जीवन की भाषा पर भी पड़ा है, जो अब अस्वाभाविक नहीं लगता। शिक्षित समुदाय में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव, मुस्लिम वर्ग में उर्दू-अरबी-फारसी भाषा का प्रभाव है। इसलिए लेखिका ने भी प्रंसगानुकूल इन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है।

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

ये लोक प्रचलित उक्तियाँ हैं जिनसे भाषा में सौन्दर्य के साथ-साथ अभिव्यक्ति की विलक्षणता तथा प्रवाहमयता आती है। यह कम शब्दों में अधिक का साधन है। इससे भाषा में असाधारणता आती है। आकार संक्षिप्त होते हुए भी अर्थ में गहराई होती है। ये साहित्यिक भाषा और बोलचाल की भाषा का भी विशेष अंग है। मुंहावरा वाक्यांश होता है, जिसका अर्थ शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है। लोकोक्ति एक पूरा वाक्य भी हो सकता है और अर्थ की दृष्टि से पूर्ण होता है। इनका प्रयोग किसी बात का खण्डन-मण्डन करने के लिए भी किया जाता है। इनके प्रयोग से भाषा अर्थगर्भित, प्रभावशाली, चमत्कारपूर्ण होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखिका ने भी सामाजिक विकृतियों, कठिनाइयों, अमानवीय, प्रथाओं और अन्य कठोर सच्चाइयों को प्रकट करने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। जैसे–

"ढकी हंडी खोलना, चेहरा उतरना[95], जली-कटी सुनाना, दिल छोटा करना, जी भर जाना, छाती पर साँप लोटना, अंगूठा दिखाना[96], चैन की साँस लेना, दिल हारना, माथा ठनकना, आँखे फाड़-फाड़कर देखना, पुराने-कच्चे चिट्ठे खोलना, मुँह बंद करना, आँखें भर आना[97], चेहरा लाल होना, मुँह उतरना, मन डूबना[98], दिन में तारे देखना[99], आँखें चुराना, एड़ियाँ रगड़ना, दाने-दाने को तरसना, घड़ों पानी पड़ना, नाक में दम करना, दामन छोड़ना[100], मर भर जाना, जी दुखना[101], मन खिलना, मर मारना, आग बबूला होना, आँखें चुराना[102]।

लेखिका ने ध्वन्यात्मक शब्दों एवं तुक साम्य एवं युगल शब्दों का प्रयोग भी किया है–

"झालर जगह-जगह, तमतमा, अस्त-व्यस्त, नाक-नक्शे, सौन्दर्य-सामग्री, बेकार का बहम[103], भूरे-भूरे, गिलगिले, तीज-त्यौहार, चिड़चिड़ाहट, पीले-पीले[104], चिलचिलाती, जुमे-जुमेरात, बाल-बच्चों, खैर-खैरात, आठ-आने, अच्छे-अच्छे, खबरों पर खबरें, आस-औलाद, जवान-जवान, लथपथ लुंगियों, चूँ-चप्पड़, दिन व दिन, दिल ही दिल, रोज-रोज, खाली-खाली सी सीढ़ियाँ[105], गर्म-गर्म मोगरी मछली, किसी न किसी, अजीब अर्थपूर्ण, बकरियों को बांधने के बहाने, फटी-फुलपैंट, सकापका, रातों-रात, अंधेरा-उजाला, लोक-लाज, बादल ही बादल, मन ही मन, गंदी गंदी गालियाँ[106], घर के घुटे-घुटे, जोर-जबरदस्ती, जहाँ-तहाँ, चहल-पहल, सात-साल, सूखा-सूखा, छोटे-छोटे, दो-दौर, एक-एक, दूर-दूर, धीरे-धीरे, लड़खड़ा-लड़खड़ा[107], मोह-माया, भीड़-भाड़, अलग-अलग आकर्षक, जाने-अनजाने[108], गोरे-गालों, सैर-सपाटे, आफिस में आँखों के आगे अंधेरा सा, सात-सौ, भिनभिना[109], बीच-बीच, पुराना सा पुराने, कहते-कहते, टप-टप, मकान मालिक, जीते-जी, क्षण-क्षण[110], अपने आप, दबा-दबा, ईद की ईदी, पास-पड़ौसियों[111], गोल-गोल, खंखाल-खंखाल, साफ-सुथरा[112], इधर से उधर, फुसफुसाते, जानी पहचानी, फोटो-फ्रेम[113]।

ध्वनि सूचक शब्द

"खस-खस"[114] "म्याऊँ-म्याऊँ, खड़-खड़"[115] "गुटर-गूँ-गुटर-गूँ, चर्रमर्र-चर्रमर्र।"[116]

लेखिका ने आलोच्य संग्रह में उपमाओं, अलंकारों, सूक्ति वाक्यों, कृत्रिम शैली (....) का प्रयोग किया है। कुल मिलाकर भाषा-शिल्प की दृष्टि से यह एक सशक्त संग्रह है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(च) उद्देश्य

कहानी के माध्यम से लेखक पाठकों का मनोरंजन के अतिरिक्त समाज की बुराईयों, परिचित जनों के जीवन की घटनाओं और व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों, भीतरी भावनाओं को साहित्य के माध्यम से व्यक्त करता है। लेखक का उद्देश्य भी यही होता है कि वह मार्मिक ढंग से किसी भावना, किसी घटना से पाठकों को परिचित कराके उनके हृदयों को झकझोर दे। उसके मस्तिष्क को समझने और सोचने पर विवश करे कि कहाँ गलत हैं और क्या गलत है?

"आदम और हव्वा" कहानी में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि पुरुष ईर्ष्यालू होता है। वह नारी के अतीत और वर्तमान से परिचित होते हुए भी उसके अतीत की छोटी सी बात भी सहन नहीं कर पाता, चाहे वह बात नारी के वश में नहीं भी हो। नारी यह सब समझते हुए भी और शिक्षित, आधुनिक होते हुए भी पुरुष पर अपनी भावनाओं के हाथों निर्भर है।

नारी का हृदय विशाल है। नारी पुरुष का अतीत नहीं, वर्तमान देखती है। यदि पुरुष के वर्तमान में भी कोई बुराई है तो वह सहन कर लेती है। उसके हृदय का स्नेह और ममता कम नहीं होती। जैसे "शनाख्त" कहानी की नायिका का पति शराबी, चरित्रहीन, घृणित होते हुए भी पत्नी की करूणा का पात्र है, घृणा के कारण वह पति के शव को पहचानने से इंकार करती है और उसकी मृत्यु पर मातम नहीं करती लेकिन वह अपने नारी मन को नहीं मार पाती है। कई दिनों उपरान्त पति की याद आने पर वह रो पढ़ती है।

शराब के नशे में मनुष्य और पशु में कोई अंतर नहीं रहता। उसे अपने आप की, घर बाहर की, लोक-लाज की, पत्नी और बेटी के अंतर की खबर ही नहीं होती। इसी बात को स्पष्ट रूप से दिखा कर लेखिका ने शराब की लत की बुराई दिखाई है।

एक निर्धन व्यक्ति अपने अंह को बनाए रखने के लिए दान, जकात लेना स्वीकार नहीं करता। भले ही उसे कष्ट हो लेकिन वह अपनी स्थिति को दूसरों के सामने प्रकट नहीं होने देता। निर्धनता सबसे बड़ा कष्ट है। परिस्थतियां निर्धन को अपने अंह को छोड़कर समझौता करने के लिए विवश करती हैं। इसी बात को लेखिका ने "त्यौहार" कहानी में चित्रित किया है।

"सीढ़ियों का ठेका" कहानी में लेखिका ने अशिक्षित, बेसहारा महिलाओं की विवशता को दिखाया है। करीमन मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठ कर भीख मांगती थीं, उसकी मृत्यु के बाद उसकी जगह फातिमा बैठकर भीख मांगती है। मानो इन महिलाओं ने मस्जिद की सीढ़ियों पर भीख मांगने का ठेका ले रखा हो। करीमन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फातिमा, नसीबन उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो आत्मनिर्भर नहीं हैं। जब तक पति जीवित है, जीवन आराम से कट जाता है। सुख भले ही न मिले किन्तु कमाने की चिंता नहीं होती। बेवा होने पर आय का कोई साधन नहीं होने पर, वे भीख मांगने के लिए विवश हो जाती है।

नारी की दूसरी विवशता यह है कि यह जानते हुए कि उसका पति चरित्रहीन है, वह चुप रहती है। यदि विरोध करे तो उसकी पिटाई होती है या हो सकता है उसका पति उसे छोड़ ही दे।

"जाने कब" कहानी में भी लेखिका ने नारी के अशिक्षित होने की समस्या को सामने लाया है। लेखिका ने समाज के उस वर्ग का चित्रण किया है जहाँ नारी को पढ़ा-लिखा कर आत्मनिर्भर होना न सिखा कर बचपन से ही अपना दहेज जमा करना सिखाया जाता है। घर में बेटों को पढ़ाया जाता है, बेटियों को नहीं। लेकिन आज समाज अशिक्षित नारी को नहीं स्वीकारता। जैसे कहानी का एक पात्र कहता है – "मियाँ, आजकल के लड़के पढ़ी-लिखी लड़की ढूंढते हैं जो बराबरी में बैठकर सिनेमा देख सके। कम से कम मैट्रिक तो होना निहायत जरूरी है, वरना जानवरों में और लड़कियों में लड़के कोई फर्क नहीं समझते।"[117] इस प्रकार लेखिका ने इस बात को प्रकट किया है कि आज के आधुनिक युग में नारी को शिक्षित और आत्मनिर्भर होना आवश्यक है।

लेखिका ने "चमड़े का खोल" में नारी के पुरुष पर आश्रित होने की समस्या को उभारा है। पुरुष दूसरी पत्नी के साथ रहता है और पहली पत्नी चुपचाप घर में पड़ी रहती है और उसे चिन्ता रहती है कि कहीं उसका पति उसे घर खर्च के पैसे देना बंद न करे। दूसरी समस्या समाज में पलने वाली प्रथाओं की है। गरीब मां के लिए बेटी को हर बार कपड़े देकर ससुराल भेजने की प्रथा को पालना कितना कठिन होता है, उसक स्पष्ट चित्र इस कहानी में मिलता है। इसी प्रथा के कारण बेटी मायके न आने का निर्णय करती है। इस प्रकार कहानी में लोगों की बनाई हुई प्रथाओं पर प्रहार किया गया है।

"खाली आँखों की पीड़ा" में नारी अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए एवं अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए संघर्ष करती है। नारी हर हाल में पुरुष पर आश्रित है। यदि वह आत्मनिर्भर एवं कमाऊ है, फिर भी वह अपने पति की इच्छा के विरुद्ध नहीं चल सकती। पति के साथ सारा जीवन बिताने के बाद भी उसे अपने पति पर विश्वास नहीं है। ऐसे में यदि वह अपने बुरे समय के लिए छुपा कर कुछ पैसा बचाए तो भी वह पति की दृष्टि में अपराधिनी हो जाती है।

"विद्रोह" कहानी में नारी अपनी इच्छाओं का वध करके अपने माता-पिता, भाई-बहनों का पालन-पोषण करने के लिए विवश है। समाज में ऐसी कई नारियां हैं जो अन्य लड़कियों से अच्छी होते हुए भी अविवाहित रह जाती हैं। क्योंकि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती। इसलिए न चाहते हुए भी उन्हें नौकरी करनी पड़ती है। उनकी विडम्बना यही है–"जैसे वह ही उन सबकी पिता हो और सब उसके बच्चे हों, मां भी, बाबूजी भी और इन सबका पेट भरना उसका फर्ज हो गया हो।"[118] इस प्रकार वह अपने जीवन को भूलकर अपने पिता का घर चलाती है और वह चाह कर भी विद्रोह नहीं कर पाती। लेखिका ने कहानी में बढ़ती हुई बच्चों की संख्या पर भी प्रहार किया है।

"भोगे हुए दिन" में सरकार और सामाजिक स्थिति पर चोट की गई है। जैसे शांदा साहब का अन्य महान कवियों से पत्र व्यवहार रहा है और इकबाल के समकालीन कवि रहे हैं। जब तक लोगों ने उन्हें माना वह अच्छी स्थिति में थे। लेकिन समय बीतने पर उनकी मांग खत्म हुई और उनकी स्थिति भी बुरी हो गई। शांदा साहब के अनुसार, "शायर को उस वक्त मर जाना चाहिए, जब लोग उसे पसंद करते हों, दीवाने हों।"[119] तभी उसकी कृतियाँ प्रकाशित होती हैं और उन्हें कठिनाइयाँ नहीं देखनी पड़ती। वास्तव में यह एक व्यंग्य है। सरकार को ऐसे महान लेखकों की जीविका का कोई साधन बनाना चाहिए। शांदा साहब के शब्दों में, "हम लोगों पर खर्च करना गौरन्मेन्ट फिजूल समझती है।"[120]

कहानी में एक पात्र सोचता है–"अगर आज इकबाल होते तो।"[121] अतः हो सकता है कि यदि इकबाल जीवित होते तो उन्हें भी शांदा साहब की तरह उपेक्षा एवं निर्धनता का सामना करना पड़ता। समाज में कई ऐसे लेखक मिलते हैं जिन्हें समाज और सरकार भूल चुके हैं।

"बंजर दोपहर" एवं "अपने-अपने दायरे" में लेखिका ने पति-पत्नी की आपसी ऊब को दिखाया है। "शायद इसी वातावरण से बचने के लिए विदेशी अपना पार्टनर बदलते रहते हैं। वहाँ जीवन एक छलकता जाम है, मगर यहाँ जीवन ऊब और बर्फ से ज्यादा कुछ नहीं, कोई चेंज नहीं। हर आदमी ऊब से भरा जल्दी-जल्दी जीवन खत्म करना चाहता है।"[122]

लेखिका ने अनचाहे बंधनों और सम्बंधों के खोखलेपन को भी दिखाया है। जैसे "अपने-अपने दायरे" में पुरुष के सम्बन्ध कई स्त्रियों से है और पत्नी सब देखते हुए भी कोई प्रश्न नहीं करती, मानों उस पुरुष से कोई सम्बन्ध न हो। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के जीवन से कटे हुए हैं।

लेखिका ने आलोच्य संग्रह में संसार की वास्तविकता एवं महिला जीवन के कठोर सत्यों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संदर्भ

1. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी", "आदम और हव्वा", पृ॰ 109, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
2. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्यौहार", पृ॰ 28.
3. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ॰ 13, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972.
4. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ॰ 23, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972.
5. वही.............वही संग्रह..........कहानी "श्नाख्त", पृ॰ 26.
6. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा", संग्रह में संकलित कहानी, "श्नाख्त", पृ॰ 33, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972.
7. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चमड़े का खोल", पृ॰ 57, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
8. वही, पृ॰ 58.
9. वही, पृ॰ 60.
10. वही, पृ॰ 61.
11. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आँखों की पीड़ा", पृ॰ 169, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
12. वही.......वही संग्रह.......वही कहानी, पृ॰ 170.
13. वही......."सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ॰ 180.
14. वही.........वही संग्रह........वही कहानी, पृ॰ 180.
15. वही, पृ॰ 183.
16. वही.
17. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ॰ 108, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972.
18. वही.........वही........वही......., पृ॰ 108.
19. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ॰ 172, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
20. वही, पृ॰ 176.
21. वही, पृ॰ 173.
22. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी", "विद्रोह" पृ॰ 177, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1991
23. वही - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ॰ 123, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

24. मेहरुन्निसा परवेज़-"अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने-अपने दायरे", पृ॰ 73, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
25. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "आदम और हव्वा", पृ॰ 104, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
26. वही.......कहानी संग्रह, "त्यौहार", पृ॰ 20.
27. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्यौहार", पृ॰ 22, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
28. वही, पृ॰ 22.
29. वही.
30. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ॰ 13, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
31. वही, पृ॰ 15.
32. वही, पृ॰ 18.
33. वही, पृ॰ 19.
34. वही, पृ॰ 19.
35. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "शनाख्त", पृ॰ 28.
36. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चमड़े का खोल", पृ॰ 58, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
37. वही - वही - वही, पृ॰ 53.
38. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आँखों की पीड़ा", पृ॰ 164, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
39. वही - वही - वही, पृ॰ 169.
40. वही, पृ॰ 169.
41. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ॰ 183, सत्साहित्य प्रकाशन, 1991.
42. वही - वही - वही, पृ॰ 180.
43. वही - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ॰ 101, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975.
44. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ॰ 103, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
45. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ॰ 172, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
46. वही - वही - वही, पृ॰ 174.
47. वही, पृ॰ 174.
48. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ॰ 174, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

49. वही - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ० 120, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
50. वही - वही - वही, पृ० 123.
51. वही - वही, कहानी "अपने-अपने दायरे", पृ० 71, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
52. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "आदम और हव्वा", पृ० 03, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
53. वही - वही - वही, पृ० 93.
54. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्यौहार", पृ० 25, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
55. वही - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ० 100, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975.
56. मेहरुन्निसा परवेज़-"सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ० 175, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
57. वही - वही - संग्रह - कहानी "जाने कब", पृ० 183.
58. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ० 16, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
59. मेहरुन्निसा परवेज़-"अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ० 125, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
60. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "श्नाख्त", पृ० 31, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
61. मेहरुन्निसा परवेज़-"एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "आदम और हव्वा", पृ० 97, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
62. वही - वही संग्रह - कहानी "त्यौहार", पृ० 21.
63. वही - वही संग्रह - कहानी "त्योहार", पृ० 22.
64. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ० 16, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
65. वही - वही संग्रह - वही कहानी, पृ० 13.
66. वही - वही संग्रह - कहानी "श्नाख्त", पृ० 28.
67. मेहरुन्निसा परवेज़-"आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "श्नाख्त", पृ० 28.
68. वही - वही संग्रह - वही कहानी, पृ० 27.
69. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" सग्रह में संकलित कहानी, "चमड़े का खोल", पृ० 54.
70. वही।
71. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आँखों की पीड़ा", पृ० 168.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

72. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आँखों की पीड़ा", पृ० 168.
73. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ० 183, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
74. वही, पृ० 178.
75. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ० 187.
76. मेहरुन्निसा परवेज़ - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ० 100, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
77. वही, पृ० 100.
78. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ० 175, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
79. वही, पृ० 175.
80. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ० 125, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
81. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ० 123, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
82. वही, कहानी, "अपने-अपने दायरे", पृ० 69.
83. वही, पृ० 66
84. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्योहार" पृ० 24, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990
85. वही, पृ० 24.
86. मेहरुन्निसा परवेज़ - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ० 16, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
87. वही, पृ० 19.
88. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ० 180, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
89. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ० 172, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
90. वही........वही संग्रह..............वही कहानी, पृ० 177.
91. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "आदम और हव्वा", पृ० 94, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
92. वही, "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आँखों की पीड़ा", पृ० 166, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
93. वही, "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ० 16, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

94. वही, "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने-अपने दायरे", पृ॰ 66, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991
95. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्यौहार", पृ॰ 23, 25, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
96. वही, "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ॰ 16, 17, 18, 20, 23, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
97. वही, वही संग्रह - कहानी "श्नाख्त", पृ॰ 25, 27, 28, 29, 32, 33,
98. वही, "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आंखों की पीड़ा", पृ॰ 163, 166, 168, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
99. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ॰ 175.
100. वही, वही संग्रह - कहानी "जाने कब", पृ॰ 180. 181, 182, 183, 184.
101. वही, "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चमड़े का खोल", पृ॰ 53, 57, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
102. वही, "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने-अपने दायरे", पृ॰ 67, 70, 71, 72, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
103. वही, "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "आदम और हव्वा", पृ॰ 94, 95, 96, 99, 109, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
104. वही, वही संग्रह - कहानी "त्यौहार", पृ॰ 19, 24, 28.
105. मेहरुन्निसा परवेज़ - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "सीढ़ियों का ठेका", पृ॰ 11, 14, 16, 17, 18, 19, 20, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1991.
106. वही, वही संग्रह - कहानी "श्नाख्त", पृ॰ 24, 25, 27, 28, 29, 31.
107. वही, वही संग्रह - कहानी "भोगे हुए दिन", पृ॰ 100, 101, 102, 103, 104.
108. वही, "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आंखों की पीड़ा", पृ॰ 164, 165, 170, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
109. वही, वही संग्रह - कहानी, "विद्रोह", पृ॰ 172, 174, 175.
110. वही, "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चमड़े का खोल", पृ॰ 53, 54, 55, 56, 57, 60, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
111. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ॰ 179, 180, 183.
112. वही, "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ॰ 122, 124, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
113. वही, वही संग्रह - कहानी "अपने-अपने दायरे", पृ॰ 66, 70, 71, 73.
114. वही, "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ॰ 103, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

115. वही, "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्यौहार", पृ० 20, 25.
116. वही, "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ० 120, 122.
117. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ० 181, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
118. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ० 171, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
119. मेहरुन्निसा परवेज़ - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "भोगे हुए दिन", पृ० 104, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972.
120. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ० 102.
121. वही - वही - वही, पृ० 105.
122. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "बंजर दोपहर", पृ० 125, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तृतीय अध्याय

"ग़लत पुरुष" की कहानियों का मूल्यांकन

"ग़लत पुरुष" नामक कहानी-संग्रह मेहरून्निसा जी का दूसरा संग्रह है जिसका प्रकाशन सन् 1977 में हुआ है। संग्रह में विभिन्न विषयों पर आधारित कहानियाँ संकलित हैं। "ग़लत पुरुष" नामक कहानी एक नारी के ग़लत पुरुष (नामर्द) का चयन करने की कथा है। "टोना" कहानी में पुरुष के शक का चित्रण हुआ है जो किसी भी जादू-टोने से दूर नहीं हो सकता। "सलाखों में फंसा आकाश" एक ऐसी नारी की कथा है जिसे बचपन से ही माता-पिता से उपेक्षा मिली और फिर विवाह होने पर पति और सास ने भी उसके साथ अन्याय किया। इसके अतिरिक्त तपेदिक की बीमारी ने भी उसका जीना कठिन किया। "जंगली हिरनी" एक युवती के प्रथम प्रेम के मोहभंग की कहानी है। "बंटवारे की फांस" में हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारे से हुए खून-खराबा, विनाश को दिखाते हुए लेखिका ने एक नारी के जीवन की कथा का विवरण भी दिया है, जिसका जीवन भी दो देशों-हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में बंट कर रह गया है।

आलोच्य संग्रह में आर्थिक तनाव, स्वच्छन्द एवं अनैतिक यौन सम्बन्धों आदि विषयों पर भी कहानियाँ संकलित हैं।

(क) कहानियों का कथ्य

"ग़लत पुरुष" एक नारी के जीवन की दयनीय घटना पर आधारित कहानी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिप्रा अपने जीवन से निपटती हुई, अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई जी रही थी। "जिदंगी का एक बड़ा समय एक नीरस, उदास चुप्पी में बीत गया था। उस जैसी अनाथ लड़की का जीवन की भीड़-भाड़ में कोई काम नहीं था।......"[1]

शिप्रा जिस मकान में किराए पर एक कमरा लेती है, वहीं उसका संपर्क एक परिवार से होता है। सदा अकेली रहने वाली, शिप्रा धीरे-धीरे उस परिवार से जुड़ गई। उसी परिवार के एक शराबी युवक-विनय-के प्रेम में वह इतना डूब जाती है कि वह उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित करना चाहती है। लेकिन प्रकृति ने शिप्रा के साथ अन्याय किया था। उसने एक नपुंसक पुरुष से प्रेम किया था। एक बार उत्तेजना में शिप्रा विनय के निकट आती है और विनय भी उत्तेजित होकर उसे अपनी पतली बाहों के कसाब में ले लेता है, लेकिन तभी अपनी नंपुसकता का ध्यान आते ही दूर हट जाता है और शिप्रा को अपने नपुंसक होने का राज़ बता देता है। विनय के रात-दिन शराब पीने का कारण भी यही था। इस सदमे से शिप्रा मानो टूट गई। उसने वह जगह छोड़ दी और दुबारा विनय से मिलने का साहस नहीं किया।

विनय की बहन-मोना-शिप्रा को पत्र लिखती थी। वास्तव में वह पत्र मोना की आड़ में विनय ही लिखता था, यह पत्र पढ़कर साफ़ पता चलता था। शिप्रा अपना जीवन एक नपुंसक पुरुष की याद में, उसके पत्रों के सहारे, उन पत्रों के इंतजार में बिताने लगी थी, लेकिन भाग्य ने उससे यह सहारा भी छिन लिया। मोना के एक पत्र से उसे विनय की मौत का समाचार मिलता है। "विनय की मौत से मोना का परिवार ही नहीं, वह खुद भी टुकड़े-टुकड़े होकर खत्म हो रही है। मोना की आड़ में विनय उसकी लावारिस जिंदगी को नाम दे रहा था।.........."[2]

"टोना" कहानी में काकी अपनी बेटी-खोड़ी के साथ रहती है। गांव में सब जानते हैं कि खोड़ी को पति ने छोड़ा है, जबकि काकी का कहना है कि खोड़ी स्वयं उस नामर्द को छोड़कर आई है, जो खोड़ी की जवानी का तेज देखकर घबरा गया था। यही सब कह कर काकी ने खोड़ी का दूसरा व्याह दो पत्नियों वाले तीतर गांव के पटेल से किया। पटेल की दोनों पत्नियों ने खोड़ी का स्वागत किया। लेकिन स्नेह तो केवल बड़ी की आंखों में मिला। दूसरी की आंखों में ईर्ष्या थी। दोनों में से किसी को संतान न थी इसीलिए पटेल ने तीसरा ब्याह किया।

खोड़ी और मंझली बहू (दूसरी पत्नी) खम्हार गाँव में बाली मेला देखने गई, तो वहां एक शहरी फोटोग्राफर ने खोड़ी का पीछा करते हुए उसकी तस्वीरें लीं। खोड़ी ने पुजारी से उस फोटोग्राफर की शिकायत की तो पुजारी ने हंस कर बात टाल दी। मंझली सब देखकर मुस्करा रही थी। गाँव में खोड़ी के पेट से होने की खबर फैल गई थी। पटेल भी खुश था। पटेल कई दिनों से किसी काम से जगदलपुर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया था, जहाँ उसने सरकारी सिनेमा के पर्दे पर गाँव के बाली मेले की फिल्म भी देखी। उस फिल्म में खोड़ी को भी हंसते, पान खाते आदि देख लिया था, जो फिल्म मेले में फोटोग्राफर ने खोड़ी का पीछा करते हुए ली थी। पटेल के घर आते ही मंझली ने उसे उस फोटोग्राफर की सारी बातें कह दीं। पटेल की आंखों में खून उतर आया। वह खोड़ी के कमरे में आया और खोड़ी के गर्भ को उसी फोटाग्राफर का कहकर उसके पेट पर लात मारी और चिल्लाता, गालियाँ देता हुआ चला गया। जबकि खोड़ी का कोई दोष न था। खोड़ी को लगा कि, "............. अब पटेल की आँखों में पड़ा शक का टोना (जादू) कभी नहीं उतरेगा।"[3]

"सलाखों में फंसा आकाश" कहानी में लक्ष्मी अपने जीवन से पीड़ित है। बचपन में माता-पिता से प्यार न मिलकर उपेक्षा और मार ही मिली। वह भी कभी उन्हें चाह न सकी। ब्याह में न उसे ढंग के गहने, न ढंग के कपड़े दिए। बाबूजी के लाख कहने पर भी माँ ने उसे अपने गहने नहीं दिए। उसकी विदाई के समय माँ बहाना बनाकर छुप गई और वह बिना माँ से मिले विदा हो गई। शादी के गहने कपड़े सास ले गई और शादी के कुछ समय बाद ही पति उसे मायके छोड़ गया। आज वह उपेक्षित सी मायके में रह रही है। अकेलापन, उपेक्षा के अतिरिक्त उसकी तपेदिक की बीमारी ने भी उसका जीना कठिन कर दिया। ".........माँ आज लाख इस बीमारी को उसके भाग्य पर थोपे, पर वह जानती है कि इसे देने वाला कौन है? क्या उसके जन्मदाता नहीं? आज जब वह बीमार हो उसी घर में आई है, तो माँ को क्यों उसकी बीमारी साल रही है?"[4] लक्ष्मी की माँ बहाना कर उसके साथ डाक्टर के पास चलने से मना करती। और यदि साथ जाती तो भी पैसे घर भूल आने का बहाना बना कर उसके इलाज और दवाई पर पैसा खर्च नहीं करतीं। लक्ष्मी नाली पर बैठी खाँसती रहती और खून की उल्टियाँ करती रहती। उसे ससुराल की दीवारें और वहाँ बिताए कुछ दिन बहुत याद आते, लेकिन वह वहाँ कैसे जाती? अब तो उसके पति ने दूसरा विवाह भी कर लिया, जिससे लक्ष्मी को ठेस लगी। पिता उसे इलाज के लिए सेनिटोरियम भिजवाने का प्रबंध कराते हैं। माँ को खर्चों की चिंता लगती है जबकि लक्ष्मी को अकेलेपन की चिंता सताने लगती है। माता-पिता, पति की उपेक्षा से लक्ष्मी इतना उदास होती है कि वह अपने जीवन से मुक्ति पाना चाहती है। वह बोतल की सारी दवा न पीकर नाली में बहा देती है।

"जंगली हिरनी" कहानी में मेंगन एक गाँव में अपने छोटे से परिवार के साथ रहती है। अपनी गौरी, चिट्टी, सुन्दर बेटी-लच्छो-को झुंड के बीच नाचते हुए देखकर उसे याद आता है कि आज से 16 वर्ष पूर्व जब मेंगन नई-नई ब्याहता थी, तो एक दिन वह जंगल में लकड़ी बटोर रही थी, जहाँ उसकी भेंट एक अत्यंत गोरे शिकारी से हुई। मेंगन को देखकर शिकारी की नजरें मेंगन के भरे-भरे शरीर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर फिसलने लगी। शिकारी ने चाय कहकर न जाने मेंगन को क्या पिला दिया। "साहब उसे अंदर के मंदिर में ले गया और जब वह वापस आई तो..........? उसके पैर काँप रहे थे, आँख बोझिल थीं और जब नौ माह बाद लच्छो हुई तो बिलकुल साहब की तरह गोरी। बुधु (पति) को शक ने धर दबोचा, "बता किसकी है।"[5] पर मेंगन ने कुछ न कहा। धीरे-धीरे लच्छो बड़ी होती गई और पति भी बात भूल गया।

गांव में लगे मेले में लच्छो देवी के सामने खूब नाची। वह देवी को खुश करके एक अच्छा पति मांगना चाहती थी। नाच समाप्त करके वह ज्योंही मुड़ी तो उसकी नजर एक सुन्दर शहरी बाबू पर पड़ी, जो एक मास्टर था। लच्छो रोज घास में छुपकर मास्टर को बच्चों को पढ़ाते देखती रहती थी। एक दिन मास्टर ने उसकी चोरी पकड़ ली। "लच्छो इसी तरह परदेसी (मास्टर) से मिलती, कभी जंगल में, कभी मंदिर में, कभी नाले के किनारे। देर तक परदेसी से उसके शहर के बारे में पूछती और खो जाती।"[6]

दुर्भाग्यवश स्कूल न चल पाने के कारण मास्टर लच्छो से किए हुए सारे वादे तोड़कर वापस शहर चला गया और लच्छो दिल में दुख, पीड़ा, आग लिए रह जाती है।

"बंटवारे की फांस" हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारे से पीड़ित एक नारी की कथा है।

मंजू अपने पिता के साथ लाहौर में रहती थी। मंजू बी॰ए॰ में पढ़ती थी। वह एम॰ए॰ के एक छात्र–राकेश–के गोरे, सुन्दर शरीर और हंसमुख चेहरे की ओर आकर्षित होती है। पिता ने मंजू की शादी राकेश से ही कर दी तो उसके सारे सपने साकार हुए। राकेश का स्नेह और सहारा पाकर वह निहाल हो गई। दुर्भाग्यवश चारों ओर बंटवारे की आग भड़क उठी। राकेश और उसकी बहन अभी घर नहीं लौटे थे। दंगा करने वाले लोग इनके घर के सामने भी हो गए तो मंजू सास का हाथ पकड़ कर पिछले दरवाजे से भाग कर तीन दिन जंगल में छुप गई थी। सास भूख के कारण मर गई। सास के शव को नाले में डाल कर वह वापस शहर लौट आई। रास्ते में कुछ लोगों ने उसका पीछा किया तो वह एक घर में घुस गई। वहां एक पुरुष–मोहन–था, जिसने उसे जगह और सहारा दिया। राकेश के न मिल पाने कारण मंजू ने उसे मृत समझा। बंटवारा हो गया। "............मोहन उसे कलकत्ता ले आया, जहाँ पर मोहन के बहुत कहने पर उससे शादी कर ली, पर वह मोहन को अपना पिछला जीवन नहीं बता सकी। इस डर से कि वह फिर असहाय न हो जाए।............।"[7]

आज सात साल बाद मोहन अपने साथ दोस्त राकेश को घर लाया तो मंजू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डर के कारण उसके सामने न आई। उसके हृदय में राकेश के लिए प्यार उमड़ आया। उसके गर्भ में मोहन का बच्चा था, लेकिन मन राकेश के लिए तड़पने लगा। वह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि वह क्या करे और दोनों में से किस पति को अपना देवता माने। रात के एक बजे मंजू चुपचाप राकेश के कमरे में गई, जहां मेज पर अपनी और राकेश की शादी की तस्वीरें देखकर उसे एहसास हुआ कि राकेश अभी भी उसे याद करता है। और हर समय वह तस्वीर अपने पास रखता है। सोते हुए राकेश को निहारते हुए मंजू ने वह लॉकेट राकेश के बैग में डाल दिया जो राकेश ने मंजू को लाहौर में दिया था, जिस पर "राकेश-मंजू" लिखा था। यह लॉकेट मंजू ने आज तक मोहन की नज़रों से छुपा कर संभाल कर रखा था जिसे वह आज राकेश को लौटा आई। मंजू राकेश के पैर छूकर, अपनी सिसकियाँ दबाए कमरे से बाहर चली आई।

(ख) प्रमुख पात्र

"ग़लत पुरुष" कहानी की नायिका–शिप्रा–एक अनाथ लड़की है। उसका बचपन अकेलेपन में बीता है। "वह अपने लिए, अपने अधिकारों के लिए लड़ती रही, जगह बनाती रही। जब होश आया तो लगा, बचपन की शोखी, और यौवन की चंचलता से लदे दिन आगे सरक चुके हैं। औरत के लिए पैंतीस वर्ष काफी होते हैं।"[8] बचपन से उसे कभी किसी सहारे, या मित्र की आवश्यकता नहीं लगी। लेकिन युवा होने पर अकेलापन उसे खलने लगा। "............और उसे लगता कोई तो बाजू से होता जिसके आंचल का कोना पकड़कर रात काट देते, पर सुबह उंगलियों में तकिए का कोना पकड़े देख मन रो-रो उठता।"[9]

शिप्रा जीवन भर तो पुरुष के साए से दूर रही। लेकिन एक दिन जिस प्रकार अचानक एक पक्का शराबी उसके कमरे में घुस आया, उसी सरलता से वह उसके मन में भी घुस आया। शिप्रा के बंधे-बंधाए जीवन में परिवर्तन आया। उसे अपना जीवन संवरता हुआ सा लगा। "आईने में अपने को निहारा तो लगा जैसे पहली बार आईना देखा है, जहाँ-तहाँ से लटकते गोश्त के लोथड़े बढ़ी हुई आयु की ओर संकेत दे रहे थे, तब लगा कि अपने लिए जगह बनाने में उम्र के वह कसे हुए दिन किन्हीं अंधेरों में उतर चुके हैं।"[10]

जीवन भर किसी पुरुष के सामने न झुकने वाली शिप्रा एक दिन नपुंसक पुरुष के सामने झुकती है। इस बात के लिए उसने कभी अपने उस नपुंसक प्रेमी को माफ नहीं किया। शिप्रा चाहती तो फिर से अपना जीवन आरम्भ कर सकती थी। लेकिन वह अपने जीवन के बाकी दिन अपने प्रथम प्रेम और प्रेमी की याद में बिताती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"टोना" कहानी की खोड़ी अपनी माता की इकलौती पुत्री है। खोड़ी के जन्म के विषय में उसकी माँ कहती है कि उसका कोई भी बच्चा जीवित नहीं रह पाता था। खोड़ी ने जन्म लिया तो उसे कूड़े-कचरे के ढेर में डाल दिया गया और फिर कचरे में पैसे डाल कर उसे कचरे से खरीद कर माँ की गोद में डाल दिया गया। काकी के अनुसार तभी वह बच्ची जीवित रह पाई।

माँ की तरह खोड़ी भी अंधविश्वास पालने वाली नारी है। उसे सदा शंका रहती है कि कहीं किसी ने उसकी नई साड़ी से सूत निकालकर या किसी अन्य ढंग से उस पर जादू-टोना तो नहीं किया।

उसके शरीर पर उसकी माँ ने गुदना-गुदवा दिया—पीठ पर गेंदा का फूल और बाहों पर सरसों के छोटे-छोटे फूल उतरवा दिए थे।

खोड़ी ब्याह के बाद भी मायके में रहती थी। माँ ने उसका दूसरा ब्याह तो करवा दिया था लेकिन पति के मन में शंका का बीज आ बैठा और अब खोड़ी जीवन भर पति की शंका का सामना करती रहेगी।

"सलाखों में फंसा आकाश" की लक्ष्मी का जीवन अपने तपेदिक के इलाज के लिए मिशन अस्पताल के बरामदे में घूमने तक ही सीमित रह गया है। वह अपने जीवन से पीड़ित है और सब छोड़कर कहीं चली जाना चाहती है। लेकिन संसार में ऐसी कोई जगह नहीं जिसे वह अपनी कह सके। वह चुपचाप सब सह लेती है लेकिन अपनी मां, पति से अपने अधिकार नहीं मांग पाती।

उसका बचपन भी बड़ा कठिन रहा है। "..........सहेलियों के नए फ्राकों के बीच अपना पुराना-फटा फ्राक उसे हमेशा दुख देता है।"[11] माता-पिता के झगड़े के बीच भी वही घसीटी जाती। "माँ बाबूजी का गुस्सा उतारने उसी को पीटा करती, कभी चप्पल से, कभी बेंत से, और वह सहमी-सहमी, रोते हुए सोचती रहती कि यह दुख, वेदना उसीके हिस्से में क्यों?"[12] घर के भीतर आते ही उसकी आत्मा काँप उठती। सुसराल में भी उसे स्नेह और सम्मान न मिला। माता-पिता, पति-सास सबने उसे अपने जीवन से भगाना चाहा।

"जीने की लालसा हरदम मन के किसी कोने में छटपटाती है पर थके जीवन की व्याकुलता नन्हीं जीने की आयु को और घटा नहीं देती?"[13] पति उसकी खबर ही नहीं लेता। माँ ने उसे ऐसे ग्रहण किया जैसे कोई अनचाही वस्तु को करता है। "पिछले पाँच सालों से खांसते-खांसते वह झुक-सी गई है। बड़ी-बड़ी पलकें बीमारी के बोझ से झुक-सी गई हैं।..........."[14]

उसकी भी अन्य लोगों की भांति भड़कीले वस्त्र पहनने और घूमने-फिरने की इच्छा होती है। लेकिन उसके गहने-कपड़े सास ले गई है। वह चाह कर भी माँ से माँ की बनारसी साड़ी नहीं मांग पाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लक्ष्मी ऐसी नारी है जो जीवन भर हर तरफ से असहाय हो चुकी है। उसके पास की कोई इच्छा, कोई सहारा नहीं है।

"जंगली हिरनी" में लच्छो गांव में रहने वाली एक युवती है, जो दिन भर जंगल से लकड़ी बटोर कर घर लाती है और शाम को खाना पकाती है। पूरे गांव में इतनी सफेद, चिट्टी और सुंदर कोई न था। "वह कितनी गोरी थी, कितनी सुंदर, भरा-भरा जिस्म।"[15] गांव के सब लोग समझते थे कि वह बुधु-पिता-की बेटी है। लेकिन उसकी माँ जानती थी कि वह एक गोरे साहब के माध्यम से उसके गर्भ में आई थी। तभी वह इतनी गोरी और सुंदर थी।

लच्छो बड़ी हुई तो विवाह करने का सपना उसके मन में घर कर गया। गांव में जब भी किसी लड़की की शादी होती, तो वह खूब नाचती और उसे अपने अविवाहित होने पर दुख होता। लेकिन उसे गांव के काले लड़के अच्छे ही नहीं लगते, शादी करे तो किससे करे?

उसकी सुरीली आवाज और उसका नाच गांव के शादी के अवसरों और मेलों की जान थी। मेले में देवी के आगे खूब ना कर उसने देवी से मनपसंद प्रियतम मांगा। उसकी यह इच्छा पूरी तो हो गई। उसे एक परदेसी सुन्दर प्रियतम मिला। सारी रात वह उसकी याद में सपने बुनती और दिन भर उसके साथ रहती। लेकिन वह उसे कुछ दिनों का प्यार देकर जीवन भर का दुख दे गया। परदेसी लच्छो के हृदय में प्यार का बीज बोकर और सारे वादे तोड़ कर शहर लौट गया। "लच्छो टूटे सपनों, टूटे अरमानों, बिखरे आँसुओं को झोली में समेटे रह गई।"[16]

"बंटवारे की फांस" की मंजू ऐसी नारी है जिसे भाग्य ने और बंटवारे ने दो पतियों के सामने बांटकर रख दिया। बाहर से वह एक सुलझी हुई नारी लगती है, जिसने पहले पति के दंगे में खो जाने के कारण दूसरा विवाह कर लिया और दूसरे पति को अपने अतीत के बारे में कुछ नहीं कहा। लेकिन भीतर से वह कोमल हृदय वाली असहाय नारी है जो पहले पति और उसके प्यार को जीवन भर नहीं भूल पाती। उसने फिर से असहाय और अकेली हो जाने के डर से दूसरे पति को अपने अतीत से परिचित नहीं कराया।

"वह उस नेकलेस को मोहन (दूसरा पति) से छुपाकर रखती, सीने से लगाती, चूमती और रोने लगती।"[17] वह नेकलेस उसे पहले पति ने उपहार दिया था। अपने पहले पति को अपने ही घर में मोहन के साथ देखकर मन छटपटाया। पुरानी मीठी स्मृतियाँ उसे तड़पाने लगी। वह पहले पति के पास लौट जाना चाहती थी। लेकिन मन मसोस कर रह जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) कथोपकथन

लेखिका ने कथोपकथन के माध्यम से पात्रों के चित्रण, कथा में प्रवाह लाने की सहायता ली है।

संवादों के माध्यम से लेखिका ने पात्रों की मानसिकता का चित्रण किया है–

"काकी कल मैंने एक सपना देखा है, तू चावल बिनकर देख तो, किसी ने टोना तो नहीं किया।"[18] यह पात्र अंधविश्वासी है, जिसे हर समय डर रहता है कि कहीं कोई जादू-टोना न करे।

ऐसे संवाद भी मिलते हैं जिनसे घर में चल रहे आर्थिक तनाव और उसके कारण पात्रों में उभरी खीझ का चित्रण होता है–

"माँ शक्कर डाल दूं?"

"नहीं, शक्कर मिल नहीं रही है, तुझे क्या,............"[19]

लेखिका ने अति संक्षिप्त संवादों का प्रयोग भी किया है। जैसे–

"क्या नाम है?" "...............................।"

"क्या नाम है?" वह गरजा। ".........में.......मेंगन।"

"................कहाँ रहती है?" "उधर",..................."..............चाय पिएगी?"

"............चाय"?

"हां, चाय".............[20]

औपचारिकता से भरे संवादों के भी कई उदाहरण मिलते हैं–

"बहुत अच्छी है", राकेश ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा।

"हाँ, तुम्हारी भाभी खूब चाय बनाती है।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं", राकेश ने सिर हिलाया"[21]

कई बार लेखिका ने ऐसे संवादों का प्रयोग किया है, जिनमें चिंतन पक्ष की प्रधानता होती है और वे सूक्ति वाक्य से लगते हैं। जैसे – "टूटा हुआ दिल, बीते हुए दिन, छूटा हुआ तीर और कही हुई बातें कभी नहीं लौटती, कभी नहीं लौटती, कभी नहीं पलटती,..........।"[22]

लेखिका ने अश्लील शब्दों से पूर्ण संवादो का भी प्रयोग किया है, जिसका उद्देश्य पात्रों के मानसिक चित्रण, रहन-सहन आदि का चित्रण करना रहा है–

"माय लुटी, हरामजादी, छिनाल, ठगती है?"[23]

"मायलोटीया ....ज्यादा नखरा न कर.......घर जा, वहाँ तेरी माँ बैठी है।"[24]

".................अब उस बाबू का बच्चा मेरे सिर मढ़ना चाहती है?? बोल, हरामजादी बोल........???"[25]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आलोच्य संग्रह के संवाद रोचक एक मनमोहक हैं और वे कहानी के कथ्य, चरित्रों आदि को स्पष्ट करने में सहायक हुए हैं।

(घ) कहानियों में चित्रित वातावरण

"ग़लत पुरुष" कहानी में एक नारी के अकेलेपन एवं मानसिक पीड़ा का वातावरण चित्रित है। जीवन के लम्बे समय के अकेलेपन के बाद जब नायिका ने किसी का सहारा लेना चाहा तो बदले में उसे उम्र भर की कसक और सीलन मिली। इसी कसक और सीलन भरे वातावरण का चित्रण कहानी में हुआ है।

कहानी में मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण हुआ है। परिवार में कई समस्याएं हैं– बड़ा बेटा शराबी और छोटा बेटा पागल है। नायिका स्वयं अनुभव करती है –"...........इस घर में, इस कमरे के पीछे कुछ है जो पीड़ा से भरा है।..........."[26]

"टोना" कहानी में निम्नवर्गीय परिवार का वातावरण मिलता है। काकी शराब बनाकर घर में ही गाँव के लोगों को बेचती है। इसके अतिरिक्त वह जादू टोना करके और उतरवाने अपना खर्चा निकालती है। "इस छोटे-से धनपुंजी गाँव में काकी जाने कब से कच्ची शराब बेचने का धन्धा करती थी।........."[27]

लेखिका ने निम्नवर्ग में पलने वाले अंधविश्वासों का उल्लेख किया है। जैसे विभिन्न ढंगों से किसी पर जादू करना, गुदना गुदवाना आदि। "गांव का पुजारी कहता है मरने के बाद भगवान के घर यही लेखा साथ जाता है, जिसके गोदना नहीं वह नरक भोगता है, यही देह का चिन्ह तो साथ जाए है। बिना गोदने वाली देह को कोई नहीं पूछता। सुरजनी ने तो जांघ पर जबसे गुदना उतरवाया है जाने कहाँ-कहाँ से ब्याह का न्यौता आया है।............"[28]

कहानी में खम्हार गांव में होने वाली पूजा और पूर बाली मेले का वातावरण चित्रित है। यह पूजा धान बोने से पहले की जाती है। पूजा डेढ़ महीने तक चलती है और फिर भी महादेव और कोदनी के ब्याह का समारोह होता है। भीमादेव की बारात गाँव से निकलती है। कुंआरी लड़कियों के नाच, देवी चढ़ी झूमती, गाती लड़कियों और मुकुट पहने पुजारी, डोली पर बैठे भीमदेव, अन्य लोगों और शहनाई-तबले की गूंज पूरे वातावरण को मस्त कर देती है। "बस्तर में दशहरे के रथ के पीछे गिरे फूल उठाकर ब्याह करने की रस्म है और दूसरा बाली के दिन ब्याह करते हैं, ऐसे अक्सर प्रेम विवाह होते हैं।....."[29] बकरे की बलि दी जाती है। सारे गाँव को एक बार खाना खिलाया जाता है। इस सब मेले की फिल्म उतारकर जगदलपुर के सरकारी सिनेमा पर दिखाई जाती है।

"सलाखों में फंसा आकाश" कहानी में भी निम्नवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। गृहस्वामी की छोटी सी नौकरी है जिस पर परिवार के सात-आठ प्राणी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पलते हैं। आर्थिक तनाव के कारण छोटे-बड़े सदस्य फटे-पुराने कपड़े पहनते हैं। बच्चे भी अपनी निर्धनता को समझते हुए नए कपड़ों के लिए ज़िद नहीं करते। "वह बाबूजी की चोरी से माँ के कहने पर उधार पैसे लाने जाती थी। घर का आधा खर्च उधार में चलता रहता।"[1]

पति-पत्नी के आपसी तनाव और झगड़ों के कारण घर का वातावरण तनावपूर्ण एवं घुटन भरा है। इस घुटन का अधिक शिकार उनकी संतान होती है। "घर के वातावरण ने कभी उसे पढ़ने नहीं दिया, हमेशा दुख की छाया सहमी-सहमी दीवारों पर चिपकी रहती, घर के दरवाजे में दाखिल होते हुए हमेशा उसकी आत्मा कांपती रहती, ..."[31]

"जंगली हिरनी" में निम्नवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। ढंग का मकान न होने के कारण घर के सारे सदस्य खुले आंगन में सोते है और सर्दी, जंगली जानवरों से बंचने के लिए आग जला कर रखते हैं।

लेखिका ने कहानी में गाँव के दियारी त्योहार का उल्लेख किया है, जो फसल काटने के बाद मनाया जाता है! "शाम को गाँव के मंदिर के सामने मेला-सा लगा था। लोग दंतेश्वरी देवी को अपनी धान की बालें और बकरे की बलि चढ़ा रहे थे।"[32] देवी के आगे कुछ औरतें-आदमी बाल खोलकर डोलते हैं, इन पर देवी चढ़ी होती है। शंख-घंटियों की आवाज, नाच-गीत, शराब से वातावरण मस्त होता है। लेखिका ने इस त्योहार में गाए जाने वाले एक गीत का उल्लेख भी किया है।–

"देवी बलें में दंतेसरी, देवी बलें में माता मावली,
बड़े देवी आस आय, तुई बड़े देवी आस।।
आव आया तुई करना कोटिन,
आव आया तुई करना कोटिन।
घुमरा विरेज़ कर आया तुई घुमरा बिजे कर।।"[33]

लेखिका ने गाँव के एक शादी के अवसर का वातावरण भी चित्रित किया है–आम की डालों पर मंडप बना कर उस पर हल्दी से चित्र बनाए जाते हैं। दुल्हन सजसंवर कर आती हैं और "उसके हाथ में एक लोटा था, जो हल्दी के पानी से भरा था। वह आगे आई और सामने खड़े दूल्हे पर डाल कर पीछे बैठ गई।"[34] समारोह में भाग लेने वाले "हो-हो" की ध्वनि मुँह से निकालते हैं। लेखिका ने विवाह-अवसर पर गाया जाने वाला गीत भी कहानी में दिया है।

"बंटवारे की फांस" कहानी में पाकिस्तान-हिन्दुस्तान के बंटवारे में हुए दंगे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का वातावरण चित्रित है। "चारों ओर बंटवारे की आग भड़क गई। सारे घर जल गए, सड़कें खून से नहा गई, बच्चे अनाथ हो गए, औरतें विधवा हो गई।"[35]

कहानी में एक भरे-पूरे घर का वातावरण चित्रित है, जहां घर की औरतें दिन भर घर के काम में जुटी रहती है। "सास, ननदों से भरे घर में वह छोटा-सा घूंघट निकाले काम करती।"[36] इसी घर की बहू बंटवारे के दंगे से पीड़ित है। इस बंटवारे ने उसके जीवन को बांट दिया है। "...........भगवान, मुझे इस देश के बंटवारे ने दो पति के सामने बांट कर रख दिया।.................."[37] कहानी में इसी पीड़ित नारी की मानसिक पीड़ा का चित्रण हुआ है।

(ड.) भाषा-शिल्प

आलोच्य संग्रह की कहानियाँ वर्णनात्मक पद्धति एवं पत्र शैली पद्धति में लिखी गई हैं, जिनमें समाज की विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। लेखिका ने "फ्लैश बैक पद्धति" का प्रयोग भी किया है।

जैसे-"ग़लत पुरुष", "जंगली हिरनी" कहानियों में।

लेखिका की भाषा में चित्रात्मकता भी मिलती है। ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहां कहानी की पंक्तियों को पढ़कर आंखों के आगे चित्र से खिचते हैं। उदाहरणार्थ -"उसका अंग-अंग नाच रहा था। ....वह देवी चढ़े लोगों के बीच से निकलती हुई देवी के चारों तरफ नाचने लगी। उसका जूड़ा खुल गया। पैर धूल में अट गए, फूलों की माला टूट-टूटकर पैरों से कुचल गई, मगर वह नाचती गई............"[38]

लेखिका ने काव्यात्मक एवं अलंकृत भाषा का भी प्रयोग किया है-"छोटी नगरनार के बाशाभोग छोटे चावल की तरह सुन्दर और महकने वाली थी।"[39]

लेखिका ने प्रकृति वर्णन करते हुए प्रकृति की तुलना नारी से की है। जैसे-"सागौन के घने जंगल के बीच से एक छोटी-सी पगडंडी गाँव की तरफ दूर तक ऐसी चली गई है, जैसे किसी नवयुवती के दो भागों में बंटे बालों के बीच की मांग।"[40]

कभी-कभी लेखिका गंभीर चिंतन प्रधान भाषा का प्रयोग करती है-"उसके जीवन की वही राह थी, दूसरों की राह में उतरना मूर्खता होती है न, दूसरों के घर में अपने लिए जगह ढूंढना कितनी बड़ी मूर्खता है।"[41]

लेखिका ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। जैसा पात्र वैसा ही भाषा प्रस्तुत की गई है। "अरे वह लाखन की बिटिया रही ना? वह मर गई, तोके नाही मालूम? बाघ खा गयो।" .... "का कहत हो दीदी।" "हाँ, री का झूठ थोरे ना बोलहूं।"[42]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ध्वन्यात्मक, तुकसाम्य एवं युगल शब्दावली

जाने-पहचाने, गोल-गोल, बिखरे-छितरे, वाद-विवाद, मकान-मालकिन, बंधा-बंधाया, सध और संयत, टुकड़े-टुकड़े,[43] जगह-जगह, गुदना-गुदाकर, मोगरी मछली, कटोरे पर कटोरा, कूड़े-कचरे, मच्छर-मार, खाना-पीना, डंडा-तुंबा, टोना-टटका, बार-बार बोलकर, महुए सी महकती, आस-औलाद, उलीच-उलीचकर, हर-हमेशा, जोर-शोर, झूम-झूमकर,[44] चूसर-चूसर, टुकर-टुकर, युवती-युवक, काला-कलूटा, छेड़-छाड़, घुल-मिल[45]।

आलोच्य संग्रह में कुछ ध्वनि सूचक शब्द भी मिलते हैं-"धक-धक"[46], "च्.........च्.........च्........ !, "हो-हो", "शह-शह"[47]।

लेखिका ने मुहावरों का प्रयोग भी किया है। जैसे – "रोंगटे खड़े होना"[48], "मन टूटना"[49]।

अलंकारों, सूक्ति वाक्यों आदि से लेखिका ने आलोच्य संग्रह की भाषा को और सौन्दर्यमय बनाया है।

(च) उद्देश्य

"ग़लत पुरुष" में लेखिका का उद्देश्य नारी मन की कोमलता को प्रस्तुत करना है कि वह जीवन भर एक ही पुरुष से प्यार कर सकती है चाहे वह पुरुष नपुंसक ही क्यों न हो। वह अपने प्रथम प्रेम को नहीं भूल पाती। कई बार तो वह अपना सारा जीवन उसी प्रथम प्रेम की मीठी-कड़वी यादों के सहारे बिताती है। इसी प्रकार "जंगली हिरनी" में भी एक युवती के यौवन की प्रथम हार को दिखाया है। वह प्रेम में मस्त सपने बुनती थी और मोहभंग होने पर उसका जीवन सुनसान एंव वीरान हो जाता है। पुरुष बड़ी आसानी से नारी को झूठे प्यार में उलझाकर चला जाता है। पुरुष के लिए यह छोटी सी बात है जबकि नारी के लिए जीवन भर की हार और दुःख होता है। नारी प्रौढ़ हो या बालिका वह अपनी यह हार सहन नहीं कर पाती। "टोना" कहानी में पुरुष की आशंका और शक का चित्रण हुआ है, जो छोटी सी बात से उभरता है और नारी का जीवन नष्ट कर देता है। विवश नारी के पास अपने निर्दोष होने का कोई सबूत नहीं होता। पुरुष स्वतंत्र है। वह कई दिन घर से बाहर रह सकता है। उसे कभी पत्नी किसी भी बात का कारण नहीं पूछ सकती। लेकिन पुरुष नारी पर कई बंधन एवं नियंत्रण लगाता है। और यदि उसके हृदय में शक बैठ गया, तो फिर उम्र भर नहीं जाता। "सलाखों में फंसा आकाश" में भी एक नारी को विवशता का चित्रण हुआ है। घर वाले उसे बांझ समझकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पालते हैं और उसका विवाह करके अपना बांझ उतार देते हैं। नारी भी ससुराल के लोगों, वहाँ की दीवारों में इतना रम जाती है कि उसी को अपनी मंजिल समझती है। लेकिन वहाँ भी उसे अपनापन नहीं मिलता। सास सारे गहने, कपड़े ले जाती है और पति बड़ी सहजता से उसे मायके छोड़ जाता है। नारी को बेसहारा बनाने वालों में अधिक हाथ नारी का ही होता है—सास, ननद, माँ के रूप में। ब्याही लड़की घर बैठे तो हो वह माँ की आंखों में भी खटकती हैं अपने जीवन से नारी इतना तंग आती है कि वह मुक्त होना चाहती है, चाहे मर कर ही सही।

"बंटवारे की फांस" में लेखिका ने पाकिस्तान-हिन्दुस्तान के बंटवारे से पीड़ित लोगों की समस्या को उभारा है। इस बंटवारे के कारण कई लोगों के घर उजड़ गए, बच्चे अनाथ हुए और औरतें विधवा हुई। लोग घर से बेघर हो गए, ऐसे भी कई लोग हैं जिनका जीवन भी दो देशों में बंट गया। और इस बंटवारे के कारण उनका जीवन दु:खी है।

आलोच्य संग्रह की कहानियाँ नारी से सम्बंधित होने के अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक तनाव, चरित्रहीनता आदि पर भी आधारित है।

संदर्भ

1. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "ग़लत पुरुष", पृ॰ 123, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
2. वही-वही-वही, पृ॰ 131.
3. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "टोना", पृ॰ 12, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
4. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "सलाखों में फंसा आकाश", पृ॰ 51, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
5. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "जंगली हिरनी", पृ॰ 96, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
6. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "जंगली हिरनी", पृ॰ 93, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
7. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "बंटवारे की फांस", पृ॰ 113, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
8. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "गलत पुरुष", पृ॰ 123, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
9. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 124.
10. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 126.
11. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "सलाखों में फंसा आकाश", पृ॰ 50, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12. वही, पृ॰ 50.
13. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "सलाखों में फंसा आकाश", पृ॰ 52, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
14. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 50.
15. वही, वही संग्रह - कहानी "जंगली हिरनी, पृ॰ 95.
16. वही, पृ॰ 99.
17. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "बंटवारे की फांस" पृ॰ 114, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
18. वही, वही संग्रह - कहानी "टोना", पृ॰ 4.
19. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "सलाखों में फंसा आकाश", पृ॰ 53, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
20. वही, वही संग्रह - कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 95.
21. वही, वही संग्रह - कहानी "बंटवारे की फांस", पृ॰ 110.
22. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "ग़लत पुरुष" पृ॰ 127, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977
23. वही, "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 96, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
24. वही, वही संग्रह - कहानी "टोना", पृ॰ 6.
25. वही, वही संग्रह - वही, पृ॰ 12.
26. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "ग़लत पुरुष", पृ॰ 124, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
27. वही, वही संग्रह - कहानी "टोना" पृ॰ 6
28. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "टोना", पृ॰ 1, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
29. वही, पृ॰ 9.
30. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "सलाखों में फंसा आकाश", पृ॰ 50, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
31. वही, पृ॰ 50.
32. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 97, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
33. वही, पृ॰ 97.
34. वही, पृ॰ 94.
35. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "बंटवारे की फांस" पृ॰ 113, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
36. वही, पृ॰ 112.
37. वही, पृ॰ 114.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

38. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 98, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
39. वही, वही संग्रह - कहानी "टोना", पृ॰ 7.
40. वही, वही संग्रह - कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 92.
41. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "ग़लत पुरुष", पृ॰ 129, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
42. वही, वही संग्रह - कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 93.
43. मेहरुन्निसा परवेज़ - "ग़लत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी "ग़लत पुरुष", पृ॰ 112, 125, 126, 128, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1977.
44. वही..............कहानी "टोना", पृ॰ 1 से 9 तक।
45. वही..............कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 92, 94, 97.
46. वही..............कहानी "टोना", पृ॰ 1.
47. वही..............कहानी "जंगली हिरनी", पृ॰ 93, 94.
48. वही..............कहानी, "टोना", पृ॰ 8.
49. वही..............कहानी "सलाखों में फंसा आकाश", पृ॰ 49.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चतुर्थ अध्याय

"अंतिम चढ़ाई" की कहानियों का मूल्यांकन

"अंतिम चढ़ाई" नामक कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष 1982 में हुआ है। संग्रह की प्रमुख कहानी "अंतिम चढ़ाई" में माला के ममता भरे हृदय का अपमान होता है। इससे उसका जीवन कठोर न होकर सरल होता है। क्योंकि इससे उसके जीवन के वर्तमान पर पड़ी अतीत की छाप पूर्ण रूप से हटती है। "बूँद का हक" की नायिका को ससुराल और दोनों मायका जगहों से अपमान और समाज की चोट करती, शक्की निगाहों का सामना करना पड़ता है। विवश होकर वह अपने स्वाभिमान को मार कर पति के साथ रहना ही स्वीकार करती है। "गुरुमंत्र" की नायिका अनपढ़, फूहड़ होते हुए भी अपने अस्तित्व को बनाए रखने का ढंग जानती है। यही गुरुमंत्र वह अपनी सौतेली बेटी को भी देती है कि नारी को अपने से कम अच्छे पुरुष से विवाह करना चाहिए, तभी वह अपना शासन घर पर चला सकती है। "जमाना बदल गया है"–इस संग्रह में भिन्न विषय पर आधारित कहानी है। इसमें नई पीढ़ी की बुराईयों और आपसी रिश्तों में तनाव का चित्रण हुआ है। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के रहन-सहन, मानसिकता का अंतर इस कथा में स्पष्ट दिखाया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में बदलते मूल्यों, परिस्थितियों और बदलते जमाने का चित्रण भी लेखिका ने किया है।

लेखिका ने संग्रह में खोखले समाज और उसमें छटपटाती नारी का चित्रण किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) कहानियों का कथन

"अंतिम चढ़ाई" में माला और जितेन का पति-पत्नी का सम्बंध घृणा में बदल जाता है और बात अलगाव तक पहुँची। अलगाव होने पर जितेन अपने पुत्र-रुपेश-को देने से इन्कार करता है। माला भी जानती थी कि जितेन के पास ही उसके बेटे का ठीक पालन-पोषण होगा। माला ने तो घर तो छोड़ दिया किन्तु उसकी ममता पुत्र के लिए छटपटाती रही। "जितेन, रुपेश को लेकर उसकी कमजोरी को जानता था। उसने उसके माध्यम से अपनी सारी दुश्मनी निकाली। कभी उसे रुपेश से मिलने नहीं दिया और नन्हें रुपेश के नन्हें से दिमाग में उसके खिलाफ कई बातें भरी, उसे बदचलन घोषित किया, यह दुःख सजा के रूप में, उसके लिए, एक औरत के लिए बहुत बड़ा था।"[1]

जीवन के अकेलेपन से तंग आकर माला ने रितेश से विवाह किया। वर्षों बाद जब बेटे ने पत्र में अपने आने के समाचार के साथ अपनी तस्वीर भेजी तो वह निहाल हो गई। माला ने सारा घर सजाया। लेकिन बेटे का स्टेशन पर औपचारिक ढंग से मिलकर माला और रितेश को मैच देखने के लिए आमंत्रित करके बाकी लड़कों के साथ चला जाना माला को बुरा लगता है। माला की सारी तैयारियाँ धरी की धरी रह जातीं हैं। इतने वर्षों से मन पल रही ममता को ठेस लगी और वह अपने आंसुओं को रोक नहीं सकी। आज उसके अतीत के उतार-चढ़ाव की यह अंतिम चढ़ाई थी। आज अतीत से उसका सम्बन्ध टूट गया। अब यह केवल वर्तमान में जी सकेगी।

"बूँद का हक" की नायिका आर्थिक दृष्टि से अपने पति पर आश्रित है। घर खर्च के पैसे भी उसे पति से बार-बार भीख की तरह मांगने पड़ते हैं। अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को तो उसने मार लिया था। घर का सामान मांगने पर भी पति ने जब उसका अपमान किया तो वह मायके चली जाती है। किन्तु ससुराल से अधिक अपमान और कष्ट उसे मायके में ही मिला। माँ, भैया भाभी मिलकर उसे वापस ससुराल भेजने पर तुले थे। जब पति ने उसे पत्र भेजा कि वह उसे लेने आ रहा है तो उसने मायके से तंग आकर पति के साथ जाने का निर्णय किया। पिता ने उसे हारे मन से जाने की अनुमति दी, जबकि वह जानते थे कि वह वहाँ खुश नहीं रह सकती और वह मन से नहीं जाना चाहती। विवश होकर पिता ने कहा "........जब तू इन खूँखार भेड़ियों के बीच रह सकती है तो वहाँ भी रह सकती है।"[2] महीनों बाद पति से स्टेशन पर मिलने पर भी दोनों ने कोई बात न की। उसे लगा कि इस भीड़ में भी वह अकेली है। उसे "यह अहसास नहीं भूलता कि उसने अपने लिए कुछ....कुछ नहीं। इनमें से एक बूँद पर भी उसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हक नहीं।......."[3] उस भीड़ में उसकी बेटी रेनू भी उससे दूर हो रही थी। लेकिन उसने अपनी ममता से उसे फिर पा लिया। अपने जीवन से समझौता करके अपनी सारी ममता बेटी पर निछावर की।

"गुरुमंत्र" कहानी में बेलती, मूँगा और सुकरी की माता की मृत्यु के बाद उनका शराबी पिता दूसरी पत्नी को घर लाता है। तीनों बहनों ने सौतेली माँ को मौसी नाम दिया। धीरे-धीरे सारे घर पर मौसी का राज हुआ। घर से आने वाले गृहस्वामी को नहीं, मौसी को ही पूछते। बड़ी लड़की बेलती भात खाने के समय पेड़ से मिच तोड़ती तो मौसी रंगे हाथों पकड़ डाँटती। तंग आकर बेलती रेलवे के एक मजदूर के साथ घर छोड़ कर भाग गई, जहाँ वह भी मजदूरी करती थी।

मूँगा की सगाई कोतवाल के शराबी और बड़ी उम्र के लड़के से कर दी गई। लेकिन मूँगा ने उससे विवाह करने से इंकार किया। मौसी ने उसे धमका कर, पुचकार कर समझाया और एक गुरु की भाँति एक गुरुमंत्र दिया, जिसे उसने स्वयं अपने जीवन में भी अपनाया था, "मूँगा, अपने से अच्छे मर्द से ब्याह नहीं करना चाहिए, अपनी बात नहीं रहती। अपने से कम अच्छे मरद से ब्याह करने से औरत राज करती है, राज। जैसा चाहे मरद को नचा सकती है समझी।"[4] ऐसा सुनकर मूँगा चुप हो गई।

"जमाना बदल गया है" में लेखिका ने दो पीढ़ियों, दो युगों के अंतर और परिवर्तन को दिखाया है। पहले जिस घर में हर काम नियम से होता था, परिवार के सब सदस्य अनुशासन में रहते थे और बड़ों की बात को आदेश मानते थे, आज इसी परिवार में हर सदस्य अपनी इच्छानुसार चलता है। जो बुजुर्ग पहले हर काम नियम से करते और करवाते थे, आज वही नियमों का उल्लंघन होते देखकर भी चुप रह जाते हैं। यही सोचते हैं कि जमाना बदल गया है।

नाना जमींदारनी बहू कहलाती है। पति की मृत्यु के बाद वह स्वयं जमींदारी संभालती है और अपनी अकेली पुत्री के लिए घर जमाई लाकर उसे वकालत पढ़ा कर वकील बनाया। वकील साहब-दामाद-का एक बेटा-रज्जन और तीन बेटियाँ—कुसुम, सीमा, शालू हुई। वे रज्जन को अपनी तरह वकील बनाना चाहते थे, लेकिन वह अफसर होकर विदेश में रहने लगा। बेटियों की भी शादी हो गई तो सारा घर सूना हो गया।

आज वर्षों बाद फिर से घर में सब इकट्ठे हो गए हैं, जब नानी की मृत्यु हो हुई। सीमा के ब्याह में सब आए थे और फिर आज जमा हुए जब सीमा तीन बच्चों की माँ हो गई है। रज्जन तो सीमा के ब्याह पर भी नहीं आया था। शालू को पहले और आज के नियमों और बुजुर्गों के व्यवहार में परिवर्तन देखकर आश्चर्य होता है। आज सुबह बाबूजी उठे तो सबको देखकर चुपचाप पूजा करने लगे। पहले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का समय होता तो प्रसाद लेने के समय सबको उपस्थित न देखकर चिल्लाते थे। मौसी भी अकेली पूजा करती है। पहले घंटी की आवाज सुनकर ही सब अपने काम छोड़कर दौड़े चले आते थे, वरना खैर न थी। रज्जन की माँ को आश्चर्य और दु:ख हुआ कि बहू न तो पति के लिए करवा चौथ का व्रत रखती है और न बेटों के लिए हर छठ का व्रत रखती है। माँ ने अभी तक पोतों को देखा ही नहीं क्योंकि उन्हें कॉन्वेंट स्कूल में छुट्टी नहीं मिलती। ओर वे गाँव नहीं आ पाते।

सब अलग-अलग ताँगों में चले गए। किसी को पता नहीं, फिर कब मिलेंगे। पहले हर त्यौहार पर जब घर आते थे, चाहे नदी में बाढ़ होने के कारण उन्हें कच्चे रास्ते से ही क्यों न हो आना पड़ता था। अब पक्की सड़के हैं, नदी पर मजबूत पुल है, बसें और ट्रेन भी गाँव तक आती है। लेकिन कोई घर नहीं आता क्योंकि "जमाना बदल गया है"।

(ख) प्रमुख पात्र

"अंतिम चढ़ाई" की माला एक आधुनिक शिक्षित नारी है किन्तु उसकी समस्या वही सदियों पुरानी है। वह अपनी समस्या के साथ समझौता न करके संघर्ष करती है। पति से उसे प्यार और सम्मान न मिलकर घृणा और उलाहने ही मिले तो उसने अलग होना ही उचित समझा। वह नहीं चाहती थी कि उसका पांच साल का पुत्र भी उसके साथ दुनिया की ठोकरें खाता फिरे इसलिए वह अपनी ममता पर पत्थर रखकर उसे पिता के पास ही छोड़ आई। माला रुढ़ियों को नहीं मानती। अकेले ही असहाय होकर उसे तिल-तिल कर जीना स्वीकार नहीं। वह रितेश से विवाह करती है उसे प्यार, सम्मान तो मिला लेकिन सन्तान प्राप्ति न हुई। उसकी ममता सन्तान के लिए छटपटाती रही और पहले पुत्र से मिलने की तड़प और टीस उसके हृदय को उम्र भर तड़पाती रही।

माला एक स्वाभिमानी नारी है जो अपमान और उपेक्षा नहीं सह सकती। पहले पति का घर छोड़ने से पहले उसने कुछ गहने ले लिए थे ताकि उनको बेच कर गुजारा कर ले, जब तक कि नौकरी मिले। जब उसे पता चला कि पति ने उसे गहने लेकर भाग जाने का आरोप लगाया है तो उसे खुद से घृणा हुई। उसे लगा कि उससे अच्छा था कि वह भीख मांगती पर वह कुछ गहने भी वहीं छोड़ती।

वर्षों बाद उसका जवान बेटा उससे मिलने आया और उसके ममता भरे हृदय को चूर-चूर करके चला गया। इसी पुत्र के कारण उसका सम्बंध अतीत से बराबर बना रहा था। लेकिन बेटे की उपेक्षा ने उसे इस अतीत की छाप से मुक्त कर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बूँद का हक" की नायिका भी अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए छटपटाती है। पढ़ी-लिखी और समझदार होते हुए भी वह आर्थिक दृष्टि से अपने पति पर निर्भर है। अपनी निजी आवश्यकताओं और इच्छाओं को उसने मार लिया था। "मन को उसने धमका-धमका कर बेजान पत्थर-सा बना दिया था, जिसमें अब कोई इच्छा पैदा नहीं होती थीं।"[5] उसने बाकी स्त्रियों की भांति मनपसन्द चीजें लेना, पति से पैसे मांगना छोड़ दिया है। यह उसका स्वाभिमान ही है कि "रोज अपनी आवश्यकताओं को लेकर पति के आगे जाना, उसे भीख मांगना सा लगता था।"[6] घर का सामान मांगने पर भी पति ने जब उसकी नाक पर रजिस्टर दे मारा तो वह इस अपमान को न सह सकी और मायके चली आई। किन्तु मायके में भी उसे कष्ट ही मिला। माँ अपनी बातों से उसके जले पर नमक छिड़कने लगी, भैया ने अपनी बदनामी का वास्ता दिया और उसके हाव-भाव पर तो भाभी की कड़ी नज़र रहती थी। पिता ने विवश होकर उसे पति के घर लौटाने को कहा। वह भी मायके की अशांति और वृद्ध पिता के अपमान का कारण नहीं बनना चाहती थी। वह अपने जीवन से हारकर अपने पति से समझौता करने के लिए विवश हो गई। "वीरानी उसकी जिन्दगी में कुछ इस कदर हमसफर बन गई थी कि वह जहाँ जाती उसे लगता हंसता-फूलता गुलिस्तां भी वीरान हो गया है।"[7]

"गुरुमंत्र" की नायिका मौसी है जो अपनी सौतेली पुत्री को अपने से कम अच्छे पुरुष से विवाह करने का गुरुमंत्र देती है। उसने स्वयं भी अपने जीवन में इसी मंत्र को अपनाया था।

वह उमरगाँव के सुखदेव नाकेदार की लड़की है। उसका पहला पति उसे छोड़कर चला गया और दूसरा विवाह उसने तीन बेटियों वाले शराबी रिक्शा वाले से किया। अपनी बात मनवाने और अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए ही ऐसे शराबी पुरुष से विवाह किया। मौसी घर की औरत न होकर मानो पुरुष थी। "........घर आए पटवारी काका, तूसा सेठ, लकमू दर्जी के साथ बैठकर बीड़ी पी लेती थी।......"[8] वह पुरुष की तरह नशा करती और शराब बीड़ी पीती थी। सौतेली माँ होते हुए भी उसे तीनों बेटियों से पूरी सहानुभूति थी। पिता जब नशे में उन लड़कियो को पीटने दौड़ता तो "मौसी तीनों को मुर्गी की तरह कोठरी में ढांप देती और कपाट के आगे खड़ी हो जाती।"[9] घर में कई लोगों का आना जाना था किन्तु, उसे बेटियों की आन की पूरी चिन्ता रहती। तूसा सेठ जब ओसारे में बैठा अन्दर झाँकता तो वह झट उसे डाँट देती, कहती–"खबरदार ! मेरे घर लड़कियाँ हैं, उधर आँख उठाकर देखा भी तो तेरा भुरता बना दूंगी।"[10]

इस प्रकार सौतेली माँ होते हुए भी वह माँ के कर्त्तव्यों का पालन करती है। मौसी निम्नवर्ग की स्त्री होते हुए भी अपने सम्मान को बनाए रखने का मंत्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जानती है। भले ही उसका पति शराबी और नालायक है लेकिन वह घर की मालकिन है। हर निर्णय स्वयं ले सकती है, घर पर अपना शासन चला सकती है।

"जमाना बदल गया है" की नानी माँ पुरानी पीढ़ी की प्रतिनिधि पात्र है, जिसका जीवन महल के वैभव पूर्ण वातावरण में बीता है। बचपन में उन्हें पढ़ाने के लिए अध्यापिका घर आती थी और गवर्नेस भी रखी गई थी। उन्होंने पति की मृत्यु के बाद सारी जमींदारी मजबूती से संभाली और घर को बनाए रखने के लिए घर दामाद लाई।

शांतिप्रिय होने के कारण वह घर के आखिरी हिस्से के कमरे में रहती है। "झुरियों से भरा सफेद चेहरा था, गाल लाल-लाल अंगारे से दहकते रहते थे। छोटे कद की थी नानी माँ। दिन भर बिस्तर पर पड़ी रहती। शाम को उसकी खास नौकरानी-उमा-उन्हें बगीचे में टहलाने ले जाया करती।......."[11] तेज रोशनी से आँखे दुखने के कारण उनकी आँखों पर काली पट्टी बंधी रहती है। फिर भी वह फूलों की गंध आदि से मौसम का अंदाजा लगा लेती थी। पहले उनकी आँखें ठीक थीं।

नानी माँ एक दयालु महिला है। उनके हृदय में ममता कूट-कूट कर भरी है। वह अपने नौकर-नौकरानियों से माँ जैसा व्यवहार करती है। सारे नौकर शाम को घर के भंडारघर से अपने लिए अनाज ले जाते थे। अनाथ और असहाय जगरिया बाई, जो अपाहिज और दुर्बल है, पर हर दिन आकर इस घर के भंडार से अनाज ले जाती है जबकि वह नानी माँ की नौकरानी नहीं है।

नई पीढ़ी की निश्चिन्तता और स्वतंत्रता देखकर वह हैरान होती है और बच्चों को घर के नियम समझाती है। वह एक दृढ़नारी है जिसने जीवन भर अपने घर को अकेले संभाले रखा।

(ग) कथोपकथन

कथोपकथन या संवादों का प्रयोग मुख्यतः दो उद्देश्यों से किया जाता है, एक तो मूल कथा का विकास करने के लिए और दूसरा पात्रों का चरित्र चित्रण करने के लिए।

लेखिका ने संवादों के माध्यम से पात्रों की आंतरिक भावनाओं का चित्रण किया है। जैसे इस संवाद के माध्यम से माँ के हृदय की जिज्ञासा, कौतुहल और प्यार एक साथ झलकता है। जैसे – "तुम....तुम रुपेश हो न?"[12] इस संवाद से पाठकों के सामने एक व्याकुल माँ, जो अपने पुत्र को देखने के लिए अधीर है और अपने बेटे को आँखों के सामने देखकर विश्वास नहीं कर पा रही, का चित्र खिंच जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखिका ने माँ-बेटे के खोखले सम्बंध को उनके बीच हुए औपचारिक वार्तालाप के माध्यम से प्रस्तुत किया है–

"एक्सक्यूज भी, आप ही माला भारद्वाज हैं?"

"हाँ बेटा, मैं ही माला भारद्वाज हूं", रूपेश के बोलने के ढंग से उसे (माँ को) धक्का लगा।"[13]

इसी प्रकार एक और उदाहरण प्रस्तुत है, जहाँ लेखिका ने संवादों के माध्यम से चित्र खींचे हैं। इन वाक्यों से मानों पूरे घर का वातावरण एवं स्थिति उजागर होती है। "मम्मी, क्या तुम बुरी हो?"

"क्यों" उसका दिल धक्-सा रह गया।

"दादी, पापा, बुआ सब कहते हैं, तुम बहुत बुरी हो, इसलिए तुम चली गयी।" रेनू ने नाक खुजाई, "दादी बोलती है, तुमसे नहीं बोलना चाहिए।"[14]

लेखिका ने मात्र एक संवाद से सारी समाज की स्थिति का चित्रण किया है। एक माँ दुनिया के डर से बेटी को मायके में न रहने देकर नरक जैसे ससुराल लौट जाने को कहती है–"नहीं, उससे कह दो–वह वापस राहुल (पति) के घर लौट जाये। शादी–शुदा लड़की का घर बैठना क्या अच्छी बात है?" माँ ने गुस्से से तनतनाते हुए कलाई में पड़ी चूड़ियों को कसते हुए कहा, "कैसे बाप हो तुम, लड़की को घर पर बैठाकर नाक नीची करवाओगे? दुनिया क्या कहेगी?"[15]

लेखिका ने एक बच्चे के सम्वादों के माध्यम से उस बच्चे के जीवन की रूपरेखा खींच दी है। कठिन जीवन होते हुए भी वह बच्चा आसानी से जी रहा है और कठोर से कठोर बात भी निश्चिन्तता से कहता है–

"क्या काम करता है?" "कुछ नहीं।"

उसने सपाट-सा उत्तर दिया। "कहां रहता है, तेरा घर कहां है?" "बाप मर गया और माँ दूसरा आदमी बनाकर चली गयी।" उसने इतमीनान से केला खाते हुए उत्तर दिया। उसके उत्तर पर उसे हंसी आयी। "तुमसे क्या बोली?" "बोली, मैं खाना मांगने जा रही हूं और भाग गयी। मैं रात तक उसका रास्ता देखता रहा, फिर दूसरे दिन से खुद मांगकर खाने लगा। जहाँ भी उस जगह मिलती है, सो जाता हूँ।"[16] यह कथोपकथन का सुन्दर उदाहरण है।

लेखिका ने पात्रों के चरित्रों के अनुसार उनके संवादों में अश्लील शब्दों का प्रयोग किया है–"हरामजादी पूसी टांग फैलाकर सोती है।......."[17]

"कुतिया पीकर सुध खो देती है।"[18]

"हरामी, अरे मेरे लिए लकड़ी तू पहुंचायेगा !"[19]

लेखिका ने बहुत ही छोटे और अर्थपूर्ण वाक्यों का प्रयोग किया है, जो स्वाभाविक एवं रोचक हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(घ) कहानियों में चित्रित वातावरण

कहानी में वातावरण का चित्रण मुख्य रूप से दो प्रकार से किया जाता है–आन्तरिक वातावरण और बाह्य वातावरण। आन्तरिक वातावरण के अन्तर्गत पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण, पात्रों के हाव-भाव और अन्तर्द्वन्द्व आदि और बाह्य वातावरण के अन्तर्गत-स्थान, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों आदि का चित्रण होता है।

कहानी में आधुनिक समाज में रहने वाले मध्यमवर्गीय परिवार का चित्रण हुआ है–"रितेश रिटायर होते हुए तो उन लोगों ने अपने फार्म पर बंगला बना लिया, छोटा-सा कांटेजनुमा बंगला। नौकरों के साथ दोनों अपने बगीचे को सजाते-संवारते रहते हैं।"[20]

जीवन से हारी, थकी एक आधुनिक नारी के मानसिक तनाव, जीने की चाह, मन को स्वयं मनाने की क्रिया के चित्रण का उदाहरण दृष्टव्य है–"जीवन की डोर हमेशा उसके हाथ से छिटक जाती है और वह आँखों में आँसू लिए छिटकी डोर को फिर-फिर लपेटने की कोशिश करती, मन जिद्दी बच्चे-सा ऐंठकर बैठ जाता और पीछे दौड़ना चाहता और वह ऊंगली पकड़े उसे आगे ही राह दिखा देती, पर शायद कोई सोच भी नहीं सकता, इस सारी क्रियाओं में वह कितना थक जाती, कितना टूट जाती थी।"[21]

एक माँ की बेटे के लिए तड़प, ममता, स्नेह, परेशानी, दु:ख, प्रसन्नता के वातावरण को लेखिका ने पूरी "अन्तिम चढ़ाई" कहानी चित्रित किया है। लेखिका ने एक माँ के हृदय को साफ आईने के समान प्रस्तुत किया है।

"बूँद का हक" नामक कहानी में निम्न मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। आर्थिक अभाव के कारण पत्नी को कष्ट उठाना पड़ता है। घर के सामान के लिए भी गृहस्वामिनी को बार-बार कहना पड़ता है।

बेटी के ससुराल छोड़कर मायके चले जाने पर घर के सदस्यों में कैसी हलचल मचती है, उसका चित्रण लेखिका ने किया है। इससे पात्रों की मानसिकता का चित्रण हुआ है। "माँ ने उससे बोलना छोड़ दिया था, जैसे उनके पास बोलने के के लिए कुछ नहीं था, एक शब्द नहीं। भैया के लिए वह एक समस्या बन गई थी। उनके कहे अनुसार उसके कारण उनके दोस्तों में, समाज में, उनकी बदनामी हो रही थी।"[22]

लेखिका ने समाज में नारी स्थिति का चित्रण किया है। उसे मायके और ससुराल दोनों जगहों पर अपमान मिलता है।

"गुरुमंत्र" में लेखिका ने आर्थिक अभाव से ग्रस्त निम्नवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित किया है। निम्नवर्गीय रहन-सहन और घर के वातावरण का एक उदाहरण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृष्टव्य है–"महुए की शराब की गन्ध सारे घर में भरी थीं। चूहे झूठे दोनों को चाट-चाट कर भाग रहे थे। छत के बांस से घड़घड़ाता मोटा चूहा उतरता दिखा।......"[23]

निम्न जातियों और गाँवों में सगाई, विवाह के अवसर पर लड़के वाले ही लड़की वालों को धन देते हैं। उस रीति का उदाहरण "गुरुमंत्र" कहानी में भी मिलता है।

छोटे बच्चे के शव को जलाया नहीं जाता बल्कि दफन किया जाता है। इस प्रथा का उल्लेख लेखिका ने भी किया है। "साल डेढ़ साल तक के बच्चे को बाड़े के अंदर पेड़ की छाँव में ही गाड़ देते हैं।"[24]

"गुरुमंत्र" कहानी में भी लेखिका ने उस समाज का चित्रण किया है जहाँ लड़की को तुच्छ माना जाता है। इसका कारण यह भी है कि माता-पिता पुत्र को अपने बुढ़ापे का सहारा और कुलदीपक मानते हैं।

लेखिका ने एक पिछड़े और अविकसित गाँव का वातावरण प्रस्तुत किया है, जहाँ अभी तक रेलगाड़ी नहीं आई थी और गाँव में रेल के लिए पटरी डाली जा रही थी। ".......रेल देखने की सबको खुशी थी। गाँव-गाँव खबर फैल चुकी थी और एक दिन रेल घड़घड़ाती आयी।"[25]

"जमाना बदल गया है" नामक कहानी में लेखिका ने गाँव के जमींदार के घर का चित्रण किया है–"बहुत बड़ा हालनुमा कमरा था नानी माँ का। ....बड़ा सा नक्काशीदार पलंग था जिस पर पीतल की मूठ लगी थी। पहले इस पर मखमल की झालर वाली चादर बिछी रहती थी, पर अब सादा चादर बिछी थी। बड़ी-बड़ी शीशे लगी अलमारियां थीं। दीवारों पर आदमकद तस्वीरें लगी थीं।........"[26] इस प्रकार लेखिका ने उच्च वर्ग के महल जैसे मकान का चित्र खींचा है।

घर का वातावरण वर्षों से एक सा होते हुए भी पात्र को पहले और अब के वातावरण में अंतर लगता है। क्योंकि परिवर्तन पात्रों की भावनाओं में आता है–"कमरे बरसों से ज्यों के त्यों थे। हर चीज वही। ....कमरे में घुसते ही बरसों पहले की स्मृति ने उसे कुरेद-सा दिया। तब यह कमरा कितना भला लगता था।........."[27]

हिन्दू वर्ग में एक प्रथा है कि किसी लड़की की शादी हो तो लड़की की माँ अपने भाई के पास भात मांगने जाती है और फिर वह दुल्हन के लिए कपड़े, गहने आदि लेकर भात लाते हैं। लेखिका ने इसी प्रथा का उल्लेख करते हुए दो पीढ़ियों के अंतर को स्पष्ट दिखाया है जैसे – "कुसुम दीदी की शादी लगी थी तब माँ पर्दे लगी बड़ी-सी बैलगाड़ी में बैठ कर उसे साथ ले बताशे की थाल लिये दूर के मामा के यहाँ भात मांगने गयी थीं। शादी के समय मामा आये थे, धूमधाम से भात लेकर। बाहर ड्योढ़ी पर ही मामा को रोक लिया गया था। माँ औरतों के साथ मंगलगान गाती हुई भाई को लिवाने बाहर आयी थीं। दोनों भाई-बहन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को एक-एक पीढ़े पर खड़ा कर दिया गया था। दोनों ने एक दूसरे को तिलक लगाया, बताशा खिलाया, फिर मामा ने माँ के पैर छुए, फिर वह अंदर आये।"[28] लेकिन आज के युग में मामा पैसा बचाने के लालच में भात नहीं ले जाता और बहन भी भाई से भात मांग कर छोटा नहीं बनना चाहती। भाई तो कहता है कि वह तभी बहन की लड़की की शादी में दावत पर जाएगा, जब बहन स्वयं उसे बुलाने आए। इस प्रकार लेखिका ने नई पीढ़ी के सम्बन्धों के खोखलेपन को स्पष्ट रूप से दिखाया है।

(ड.) भाषा-शिल्प

लेखिका ने सरल, सहज एवं स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह में लेखिका ने वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया है और कहानियों की घटनाएं मिश्रित रूप से चलती हैं।

भाषा का प्रयोग मानवीय भावों, विचारों की अभिव्यक्ति के लिए होता है। साहित्य भी मानवीय भावों की ही अभिव्यक्ति होता है। लेखिका ने थोड़े से शब्दों में पात्रों की बाह्य गतिविधियों के अतिरिक्त उनके भीतर उठते-गिरते भावों का चित्रण भी किया है।

लेखिका ने पात्रों की मन:स्थितियों के वर्णन में अलंकृत और काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। जैसे – "वरना उसे तो लगता, बहुत-बहुत सहजे हुए विश्वास, आपसी रिश्ते लहुलुहान हो गए हैं। झटके की तकलीफ, ज़िबह हुए बकरे की तड़प और सारी नसों से निचुड़ा बूँद-बूँद खून................."[29]

लेखिका ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। जैसे-जैसे पात्र आते गए, वैसी ही भाषा का रूप मिलता है। जैसे-"डार्लिंग, कितनी स्पीड से चलाऊं?"[30] तुम सही हो, माय यंग बॉय"[31], "मैंने मरद बना लिया है।"[32] "बिटियन की तो कोई कद्र नहीं.............."[33]

तुक-साम्य एवं ध्वन्यात्मक शब्दावली

मन-ही-मन, ज्यों के त्यों, किसी न किसी, धीमें-धीमें, गुदगुदा, मुकरकर, केक-कटवाती, सहम-सी, घबरा-घबरा, अपने-आपको, दिनों दिन, कानून कहीं न कहीं, मानव मन, फिर-फिर, कम से कम, जब-तब, सजाते-संवारते, चुस्त-दुरूस्त, भागमभाग, इधर-उधर, डबडबाती,[34] तार-तार, बसा-बसाया, घुटा-घुटापन, बारीक-बारीक, लोक-लाज, घूमेंगे-फिरेंगे, शादी-शुदा, बांटे-बिखरे, घुलमिल, हावभाव[35], बाल-बच्चा, गुपचुप,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधेरा ही अंधेरा, सब-सुस्त, टुकुर-टुकुर, मुटुर-मुटुर, जलती-कोलती, फुग्गा-फाड़, ना-नू, कठल-कठल[36], भूल-भूलैया[37]।

मुहावरे

मुँहकी खाना, मन भारी होना[38], चोर आँखों से देखना, पैर ठिठकना, जख्मों पर नमक छिड़कना, नाक नीची होना, हथियार छोड़ना, तबीयत खराब होना, लक्वा मारना, अपने पैरों पर खड़े होना, आँखें नम होना, आँखों में पानी आना[39], मन बुझना, साँप सूँघ जाना, सुध खोना, लम्बी नाक लेकर बात करना[40], आँख में धूल झोंकना, आँखों से चीर फाड़ना, परलोक बिगाड़ना[41]।

मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपनी कहानियों में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उनकी कहानी "अन्तिम चढ़ाई" का एक उदाहरण प्रस्तुत है। "चिड़िया की किस्मत में सारी उम्र घोंसला बनाना ही लिखा होता है। ....तूफान आता है और उसके आबाद घोंसले को तहस-नहस कर जाता है। ....पर जब सुबह होती है, आसमान साफ होता है तो वह फिर से किसी पेड़ का आसरा लेती है और लगन, मेहनत से जुट जाती है, तिनके चुनने।"[42] इन पंक्तियों में "चिड़िया" शब्द मानव और मानव-मन का प्रतीक है। इस प्रकार का एक और उदाहरण प्रस्तुत है। –"एक मोर्चा हो तो आदमी लड़ ले, पर हर कदम पर खतरा,......."[43] "खतरा" और "मोर्चा" जीवन की समस्याओं, दुखों और पीड़ाओं का प्रतीक है।

लेखिका ने सूक्ति वाक्यों, उपमाओं, के अतिरिक्त अलंकारों आदि से प्रस्तुत संग्रह को सौन्दर्यमय बनाया है। लेखिका ने संग्रह में कुछ ग्रामीण शब्दों–बिटियन, जनम, काहे, लुगाई, पाखी आदि का प्रयोग भी किया है।

(च) प्रतिपाद्य विषय-उद्देश्य

प्रस्तुत संग्रह में लेखिका ने नारी की विवशता को प्रस्तुत किया है। इस संसार में नारी को हर तरफ से दबाने का प्रयत्न किया जाता है। हर नियम, बन्धन केवल नारी पर ही लागू होते हैं। वह जानती है कि यह–समाज, नैतिकता, संस्कृति, कानून–सभी उस पर लगाए गए बन्धन हैं। लेकिन आज की नारी अपने दुखी जीवन से समझौता करने के बजाय संघर्ष करती है और अन्याय का विरोध करती है। वह सम्मान से जीने और अपने अस्तित्व को बनाने के लिए संघर्ष करती है, चाहे उसे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। वह कठिनाइयाँ सह सकती है लेकिन अपमान और अत्याचार नहीं। इसका उदाहरण "अंतिम चढ़ाई" कहानी में मिलता है। पुरुष जानता है कि वह नारी को बदचलन घोषित करके उसे आसानी से हरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकता है। लेकिन आज की नारी अपने स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए हर आघात सहती है। पुरुष पर निर्भर रहना वह बुरा नहीं मानती, लेकिन पुरुष का हर अन्याय अपना भाग्य कह कर भी नहीं सह सकती। आज की नारी ने निर्णय किया है कि वह या तो पुरुष के साथ-साथ सम्मान से चलेगी या उससे हट कर रहेगी। समाज में ऐसी भी कई असहाय नारियां हैं जो अपने जीवन से समझौता करने के सिवा कुछ नहीं कर सकतीं। इसका कारण नारी का आत्मनिर्भर न होना भी है। इसी बात को "बूँद का हक" में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। इस पुरुष प्रधान समाज में नारी की समस्याओं को बढ़ाने में पुरुष का हाथ तो है ही, पर स्वयं नारी भी उसे चैन की सांस नहीं लेने देती। जैसे एक माँ भी अपनी बेटी को मायके में न रहने देकर नरक जैसे ससुराल लौट जाने पर विवश करती है। भारतीय समाज में विवाहित स्त्री का घर ससुराल ही माना जाता है। उसे वहीं रहना है चाहे उसे वहां कष्ट ही सहने पड़ें। कोई सहारा न मिलने पर वह अपने जीवन से समझौता करती है। "गुरुमंत्र" की नायिका एक निम्नवर्गीय अशिक्षित नारी है लेकिन अपना अस्तित्व बनाए रखने का मन्त्र जानती है। वह अपने से कम अच्छे पुरुष से विवाह करके सारे घर पर शासन करती है। "जमाना बदल गया है" कहानी में लेखिका ने दो पीढ़ियों की तुलना के बाद पुरानी पीढ़ी को उत्तम और श्रेष्ठ माना है। घर में ऐश्वर्य की सब सुविधाएं होते हुए भी पुरानी पीढ़ी के लोग नियमों, संस्कारों, संस्कृति का और अपने पूर्वजों का आदर करते थे और हर काम परिवार के नियमानुसार करते थे। लेकिन नई पीढ़ी के लोग हर काम औपचारिक ढंग से करते हैं। दोनों पीढ़ियों के मूल्य, नियम भिन्न हैं। पुरानी पीढ़ी में आपसी स्नेह, ममता, आदर, सभ्यता, लज्जा थी लेकिन नई पीढ़ी के लिए यह सब शब्द अर्थहीन हैं।

आलोच्य संग्रह की कहानियों के माध्यम से लेखिका ने नारी की कुण्ठाओं और सामाजिक समस्याओं को प्रकट किया है।

संदर्भ

1. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "अन्तिम चढ़ाई", पृ॰ 12, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
2. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक", पृ॰ 45, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
3. वही।
4. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "गुरुमंत्र", पृ॰ 53, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक", पृ॰ 36, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
6. वही, पृ॰ 36.
7. वही, पृ॰ 42.
8. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "गुरुमंत्र", पृ॰ 52, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
9. वही, पृ॰ 52.
10. वही, पृ॰ 52.
11. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "जमाना बदल गया है", पृ॰ 82, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
12. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "अन्तिम चढ़ाई" पृ॰ 16, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
13. वही।
14. वही.....वही संग्रह.....कहानी "बूंद का हक", पृ॰ 35.
15. वही.....वही.....वही..., पृ॰ 38.
16. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक", पृ॰ 41, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
17. वही....वही संग्रह.....कहानी "गुरुमंत्र", पृ॰ 48.
18. वही....वही.....पृ॰ 49.
19. वही.....वही....कहानी "जमाना बदल गया है", पृ॰ 91.
20. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "अन्तिम चढ़ाई", पृ॰ 13, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
21. वही, वही संग्रह, पृ॰ 12.
22. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक" पृ॰ 38
23. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "गुरुमंत्र", पृ॰ 48, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
24. वही, वही संग्रह - वही, पृ॰ 50.
25. वही, वही संग्रह- वही, पृ॰ 50.
26. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "जमाना बदल गया है", पृ॰ 81, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
27. वही, पृ॰ 78.
28. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "जमाना बदल गया है", पृ॰ 101, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
29. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूँद का हक", पृ॰ 39, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

30. वही, वही संग्रह - कहानी "अंतिम चढ़ाई", पृ॰ 10.
31. वही, पृ॰ 16.
32. वही - वही संग्रह - कहानी "गुरुमंत्र", पृ॰ 51.
33. वही, वही संग्रह - कहानी "जमाना बदल गया है", पृ॰ 80.
34. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "अन्तिम चढ़ाई", पृ॰ 7-16.
35. मेहरुन्निसा परवेज - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूँद का हक", पृ॰ 32 से 45, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
36. वही, वही संग्रह - कहानी "गुरुमंत्र", पृ॰ 47, 48, 51, 52, 53.
37. वही, वही संग्रह - कहानी "जमाना बदल गया है", पृ॰ 96.
38. वही, वही संग्रह - कहानी "अन्तिम चढ़ाई", पृ॰ 34, 35.
39. वही, वही संग्रह - कहानी "बूँद का हक", पृ॰ 33, 34, 35, 37, 38, 40, 43, 44.
40. वही, वही संग्रह - कहानी "गुरुमंत्र", पृ॰ 47, 51, 53.
41. वही, वही संग्रह - कहानी "जमाना बदल गया है", पृ॰ 94, 86.
42. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "अन्तिम चढ़ाई", पृ॰ 11, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982.
43. वही, वही संग्रह - कहानी "बूँद का हक", पृ॰ 44.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंचम अध्याय

"एक और सैलाब" की कहानियों का मूल्यांकन

"एक और सैलाब" (प्रकाशन वर्ष 1990) नामक कहानी-संग्रह मेहरुन्निसा जी ने अपनी माता को समर्पित करते हुए संग्रह के अगले पृष्ठ पर लिखा है, "माँ शहजादी बेगम की स्मृति की जिन्होंने हर बार बड़े होने की प्रेरणा दी !"

"सिर्फ एक आदमी" नामक कहानी में बेटी अपने पिता के बन्धन और शासन से मुक्त होने के लिए उसकी मृत्यु की कामना एवं प्रतीक्षा करती है। "एक और सैलाब" में पत्नी स्वयं अपने बीमार पति से तंग आकर उसे नींद की गोलियां देकर मारती है। "चुटकी भर समर्पण" में नारी पुरुष के सामने तन-मन से समर्पण करती है लेकिन फिर भी उस पर शंका करता है। "तीसरा पेच" में भी पुरुष के विश्वासघात का चित्रण हुआ है।

नारी पुरुष के बिना रह भी नहीं सकती, पति या प्रेमी की मृत्यु के उरान्त नारी का जीवन कैसा वीरान, नीरस और अतृप्त-सा हो जाता है और कैसे अकेलेपन उसे काटता है, इसका चित्रण "वीराने", "छोटे मन की कच्ची धूप", "बन्द कमरों की सिसकियाँ" नामक कहानियों में हुआ है। "उसका घर" में एक वृद्ध गृहस्वामी अपने ही घर में उपेक्षित और फालतू-सा जीवन जीता है।

इस संग्रह में लेखिका ने मानव जीवन के संघर्ष, यातनाओं, अकेलेपन, समस्याओं, तड़प, उदासी, आशा, निराशा, कुंठा को प्रस्तुत किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) कहानियों का कथ्य

"एक और सैलाब" में नीलू अपने छोटे-छोटे तीन बच्चों को ढंग से नहीं संभाल पाती क्योंकि उसे रोज दिन में दो बार घर से सात-आठ मील दूर अस्पताल अपने पति को देखने, खाना, खिलाने जाना पड़ता है। नीलू का पति मृत्यु-शय्या पर पड़ा है, उसे चार-पाँच बीमारियों ने घेरा है। लकवे के असर से उसकी आँखें भी सूझ गई हैं। बच्चों के स्कूल से आने के समय नीलू अस्पताल में होती है। पहले तो एक पड़ोसिन बच्चों को अपने घर बिठाती, खाना खिलाती थीं, लेकिन अब शायद पड़ोसिन तंग आकर उस समय घर पर ताला लगाकर चली जाती है और बच्चे भूखी आंखों से सड़क पर बैठे माँ की राह देखते रहते हैं। नीलू जानती है कि उसका पति जीवित नहीं रह सकता। इसलिए वह अपने जीवन की कठिनाइयों और अस्पताल के खर्चों से तंग आकर अपने पति को अधिक नींद की गोलियाँ खिलाकर उसका वध करती है। अस्पताल में किसी को पता नहीं चलता। अस्पताल की फीस आदि देने के लिए वह अपने सोने की चूड़ियाँ बेचती है और फिर से अपने जीवन की अन्य कठिनाइयों से जूझने के लिए भीड़ के सैलाब में खो जाती है।

"सिर्फ एक आदमी" में केवल एक पुरुष के कठोर अनुशासन में उसकी पाँच बेटियाँ और पत्नी रहती है। किसी को भी अपनी इच्छा व्यक्त करने का अधिकार नहीं है। बेटियों के लिए पिता को कोई रिश्ता पसन्द नहीं आता। वास्तव में आर्थिक तनाव होने के कारण वे बेटी की शादी को टाल रहे हैं। सुमी को अतुल को अपना जीवनसाथी चुन चुकी है। इस बारे में सुमी ने पिता को पत्र लिखा था, लेकिन उन्होंने पत्र बिना पढ़े पत्र फाड़ दिया और पाँचों बहनों को इतना पीटा कि उस दिन घर में चूल्हा ही नहीं जला। पाँचों बहनों में से किसी की भी हिम्मत पिता के सामने जाने की नहीं होती थी।

आज अतुल दो साल बाद घर आया तो उसने फिर से सुमी के सामने शादी का प्रस्ताव रखा। पहले भी कई बार बहस सुमी के विवाह के लिए कह चुका था। अपनी विवशता समझाते हुए सुमी ने कहा, "अतुल, इस भीड़ भरे घर में इतनी जगह नहीं, जहाँ हम बैठकर अपने भविष्य, अपने सुखद सपनों के बारे में सोच सकें। हमसे हमारे विचार, हमारी आजादी तक छीन ली गई है। भला इसे कोई कह सकेगा ! माँ कहती है, ठाकुरजी की मूर्ति भी तो थोड़ी जगह में आ जाती है, तो तुम लोग क्यों इतना जी जलाती हो?" पर माँ को कौन समझाये ! ठाकुरजी को हमारी तरह चलना, फिरना नहीं होता, उन्हें सपने नहीं आते, उनके मन में कोई इच्छा नहीं जागती। पर हम इंसान हैं, हमें पूरा "हम" मिलना चाहिए न। इन्सान होकर जीना बहुत मुश्किल है।.........."।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रात को अतुल ने सुमी को जगा कर सुबजह पांच बजे की गाड़ी से साथ चलकर भाग जाने को कहा तो सुमी ने उसे खिड़की के उजाले में पीठ खोलकर दिखाई, जिस पर बेंत के लाल, कच्चे निशान थे, जो उसे अपने जीवन के बारे में बात करने, विद्रोह करने पर पिता से ईनाम में मिलते थे और निरंतर प्रहार के कारण वे घाव कभी नहीं भर पाते। इतना कष्ट सहने पर भी सुमी घर से भागकर, माता-पिता के आशीर्वाद के बिना विवाह नहीं करना चाहती थी। "अतुल, क्या तुम बप्पा की मौत तक इन्तजार नहीं कर सकते? जिस दिन बप्पा मरेंगे, मैं तुम्हारे पास चली आऊंगी, बस।"[2] तभी खिड़की से आती रोशनी भी चली गई और सारा घर अंधेरे में डूब गया।

"तीसरा पेच" कहानी मे देव का पहली पत्नी से तलाक हो चुका है और उसकी पहली पत्नी के तीन बच्चे दादी के पास रहते हैं। "उसकी दूसरी पत्नी शीला को कोई पुराना प्रेमी अचानक अमेरिका से लौट आया था और उसी ने शीला की हत्या की थी।"[3] नायिका दो मील चलकर देव से मिलने उसके घर आती है। लेकिन उसे लगा कि देव को उसके आने की कोई प्रसन्नता नहीं हुई। बातों-बातों में देव उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखता है तो वह सोचती है कि "..........पर इसके साथ पत्नियों का भाग्य क्यों नहीं जुड़ा? क्या हुआ, कभी दो पेच से ढक्क्न नहीं बैठता, तीसरे पेच से बैठ जाता है।"[4] अत: वह देव की तीसरी पत्नी होना स्वीकार कर लेती है। ब्याह की स्वीकृति पाकर देव के चेहरे पर रौनक आती है और वह अन्दर कमरे में चला जाता है। वह तभी बाथरूम चली गई, जहाँ उसने लकड़ी की चौकी पर लेस टंगा लहंगा देखा। वह आश्चर्य में पड़ गई। देव ने तो कहा था कि उसके मकान में काफी समय बाद वह एक औरत आई है, फिर यह लहंगा किसका है? फिर पलंग की मुड़ी-तुड़ी चादर और आंगन का पिछला दरवाजा खुला होना—इन सब बातों के कारण देव का घबराना—यही सब सोचते हुए वह कमरे में आई तो देखा देव प्रसन्न है। प्रसन्नता के कारण पूछने पर उसने कहा, "प्रसन्नता इस बात की है कि तीसरी गली पर अब अपना आखिरी मकान बनेगा।"[5] देव के उत्तर से वह कुढ़ गई और उसने बिना कुछ कहे लौट जाने का निर्णय किया। जाते समय उसे पहली बार अपने फटे आंचल का दु:ख हुआ जो जाते समय गमले में लगे नागफनी के काँटे में उलझ कर फटा था।

"बन्द कमरों की सिसकियाँ" में मौना की शादी को बीस साल हुए हैं। पर कोई संतान नहीं हुई। उसके कहने पर भी उसके पति शंकर ने दूसरा ब्याह नहीं किया। पति-पत्नी अपने अकेलेपन से ऊब चुके थे, लेकिन आपसी स्नेह से उन्हें बांधे रखा। मकान के ऊपर के हिस्से में शंकर का छोटा भाई—शम्भू रहता था, "जिनकी शादी को चार बरस हो गए थे। वह दो बच्चे के बाप भी थे। वह सोचती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

थी कि चलो, देवर के बच्चों को ही प्यार करके जी हल्का करेगी, पर दोनों भाइयों में ज़रा नहीं पटती।"[6] मौना दिन भर बेमतलब टहलती रहती। आर्थिक तनाव के कारण मौना को हर छोटी-बड़ी चीज के लिए तरसना पड़ता था। शंकर को तन-मन से बूढ़ा होते देख वह अपने भविष्य के लिए चिन्तित हो उठी। इसी विचार से शंकर ने भी मौना के सहारे के लिए अपना जीवन-बीमा कराया था। दुर्भाग्यवश शंकर की एक दुर्घटना में मृत्यु होती है। मौना स्वयं चकित थी कि पति की मृत्यु पर उसे रोना क्यों नहीं आ रहा। मौना की चुप्पी को लोग पागलपन का पहला दौरा समझ रहे थे। "बंद कमरों की दीवारों में ही शम्भू, उसकी पत्नी और बच्चों की सिसिकियाँ घुटकर रह गई थीं।"[7]

दस दिन बाद जब मौना आंगन में बैठी आसमान ताक रही थी तो शम्भू ने शंकर की बीमा पॉलिसी के कागज उसे हस्ताक्षर के लिए दिए तो वह उन कागजों को घूरने लगी। जीवन भर जब शंकर का साथ था तो वह हर चीज के लिए तरसती रही और अब वह नहीं है तो उसे बीमा का पैसा मिलने वाला है। दूसरे ही क्षण वह फर्श पर पछाड़े खा-खा कर रोने लगी।

"उसका घर" एक ऐसे वृद्ध गृहस्वामी की कथा है जो अपने ही घर और अपने ही परिवार में उपेक्षित और व्यर्थ की तरह रहता है। "उसने कितनी मुश्किल से अपने तीनों बच्चों को पढ़ाया। क्या एक मामूली घर-घर पानी भरने वाला अपने बच्चों को पढ़ा सकता था? पेट काटकर, पेशगी मांग-मांगकर फीसें दीं और किताबें लीं।"[8] आज जब वह बूढ़ा हो गया है और कोढ़ की बीमारी के कारण कोई काम नहीं कर सकता तो उसे घर से बाहर निकाल कर उसकी चारपाई आंगन में लगा दी गई है। कोड़ की बीमारी होने के कारण उसकी धर्मपत्नी—कल्लो—भी उससे दूर रहती है। कल्लो शाम को बचा-खुचा, जला-अधजला खाना जो बहू दे देती है, आकर दूर से पति की थाली में डाल देती है। मंझली बहू मायके से आई तो वह यह जानने के लिए उत्सुक हुआ कि बहू को मुन्ना हुआ है या मुन्नी। कल्लो ने जब बताया कि उसे मुन्ना हुआ है तो वह पोते को देखने, प्यार करने के लिए तड़प उठा। लेकिन यदि वह भीतर जाता तो उसे दुत्कार दिया जाता। मंझली बहू मुंह धोने बाहर निकली तो उसका प्रणाम पाकर वह निहाल हो गया। मुन्ने के बारे में पूछा तो उसने मुन्ना दूर से ही दिखाने का उपकार भी किया। उसने दूर से ही पोते को प्यार किया। उसके हृदय में पोते को गले से लगाने की इच्छा छटपटाई। सब के सो जाने पर वह चुपचाप बहू के कमरे में जाता है। जाते समय स्टूल से उसके घुटने में चोट लगी। धीमी सिसकियाँ लेते हुए वह पोते तक पहुंचा। ज्यों ही उसके हाथ पोते तक पहुँचे तो बहू ने उसी समय नींद में कुनमुना कर चादर खींच ली। मारे डर के वह वहाँ से भाग आया। उसे "लगता है जिन मोह की रस्सियों से वह बंधा था, अब वे रस्सियाँ एक-एक टूटकर लटकर रही है।"[9]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"छोटे मन की कच्ची धूप" कहानी में उमा अपने पति और छोटे दो बेटों के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रही थी। उमा के पति को किसी काम से कलकत्ता जाना था। वह स्वयं उसे हवाई जहाज में छोड़कर आती है जो पन्द्रह-बीस मील दूर जाकर ही टकरा कर गिर जाता है। दो दिनों के प्रयत्नों के बाद उमा के पति का शव एक पेड़ पर उलटा लटका मिला। "उमा खुद लाश को देख नहीं पा रही थी। उमा और दूसरे लोगों ने जल्दी से उसी गाँव में अंतिम संस्कार कर दिया था क्योंकि लाश फूलकर बदबू करने लगी थी"[10] बच्चों को पिता की मृत्यु के बारे में पता ही नहीं था। उन्हें अभी भी आशा थी कि उनके पिता कलकत्ता से उनके लिए तोहफे लेकर आएंगे। आज उाम की सबसे बड़ी समस्या यही थी कि वह कैसे अपने छोटे-छोटे दो बच्चों के छोटे-छोटे मन में पिता की मृत्यु की खबर भर दे! एक दिन उमा पायरी में खड़ी बच्चों को सामने के मैदान मे लगा मीनाबाजार दिखा रही थी कि सामने से कुछ मुसलमान जनाजा ले जा रहे थे। मौका पाकर उसने दोनों बेटों को अपने से लिपटा कर उनसे कहा, "बेटा, जो आदमी मर जाते हैं न, तो उन्हें ऐसे ही ले जाते हैं। बेटा, डैडी को भी ऐसे ही तो ले गए थे।"[11]

"वीराने" नामक कहानी में माँ-बेटी के उदास और वीरान जीवन की कथा है। पति की मृत्यु के बाद राजू की माँ अपने आप को घर के कामों में व्यस्त रखती है। माँ से अधिक गंभीरता और प्रौढ़ता तो बेटी-राजू-में आ गई है। राजू अशोक से प्रेम करती थी, जिसकी मृत्यु हृदय की धड़कन बन्द होने से हुई थी। राजू की डायरी एक दिन उसकी मां को मिली, जिससे राजू ने अपने जीवन का सारा ब्यौरा लिखा था। राजू ने लिखा था-"आज तो डैडी भी नहीं रहे। डैडी के साथ मैं अशोक का चेहरा भी देख रही हूँ और मुझे लग रहा है कि मम्मी की तरह में भी विधवा हो गयी हूँ, कुंवारी विधवा।"[12]

राजू का मम्मी-डैडी और अशोक के साथ गुफाएं और मन्दिर देखने जाना, नंगी मूर्तियाँ देखकर अशोक का राजू को चिढ़ाना, मन्दिर की तंग सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसका अशोक की छाती से टकराना, शर्माना, अशोक का उसका सिर थपथपाकर सान्वना देना, अशोक का डैडी की नज़रें बचाकर उसके प्लेट में अंडे के टुकड़े डालना-ऐसी कई स्मृतियाँ थीं जिनको राजू कभी नहीं भूल सकती और इन सब बातों को उसने अपनी डायरी में लिखा था। उस दिन मन्दिर में पुजारी ने कहा था कि सदा सुहागिन सौभाग्यवती देवी की मूर्ति के पैरों से सुहागिनें सिन्दूर लगाती हैं। अशोक ने उसी मूर्ति के पैरों से सिन्दूर उठाकर राजू की माँग भर दी थी। राजू चुपचाप खड़ी रही थीं। ईसाई होते हुए भी राजू ने उसी दिन से अशोक को अपना पति मान लिया था। अशोक टेनिस मैच खेलने इन्दौर चला गया जहाँ उसकी मृत्यु हुई। तभी से राजू का जीवन नीरस और वीरान हुआ था। माँ ने कई बार राजू को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवाह करने के लिए कहा, पर वह टालती रही। आज वह कॉलेज से लौटी तो देखा कि माँ उसकी डायरी पढ़ रही है। उसे दुख हुआ और फूट-फूटकर रो पड़ी। उसके जीवन की वास्तविकता आज उसकी माँ भी जान गई थी।

"चुटकी भर समर्पण" में पाखी विवाहित होते हुए भी मनीष से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। शादी के दस साल बाद भी पाखी माँ न बन सकी थी। अब उन पति-पत्नि का सम्बन्ध वहाँ तक पहुँच चुका था, जहाँ वे दोनों भूल चुके थे कि "पति-पत्नी के रिश्तों के बीच शारीरिक सम्बन्ध भी होता है।"[13] ऐसे में वह एक पुरुष मित्र-मनीष-से गर्भ धारण करती है। मनीष उसे अस्पताल ले जाता है और वहाँ के कागजों पर पति की तरफ से भी उसी ने हस्ताक्षर किए। किन्तु वह उस बच्चे को अपना मानने के लिए तैयार ही नहीं था। "कैसे विश्वास कर लूँ? कहीं ऐसा होता है कि पति-पत्नी के पास सालों नहीं आए? मनीष ने कहा था।"[14] मनीष की यह बात पाखी को गहराई तक अपमानित करती है। "इस चुटकी भर समर्पण ने उसे क्या दिया? उसकी जिन्दगी के दोनों तराजू के पल्ले खाली ही रहे।"[15] पाखी ने मन ही मन कभी भी मनीष के पास न जाने का निर्णय किया। अब वह पति के पास लौट जाएगी।

(ख) प्रमुख पात्र

"एक और सैलाब" की नीलू अपने जीवन की कठिनाइयों से पीड़ित एवं व्यथित नारी है। आर्थिक तनाव और जिम्मेदारियों के बोझ तले वह दब गई। अकेली और असहाय होने के कारण वह अपनी कोई भी जिम्मेदारी ढंग से नहीं संभाल पाती है। सहायता तो कहीं से मिलती नहीं, लेकिन लोगों की शंकालू दृष्टियाँ अवश्य देखने को मिलती हैं। आय का कोई साधन नहीं है। लेकिन अस्पताल के और पति की दवाइयों के खर्चे और घर का खर्चा उसे चलाना पड़ता है। विवश होकर वह शरीर बेचने के लिए भी तैयार है।

रोज सुबह से शाम तक मशीन की तरह काम करना, बच्चों को झूठ कहकर बहलाना, पति को स्वस्थ होने की झूठी आशा देना, समाज की कठोर नजरों का सामना करना और अपना दुख छुपाना ही उसका जीवन बन गया है। "उसके चेहरे पर वर्षों के उतार-चढ़ाव साफ-साफ अंकित थे।"[16] उसके पास कोई सहारा नहीं है। "मां के मरने के बाद मायका तो टूट ही चुका था। पति का सहारा था। वह भी रेत पर बनी गीली लकीर के समान है, किसी ने पैर रख दिया, मिट गई।"[17] पति को नींद की गोलियाँ खिलाकर वह उसे मार देती है और अपनी एक समस्या का अपने ढंग से समाधान करती है। उसके जीवन में और भी कई समस्याएं हैं जिनसे उसे जीवन भर निपटना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"सिर्फ एक आदमी" में सुमी पढ़ी-लिखी और सभ्य होने के साथ-साथ एक आदर्श बेटी भी है। पैसा न होने के कारण पिता उसका विवाह नहीं करते और न ही उसे अपनी इच्छानुसार अपने प्रेमी से विवाह करने देते हैं। विद्रोह करने पर उसे पिता की मार सहनी पड़ती है।

सुमी पहले खुश रहने वाली लड़की थी लेकिन अब वह शांत और उदास सी हो गई है। सुमी स्वयं कहती है ".....नर्मदा के किनारे वाली ड्रामर रोड़ पर तेजी से जीप चलाने वाली सुमी को भूल जाओ।....."[18] सुमी चाहती तो अपने प्रेमी के साथ भागकर विवाह कर सकती थी। लेकिन वह अपने प्रेमी से कहती है – ".....माँ-बाप के ठुकराए आशीर्वाद से जीवन नहीं बनता।......."[19]

दुबली-पतली सुमी जीवन से पीड़ित है लेकिन फिर भी आदर्श नहीं छोड़ती, न ही किसी नियम का उल्लंघन करती है। वह चुप रहकर सब अत्याचार नहीं सहती। वह विद्रोह करती है। हार कर वह कुछ नहीं कर पाती तो अपने प्रेमी से पिता की मृत्यु तक प्रतीक्षा करने को कहती है।

"तीसरा पेच" कहानी का नायक–देव–एक कॉलेज में प्रोफेसर है। वह प्रोफेसरों के एक क्वार्टर में अकेला रहता है। उसका पहली पत्नी से तलाक हुआ है और दूसरी की मृत्यु हुई है: देव शिक्षित होते हुए भी नीच चरित्र वाला पुरुष है। वह स्वच्छन्द प्रकृति का पुरुष है। वह समाज की नज़रों में धूल झोंककर चरित्रवान होने का नाटक करता है। देव दूसरी पत्नी की मृत्यु के दुख का अभिनय करता है। देव शिक्षित वर्ग के निम्न चरित्रों वाले युवकों का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र है।

"बन्द कमरों की सिसकियाँ" की मौना अपनी कमजोरियों के कारण किसी के घर नहीं जाती। वह जहाँ भी जाती उसे बांझपन का एहसास कचोटता रहता। एक दिन वह पड़ौसी के घर गई थी। "औरतों की भीड़ के साथ वह मिस्टर राय के झूले में बच्चे के पास शगुन करने गई तो उसकी सास ने टोक दिया।......कितनी चोट लगी थी इस घटना से और बांझपन का बोझ पहली बार उसके मन को दबाने लगा था।"[20]

उसके कोई भाई-बहन न था, इसलिए अकेलेपन से तंग आकर बचपन में पास-पड़ौस के गंदे बच्चों के साथ खेलती थी। "खेल भी खेलती तो हमेशा माँ बनती और छोटे-छोटे पत्थरों के लम्बे टुकड़ों को बच्चा बनाया करती। जवानी में जब पहली बार सपने आए थे तो उसे याद है, किसी की प्रेयसी के रूप में नहीं, बल्कि किसी बच्चे की माँ के रूप में आये थे। जब उसकी शादी हुई, तो माँ बनने की इच्छा जोरों से पछाड़ खाने लगी, पर भाग्य की विडम्बना देखों कि पल-पल करते बीस साल बीत गए और वह ठूंठ की तरह खड़ी-खड़ी रह गई।"[21]

आर्थिक अभाव के कारण उसे जीवन में सुख-सुविधाएं नहीं मिली। हर चीज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे दुकान के शो-केस में ललचाती रही। एक दिन उसने पति से चार रुपए का हरा पर्स ले देने की जिद्द की, लेकिन पति ने पैसे न होने के कारण कल अच्छा पर्स ला देने का झूठा आश्वासन दिया। "पर वह जानती है, ईश्वर ने उसके भाग्य की हर लाइन के साथ जोड़ दिया है, "आज नहीं कल ! "......यह कल कभी नहीं आता, कभी नहीं।"[22] जीवन भर जब पति साथ था तो पैसों की तंगी में भी जी रही थी। पति की मृत्यु के बाद उसे पति के जीवन-बीमा का पैसा मिलने वाला था। लेकिन अकेले रह जाने से उसका जीवन अधिक कठिन हो गया। उसका वास्तविक धन तो उसका पति था, जो उसे संसार में अकेला छोड़कर चल बसा।

"उसका घर" का प्रमुख पात्र एक वृद्ध पुरुष है जिसने जवानी में कम आय होते हुए भी कठिनाई से अपने बच्चों को पढ़ाया था। स्कूल मास्टर ने जब कहा कि गरीब बच्चों को फीस और किताबें स्कूल से मुफ्त मिल सकती हैं। तो उसने यह कह कर मना किया कि इससे बच्चों में दूसरों के रहम पर जीने की आदत पड़ती है। आज सब बच्चे नौकरी करते हैं और उसे स्वयं कोढ़ की बीमारी लगी है। अपने ही बच्चों ने उसे अपने ही घर से बीमारी फैलने के डर से उससे बाहर निकाल कर उसकी खाट आंगन में लगा दी। घर के सारे सदस्य उससे पशुओं-सा व्यवहार करते हैं। उसकी पत्नी उसे दूर से पानी डालकर नहला देती थी क्योंकि वह खुद जख्मी-अधूरी उंगलियों से लोटा नहीं पकड़ सकता था। लेकिन अब उसकी पत्नी को उसे नहलाने की फुरसत ही नहीं। वह दिनभर खाट पर बैठा अपने दुर्गन्ध भरे शरीर से खटमल निकालता रहता है। उसकी पत्नी तो उसके स्पर्श से भी डरती है कि कहीं कोढ़ की बीमारी उसे भी न लगे। उसके शरीर और बिस्तर की दुर्गन्ध के अतिरिक्त पास बंधी भैंस और पाखाने की दुर्गन्ध से उसका जीना मुश्किल हो गया है। वह भी घर के सारे सदस्यों के बीच बैठ कर उनसे हंसना-बोलना चाहता है, लेकिन उसे घर के भीतर जाने की अनुमति नहीं है। इसलिए वह बाहर बैठा अन्दर के दृश्यों की कल्पना करता रहता है। उसे हर बात पर अपमानित किया जाता था। उसके जीवन के सारे सपने एक-एक करके टूटने लगे, उसे शरीर बन्धनों से अपने आप मुक्ति मिल रही थी।

"छोटे मन की कच्ची धूप" की उमा एक भावुक नारी है। वह जब भी बच्चों को पिता की मृत्यु के बारे में कहने बैठती तो खुद भावुक होकर रोने लगती थी और बच्चों को कुछ भी नहीं समझा पाती। बेटे-निक्कू-का खाने में रुचि लेना, गोभी-मटर की फरमाइश करना, ऐसी कई बातें थीं जिससे उसके पति की याद ताजा होती थी और उसके हृदय के घाव फिर से हरे होते थे। वह पति की याद में उसकी छोटी-छोटी चीजें उसके लिए लाई तस्वीरें लगाने के दो फ्रेम आदि सब संभाल कर रखती थी। ये चीजें वह अपने बच्चों को भी नहीं देती थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमा एक आदर्श माँ है। उसे अपने बच्चों की हर इच्छा और आवश्यकता का ध्यान रहता है। उसने कई बार सोचा कि वह अपना घर किराए पर देकर शिमला भाई के पास जाएगी। "पर वह बच्चों का ध्यान कर यह विचार छोड़ देती है—कहीं बच्चों के मन में यह बात घर न कर जाए कि वे असहाय से दूसरों के घर जी रहे हैं।..........वह इन्हें (बच्चों को) इसी वातावरण में रखेगी, चाहे वह वातावरण खुद उसको कितनी ही पीड़ा देने वाला क्यों न हो।"[23] इस प्रकार वह अपने मन में अपने मृत पति की याद पाले अपने बच्चों को ढंग से पालने का कर्तव्य निभाती है।

"वीराने" की नायिका—राजू—चौबीस वर्षीय कुंआरी युवती है, जो कॉलेज में पढ़ाती है। वह माँ की तरह स्वयं को भी विधवा समझती है क्योंकि राजू के प्रेमी—अशोक की मृत्यु हो गई है। अशोक ने मन्दिर में राजू की मांग में सिंदूर डाला था। ईसाई होते हुए राजू ने हिन्दू लड़के अशोक को अपना पति मान लिया था। राजू ने डायरी में लिखा था—"........मम्मी कई बार शादी को कह चुकी है। मम्मी को कैसे समझाऊं कि एक बार मन की मृत्यु हो जाने पर वह दुबारा नहीं जी सकता।"[24]

राजू ने सजना-संवरना छोड़ दिया है। लोगों से भी मेल-जोल नहीं है। कहीं से दावत का निमन्त्रण आता तो वह जबरदस्ती मां को सुन्दर साड़ी पहनाकर भेज देती और स्वयं उसने सुन्दर साड़ियां पहनना ही छोड़ दिया मानों वह भी कोई विधवा हो। वैसे भी उसे अपनी विधवा मां और स्वयं में कोई अन्तर नहीं लगता था। "सफेद साड़ी में सूखा-सूखा सफेद चेहरा"[25] लिए वह कॉलेज जाती थी। खाने-पीने की उसे कोई चिन्ता नहीं थी। अपने जीवन की विडम्बना, घटनाएं अपनी डायरी में लिखकर अपना दुख कम करती थी। उसका जीवन नीरस और वीरान-सा हो गया है।

"चुटकी भर समर्पण" की नायिका पाखी पति से ऊब के कारण एक पुरुष—मनीष—से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। पाखी और उसका पति एक ही घर में रहते हुए भी एक दूसरे से दूर थे। उसके अपने पति से कई वर्षों से शारीरिक सम्बन्ध नहीं थे। ऐसे में वह एक पर पुरुष मनीष के बच्चे की मां बनती है। गर्भवती होने पर वह प्रसन्न होती है कि सन्तानोत्पत्ति की असमर्थता उसमें नहीं है। वह मनीषा से प्रेम करने लगी थी।

"विश्वास, रिश्ते, प्यार, अपनत्व और सुरक्षा—इतनी सारी चीजें वह सिर्फ एक जगह से चाहती थी। सिर्फ मनीष से.........."[26] लेकिन मनीष भी विवाहित था और वह घर से केवल सैक्स की तलाश में निकला था। उसे पाखी के प्रेम पर विश्वास ही न था और न ही उसने इस बात पर विश्वास किया कि पाखी का बच्चा भी उसी का है। पाखी अपने चोट लगे स्वाभिमान को लिए चुप रही।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाखी का भाई कैलाश कहता है, – "..........तुम्हारे साथ इन लोगों (माता-पिता) ने क्या किया? तुम्हें बकरी की तरह कहीं भी बांध दिया, फिर तुम्हारे दु:ख सुख पूछे? शायद पूछने से भी डरते हों कि पूछकर कौन मुसीबत मोल ले?.........."[27] मायके में सबके अपने-अपने दुख थे। पाखी उनको अपना दुख सुनाकर और दु:खी नहीं करना चाहती थी। वह अपना दु:ख मन में ही दबाए पति के घर लौट जाने का निश्चय करती है।

(ग) कथोपकथन

लेखिका ने संक्षिप्त संवादों का प्रयोग किया है जो स्वाभाविक एवं व्यावहारिक लगते हैं। "तुम्हें मालूम नहीं कि मैं आया हूं?" "मालूम था।" "मिलने क्यों नहीं आई?" "बस यूं ही।"[28] "दीदी, लोग लौट आये हैं।" "कहा से?" ".....शमशान से और कहां से?"

"ओह !"...........[29]

संक्षिप्त एवं रोचक कथोपकथन के माध्यम से लेखिका ने परिवार की गिरी हुई आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। नायिका अपने बच्चों को रुखा-सूखा खिलाती है और पिता के स्वस्थ होने का झूठा आश्वासन देती है। "मम्मी, मुझे दाल नहीं चाहिए, सब्जी दो न।" "चुप" ! "नहीं, मैं नहीं खाऊंगा, पापा को आने दो, मैं सब बताऊंगा।" "खा ले, बबलू, पापा बीमार हैं, अच्छे होने पर अच्छी-अच्छी चीजें लायेंगे।"[30]

लेखिका ने सांकेतिकता का प्रयोग किया है। सांकेतिक संवाद का उदाहरण दृष्टव्य है–

"प्रसन्नता इस बात की है कि तीसरी गली पर अब अपना आखिरी मकान बनेगा।"[31] "तीसरी गली" तीसरी पत्नी का प्रतीक है।

लेखिका ने नाटकीय संवादों का प्रयोग करके पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डाला है और घर की स्थिति का चित्रण भी किया है।

नाटकीयता से पूर्ण संवादों का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"तुम्हें बाजार जाने की क्या जरूरत पड़ गई थी? चुपचाप खटिया पर बैठे नहीं बनता?" "वह तो जरा-सा दिल घबरा गया था, घूमने चला गया।" "हां-हां, घर तो तुम्हें काटने दौड़ता है, जरा मेरी इज्जत का तो ख्याल किया करो, अपनी अधूरी उंगलियों से क्या चना चाट रहे थे?" वह गुस्से से खाली बर्तन की तरह झनझना जाता है। –"मैं......मैं....." मगर उसकी आवाज साथ नहीं देती और कांपकर रुक जाती है। "गुस्सा तो यूं कर रहे हो बापू, जैसे हमें कमा कर खिला रहे हो।"[32]

उपरोक्त पंक्तियों में लेखिका ने संवादों के माध्यम से एक गृहस्वामी की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थिति का चित्रण किया है। पिता ने बच्चों को पढ़ा-लिखा कर इज्जतदार बनाया और आज वही उसे अपनी इज्जत का हवाला देकर घर से बाहर न जाने और किसी के सामने न जाने को कहते हैं।

संवादों के माध्यम से ही लेखिका ने सामाजिक स्थिति पर चोट की है। "छिः छिः ! पागल है क्या, मैं विधवा ऐसी साड़ी पहन सकती हूं !"[33]

लेखिका ने संक्षिप्त, लम्बे और पात्रानुकूल हर प्रकार के संवादों का प्रयोग किया है।

(घ) कहानियों में चित्रित वातावरण

"एक और सैलाब" में गोरखपुर में रहने वाली एक नारी की पीड़ा और कुण्ठा भरे जीवन का वातावरण चित्रित है। आर्थिक साधन न होने के कारण वह अपने गहने बेच कर पति के इलाज का और घर का खर्चा चलाती है।

लेखिका ने बाहरी वातावरण के माध्यम से नायिका की मानसिक स्थिति का चित्रण किया है। "उसके गुजरते ही दोनों की दृष्टि नाली के पास पड़ी कुतिया पड़ी जिसने शायद नये बच्चे को जन्म दिया था और खुद प्रसुति बीमारी में फंस गई थी। उसके मुँह में कड़वा-सा स्वाद उतर आया।"[34] इन पंक्तियों में नायिका की मानसिक पीड़ा का चित्रण हुआ है। वह अपने जीवन की विवशता से पीड़ित है और अपने बच्चों की चिंता भी उसे सताती है।

लेखिका ने बड़ें शहरों की भीड़ भरी सड़कों का चित्रण भी किया है। "बड़े शहरों के भीड़ से भरे सैलाब में अपना जाना पहचाना चेहरा खोज पाना मुश्किल होता है, ...स्कूटरों की तेज रफ्तार में चेहरा देख पाना ही मुश्किल होता है...... "।[35]

"सिर्फ एक आदमी" में मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। गृहस्वामी जब डिप्टी कलेक्टर थे, तब उन्होंने कोई पैसा नहीं जोड़ा था। आज जब वह सेवा-निवृत्त हो गए हैं तो अपनी पांच बेटियों का ब्याह रचाने के लिए पैसा जोड़ रहे हैं। सारा मकान किराए पर दे रखा है और घर के सदस्यों के लिए इनती कम जगह छोड़ी है कि उनका जीना मुश्किल हो गया है। "पच्चीस बाई पचास के प्लाट पर करीब पन्द्रह फैमिली जी रही थीं। मकान देख लगता है जैसे उन्होंने हवा निकलने की भी जगह नहीं छोड़ी, जैसे बरसाती पुलिया के नीचे ढेरों सुअर भरे हों।"[36] इन पंक्तियों में लेखिका ने किराए के कमरों में रहने वालों लोगों की स्थिति का चित्रण किया है। इस कहानी में महिला पात्रों की पीड़ा, नीरस जीवन और घुटन को भी दिखाया गया है। नारी को अपने जीवन का कोई निर्णय स्वयं लेने का अधिकार नहीं दिया जाता और न ही उसकी इच्छा जानने की कोई आवश्यकता समझी जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तीसरा पेच" में भी मध्यवर्ग का वातावरण मिलता है। नायक एक साफ-सुथरे और ढंग से सजाए क्वार्टर में रहता है। उसने बाहर के दरवाजे से ही घर को गमलों से सजाया है। "बरामदे भर में सुन्दरता से पेंट किये गमले रखे थे। दीवारों पर भी छोटे-छोटे गमले लटक रहे थे। बरामदे के एक ओर रसोईघर और उससे लगा बाथरूम था।"[37]

लेखिका ने पास-पड़ोसियों का दूसरों के बारे में सोचना, देखना और शंका करने की आदत की ओर संकेत किया है-

"........पड़ोस के क्वार्टर की खिड़की से दो-तीन चेहरे बाहर झांके और दरवाजे पर उसे खड़े देख मुस्करा कर अन्दर हो गये।"[38]

"बन्द कमरों की सिसकियां" निम्नमध्यवर्गीय परिवार की कथा है। नायक एक दफ्तर में क्लर्क है और मुश्किल से घर चला पाता है। अपनी इच्छा की छोटी-छोटी चीजों पर वह खर्च नहीं कर सकते।

आलोच्य कहानी में जगदलपुर में रहने वाले पति-पत्नि के घुटन और अकेलेपन का वातावरण चित्रित है। सन्तान न होने के कारण वे पीड़ित हैं। पात्र के कथन से उसके जीवन की छटपटापहट स्पष्ट दिखती है – "..........मौना, अब अपने जले हुए तन को सुन्दर कपड़ों से ढककर जिया नहीं जाता। यह एक लाइन में गुंथी जिन्दगी अब नहीं जी जायेगी, मौना........."[39]

भारतीय समाज में बच्चे को झूले में बिठाने का शगुन किया जाता है। पास-पड़ोस की औरतें और सम्बन्धी आकर इस समारोह में भाग लेते हैं। इस प्रथा का उल्लेख लेखिका ने भी किया है।

"उसका घर" में निम्नवर्गीय परिवार के गन्दे वातावरण का चित्रण किया गया है, जिसका एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"पास बंधी भैंस का जुगाली करता मुँह चपड़-चपड़ हो रहा है। वह करवट पर करवट बदलता है, कुँए के पास वाली नाली काफी भर गई है। दुर्गन्ध से नाक फटने लगती है। नाली के मच्छर भिनभिना रहे हैं। पाखाने का दरवाजा आज खुला रह गया दिखता है।"[40]

कहानी में गृहस्वामी की बुरी स्थिति लेखिका ने स्पष्ट दिखाई है। घर में किसी को भी गृहस्वामी के सम्मान, स्वस्थ और सफाई का ध्यान नहीं और वे स्वयं इस स्थिति में नहीं है कि अपनी सफाई का ध्यान रखे-"खटिया कितनी ढीली हो गई है। चादर से भी सड़े प्याज की दुर्गध उठ रही है, बिना खौल के तकिए पर सिर का निशान बन गया है, और उससे अजीब महक उठती है,..........."[41]

"छोटे मन की कच्ची धूप" कहानी में उच्चमध्यवर्गीय परिवार का वातावरण मिलता है। घर में ऐश्वर्य, सुख-सुविधा की सब चीजें हैं। घर का बाहरी वातावरण हंसता-खेलता लगता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखिका ने नारी की मानसिक पीड़ा, अकेलेपन का चित्रण किया है। पति के रहते जो मकान भरा-भरा सा लगता था, अब वही मकान पति की मृत्यु के बाद खाली-सा लगता है। वास्तव में यह परिवर्तन नायिका की भावनाओं में आया है, तभी उसे बाहरी वातावरण बदला हुआ सा लगता है।

लेखिका ने प्राकृतिक वातावरण का सुन्दर चित्रण किया है–

"ठंड का मौसम शुरू हो गया था। धूप में सेंक आ गयी थी। पेड़ों पर अहाते की दीवार पर रंग-बिरंगी सुन्दर-सुन्दर चिड़िया दिखती है।.........."[42]

"वीराने" कहानी में ईसाई परिवार का वातावरण मिलता है। लेखिका ने ईसाई लोगों का किसी की मृत्यु पर काले वस्त्र पहनने की प्रथा का उल्लेख किया है –"..........जब सामने पादरी काला गाउन पहने खड़े थे,............ डैडी की छाती पर हाथ रखे काले गाउन में लिपटी, सिर पर काला रूमाल बांधे मम्मी कितनी डरावनी लग रही थी।........."[43] लेखिका ने ईसाई वर्ग का मृत मनुष्य की तस्वीर यीशु की तस्वीर के पास रख कर मृत मनुष्य की आत्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना करने का भी उल्लेख किया है।

कहानी में समाज में पलने वाले एक अंधविश्वास की ओर भी संकेत किया है। जैसे–किसी फूलों वाले वृक्ष के नीचे नहीं सोना चाहिए क्योंकि वृक्ष से फूल झर कर सोए हुए व्यक्ति पर गिरते हैं, जो कि अपशगुन माना जाता है क्योंकि फूल मृत मानव पर डाले जाते हैं।

"चुटकी भर समर्पण" में नायिका की मानसिक उलझन का वातावरण चित्रित है। उसे भाग्य ने जीवन के दोराहे पर खड़ा किया है। उसे एक दृढ़ सहारे की तलाश है। स्वयं परेशान न होने के कारण उसे बाहरी वातावरण भी उलझन भरा लगता है। जैसे वह सोचती है–"आज सुबह से कमरे में एक गोरैया भटक रही है। लगता है वह अपना घर भूल गयी है, या उसे घरवालों ने अलग कर दिया है।..... .....आश्चर्य होता है कि यह चिड़िया उसके इतने पास आकर कैसे बैठ जाती है? उसे भय नहीं होता? शायद जब मन ज्यादा परेशान होकर भटकता है, तब भय खत्म हो जाता है। क्या इस भटकती चिड़िया को छांव-ठौर कहीं नहीं मिलेगा?"[44] नायिका का मन भी चिड़िया की तरह भटक रहा है और अपने घर की तलाश कर रहा है।

लेखिका ने प्राकृतिक वातावरण का भी सुन्दर चित्रण किया है। जैसे–"....... ......कई-कई दिनों की बीहड़ गर्मी के बाद बदली कदरायी थी। सूरज हट गया था..........घटाएं उजाले को निगल गयी और उमड़-उमड़कर बरसात झरती रही।"[45]

लेखिका ने प्रस्तुत कहानी-संग्रह में पात्रों के जीवन के बाहरी वातावरण, मानसिक स्थिति और प्राकृतिक वातावरण का भी सुन्दर चित्रण किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ङ) भाषा-शिल्प

लेखिका ने कहानी लेखन की प्रणालियों में से अधिकतर वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। "वीराने" कहानी में लेखिका ने डायरी-पद्धति का प्रयोग किया है। अत: कहानी का मुख्य अंश डायरी के पन्नों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। संग्रह की अधिकांश कहानियाँ नायिका प्रधान हैं और वे सामाजिक कहानियाँ हैं।

लेखिका ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। जैसे– "............क्या हुआ, कभी दो पेच से ढक्कन नहीं बैठता, पर तीसरे पेच से बैठ जाता है।"[46] "दो पेच" यहां पर पहली दो पत्नियों का प्रतीक है और "तीसरा पेच" तीसरी पत्नी का।

"डैडी को क्या मालूम था कि उन्हीं की छाती पर वह मकान बनने वाला है, जिसका कभी कोई किराया नहीं लेगा"[47] इस पंक्ति में मकान कब्र का प्रतीक है।

लेखिका ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उसका उदाहरण दृष्टव्य है। अशिक्षित एवं ग्रामीण वर्ग की भाषा का प्रयोग भी किया है। जैसे – "जित्ते की तो जान बाकी नहीं उत्ता हुक्का पी जाते हैं।"[48] बाल पात्रों की भाषा से भी उनके शिक्षित होने का आभास होता है। जैसे –"मामा, हीटर बन्द कर दें?" टिंकू ने (माँ से) पूछा।[49]

तुक साम्य, ध्वन्यात्मक एवं युगल शब्द

बाल-बच्चे, लेन-देन, जवान-जवान, खड़ी-की-खड़ी, इकका-दुक्का, कहाँ-से कहाँ,[50] गरम-गरम, पेड़-पौधे, ठंडी-ठंडी, उलट-पुलट,[51] अस्त-व्यस्त, काम-करते-करते, अकेले-ही-अकेले, शादी-शुदा, नस-नस[52]।

मुहावरे एवं लोकोक्तियां

रेत पर बनी गीली लकीर[53], आंख भर जाना, मति मारी जाना[54], मन भर जाना[55], बाज आना, सिर चढ़ाना[56], सांप सूंघ जाना[57]।

ध्वनि सूचक शब्द

सर्र-सर्र,[58] धम-धम[59]।

लेखिका ने सूक्ति वाक्यों, उपमाओं, आदि का प्रयोग करके आलोच्य संग्रह को और सौन्दर्यमय और प्रवाहशील बनाया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(च) प्रतिपाद्य विषय-उद्देश्य

"एक और सैलाब" संग्रह में लेखिका ने नारी समस्याओं को ही उभारा है।

"एक और सैलाब" कहानी में लेखिका ने नारी की आर्थिक समस्या को प्रस्तुत किया है। नायिका का अपने बीमार पति की हत्या करने का कारण धन का अभाव ही था। जीवन की भाग-दौड़ और खर्चों से नारी इतनी तंग आती है कि वह अपराध करने के लिये विवश हो जाती है। अपराध करने से उसके मन में कोई अपराध भावना नहीं आती, बल्कि वह राहत की सांस लेती है। एक अपराध करने से उसकी सारी समस्याएं हल नहीं होती लेकिन एक समस्या या कुछ समस्याओं का समाधान तो होता है, लेकिन भले ही ऐसा करने से वह अपने मित्रों की सहानुभूति खो बैठे।

"सिर्फ एक आदमी" में लेखिका ने नारी के पुरुष पर आश्रित होने की समस्या को दिखाया है। नारी को जीवन भर एक पुरुष के नियंत्रण में जीना पड़ता है, चाहे फिर वह पुरुष पिता हो, पति हो या पुत्र हो। नारी कभी भी अपनी इच्छानुसार कार्य नहीं कर पाती, अपने जीवन का निर्णय स्वयं नहीं कर सकती। पुरुष की नीचता यह है कि उसे नारी की इच्छाओं और भावनाओं का कोई सम्मान नहीं। यदि नारी विद्रोह करे, अपनी इच्छा प्रकट करे तो पुरुष उसे पीटने से भी नहीं हिचकिचाता। नारी का जीवन भर दुख सहती है किन्तु किसी की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती। इस प्रकार नारी का रक्षक ही उसका भक्षक बन जाता है और नारी उसकी मृत्यु की कामना करने लगती है, चाहे फिर वह उसका पिता ही क्यों न हो।

"तीसरा पेच" में लेखिका ने पुरुष की नीचता और नारी की अहं भावना का चित्रण किया है। पुरुष नारी को धोखे में रख कर अपना स्वार्थ निकाल लेना चाहता है। सच्चा प्यार और सच्चा विश्वास देना वह जानता ही नहीं। किन्तु नारी का अहं इस बात को सहन नहीं कर पाता कि पुरुष उससे छल करे। नायिका नायक की तीसरी पत्नी होना स्वीकार करती है लेकिन जब उसे पता चलता है कि वह उसके जीवन की तीसरी स्त्री नहीं है और उस चरित्रहीन पुरुष के कई स्त्रियों से सम्बन्ध हैं, तो नायिका अपना निर्णय बदलती है। हो सकता है कि पुरुष अपने जीवन की कठोर से कठोर या नीच बात भी नारी से कहे तो वह सहन कर लगी लेकिन झूठ, धोखा, उसके अहं और नारी मन को ठेस पहुँचाता है।

"बन्द कमरों की सिसकियाँ" में लेखिका का उद्देश्य इस बात को उभारना है कि नारी स्वयं को पुरुष के बिना अधूरा-सा अनुभव करती है। संतान के बिना और आर्थिक तनाव में तो वह जैसे-तैसे जी लेती है, लेकिन पति की मृत्यु के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद वह स्वयं को अकेला समझती है। नारी का वास्तविकत सुख और धन तो पति का साथ और स्नेह होता है जिसके सामने संसार के सब सुख फीके पड़ते हैं। "वीराने" कहानी में भी नारी मन की इसी कोमल भावना को प्रकट किया गया है। एक नारी जिसके पति की मृत्यु हो गई है, वह समाज और अपनी दृष्टि में तो विधवा है ही, लेकिन एक कुंवारी लड़की अपने मनमीत की मृत्यु के बाद भी मन में उसकी पूजा करती है। समाज की नज़रों में तो वह कुंआरी है लेकिन मन से वह विधवा है। वह विधवा की तरह जीती भी है। नारी जीवन की यह वास्तविकता है कि वह पुरुष के अधीन नहीं रह सकती, लेकिन पुरुष के बिना भी नहीं रह पाती। पुरुष के बिना उसका जीवन वीरान सा और नीरसता से भर जाता है।

"छोटे मन की कच्ची धूप" कहानी में भी नारी अपने मृत पति की याद में जीती है। इस कहानी में लेखिका ने एक मां का बड़प्पन भी दिखाया है। वह अपने बच्चों की हर सुविधा और भावनाओं का ध्यान रखती है, चाहे उसे स्वयं कष्ट सहना पड़े, चाहे उसकी अपनी भावनाओं को ठेस लगे।

"उसका घर" कहानी में नई पीढ़ी पर चोट की गई है। एक पुरुष जीवन भर कठोर परिश्रम करके घर बनाता है और अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा कर स्वयं कमाने और सम्मान से जीने के योग्य बनाता है, लेकिन बुढ़ापे में उसे अपने ही बच्चे अपमानित करते और दुत्कारते हैं। जिस पिता ने उन्हें इज्जतदार बनाया, वही बच्चे उसे अपनी इज्जत की दुहाई देते हैं। वह वृद्ध पुरुष अपनी बीमारी और बुढ़ापे के कारण अपने बच्चों के कटु-व्यवहार को सहकर जीने के लिए विवश है।

"चुटकी भर समर्पण" में भी लेखिका ने नारी के पुरुष पर बिना सोचे-समझे विश्वास करने और पुरुष के विश्वासघात का चित्रण किया है। नारी पुरुष को अपना सहारा समझकर उससे विश्वास, स्नेह चाहती है, लेकिन पुरुष उसे खिलौना समझकर उससे खेलता है और स्वार्थ पूरा होने पर अपना पीछा छुड़ाता है और नारी पर विश्वास ही नहीं करता और नारी के पास पुरुष को विश्वास दिलाने का कोई साधन ही नहीं होता। यदि एक नारी, विशेषकर विवाहित नारी घर से किसी अन्य सहारे की तलाश में किसी पुरुष के सामने समर्पण करती है तो उसे विश्वासघात, दुख, आत्मग्लानि और पति से विश्वासघात करने की अपराध भावना के सिवा कुछ नहीं मिलता।

आलोच्य कहानी-संग्रह में लेखिका ने नारी जीवन की समस्याओं, सामाजिक बुराइयाँ, पुरुष का नारी के प्रति कठोर व्यवहार का चित्रण किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संदर्भ

1. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "सिर्फ एक आदमी", पृ॰ 17, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
2. वही, पृ॰ 18.
3. वही, वही संग्रह - कहानी "तीसरा पेच", पृ॰ 32.
4. वही, पृ॰ 34.
5. वही, पृ॰ 35.
6. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "बन्द कमरों की सिसकियां", पृ॰ 47, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
7. वही, वही संग्रह - कहानी वही, पृ॰ 51.
8. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "उसका घर", पृ॰ 66, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
9. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "उसका घर", पृ॰ 70, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
10. वही - वही संग्रह - कहानी "छोटे मन की कच्ची धूप", पृ॰ 74.
11. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "छोटे मन की कच्ची धूप", पृ॰ 80, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
12. वही, वही संग्रह - कहानी "वीराने", पृ॰ 89.
13. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चुटकी भर समर्पण", पृ॰ 117.
14. वही।
15. वही, पृ॰ 119.
16. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "एक और सैलाब" पृ॰ 1, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
17. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 4.
18. वही, वही - कहानी "सिर्फ एक आदमी", पृ॰ 15.
19. वही, पृ॰ 17.
20. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "बन्द कमरों की सिसकियाँ", पृ॰ 46, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
21. वही।
22. वही, पृ॰ 49.
23. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "छोटे मन की कच्ची धूप", पृ॰ 79.
24. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "वीराने", पृ॰ 89.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

25. वही, पृ० 81.
26. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चुटकीभर समर्पण", पृ० 116, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
27. वही, पृ० 115.
28. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "सिर्फ एक आदमी", पृ० 12.
29. वही, वही संग्रह - कहानी "बन्द कमरों की सिसकियाँ", पृ० 51.
30. वही, वही - कहानी "एक और सैलाब", पृ० 5.
31. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब", कहानी "तीसरा पेच", पृ० 35.
32. वही - संग्रह वही - कहानी "उसका घर", पृ० 65.
33. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "वीराने", पृ० 82.
34. वही, वही संग्रह - कहानी "एक और सैलाब", पृ० 2.
35. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "एक और सैलाब", पृ० 1, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
36. वही - वही संग्रह - कहानी "सिर्फ एक आदमी", पृ० 13.
37. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "तीसरा पेच", पृ० 34, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
38. वही, पृ० 29.
39. वही - वही संग्रह - कहानी "बन्द कमरों की सिसकियां", पृ० 49.
40. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "उसका घर", पृ० 67.
41. वही, पृ० 62.
42. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "छोटे मन की कच्ची धूप", पृ० 78, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
43. वही, वही संग्रह - कहानी "वीराने", पृ० 86.
44. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चुटकीभर समर्पण", पृ० 115, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
45. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब", संग्रह में संकलित कहानी, "चुटकी भर समर्पण", पृ० 119, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
46. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "तीसरा पेच", पृ० 34.
47. वही, वही संग्रह - कहानी "वीराने", पृ० 86.
48. वही, वही संग्रह - कहानी "उसका घर", पृ० 62.
49. वही, वही संग्रह - कहानी "छोटे मन की कच्ची धूप", पृ० 73.
50. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "बन्द कमरों की सिसकियां", पृ० 45, 46, 50, 51.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

51. वही, वही संग्रह - कहानी "वीराने" पृ॰ 83, 84, 87.
52. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चुटकी भर समर्पण", पृ॰ 113, 114, 119, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
53. वही, वही संग्रह - कहानी "एक और सैलाब", पृ॰ 4.
54. वही, वही संग्रह - कहानी "सिर्फ एक आदमी", पृ॰ 15, 16.
55. वही, वही संग्रह - कहानी "बन्द कमरों की सिसकियाँ", पृ॰ 52.
56. वही, वही संग्रह - कहानी "वीराने", पृ॰ 85, 88.
57. वही, वही संग्रह - कहानी "चुटकी भर समर्पण", पृ॰ 112.
58. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "उसका घर", पृ॰ 62, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
59. वही, वही संग्रह - कहानी "सिर्फ एक आदमी", पृ॰ 10.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

षष्ठ अध्याय

"सोने का बेसर" की कहानियों का मूल्यांकन

"सोने का बेसर" नामक कहानी-संग्रह का प्रकाशन सन् 1991 में हुआ है।

"सोने का बेसर" नामक कहानी में नायिका तन से और समाज की दृष्टि से किसी ओर की है, किन्तु मन सदा किसी और के लिए दुआ करता है, तड़पता है। फिर भी किसी भी सीमा का उल्लंघन नहीं करती। बहू, बेटी, पत्नी, प्रेमिका हर रूप में वह अपने कर्त्तव्यों का पालन करती है। "अपने होने का एहसास" में नायिका जीवन-भर अनचाहे रूप में जीती है। उसे कभी भी यह एहसास नहीं हुआ कि वह भी किसी के लिए जरूरी है। उसके जीवन भर की हार जब जीत में बदल जाती है जब उसका बेटा उसे अपनी प्रेरणा बता कर लेने आता है। "क्यों नहीं" में नायिका जीवन की पहली राह पर ठोकर खाकर टूट जाती है। माँ के सहारे और अपने बल पर वह उठ कर संसार में अपना स्थान बना लेती है। "ओढ़ना" में नायिका को उसकी इच्छा के विरुद्ध शरीर का पेशा करने के लिए अपने ही घर वाले विवश करते हैं। कई जंजीरों के होते हुए भी वह इस गंदगी से भाग कर अपने प्रेमी के पास इस आशा से जाती है कि शहर जाकर पवित्र गृहस्थ जीवन जियेगी। "जुगनू" की नायिका के मंगेतर ने ऐसा अपराध किया कि नायिका के घर वाले उनकी सगाई तोड़ देते हैं। सबके लिए शायद सगाई का टूटना छोटी सी बात थी, लेकिन नायिका जीवन भर इस दुःख से पीड़ित रहती है।

इस प्रकार लेखिका ने प्रस्तुत संग्रह में नारी मन की कोमलता और पवित्रता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को प्रस्तुत करने के अतिरिक्त सामाजिक बुराइयों, नारी पर होने वाले अत्याचारों को भी प्रकाश में लाया है।

(क) कहानियों का कथ्य

"सोने का बेसर" नामक कहानी कुमकुम के जीवन पर आधारित है। कुमकुम की सगाई देबू से होने वाली थी। "जिसके साथ मन की डोर बंधी थी, आज उसी के साथ जीवन की डोर बंधने जा रही थी।"[1] सब को आशा थी कि देबू कॉलेज का चुनाव जीतकर सगाई के लिए आएगा। अचानक खबर आई कि देबू को पुलिस पकड़ कर ले गई क्योंकि उसने अपने दोस्त के पेट में गोलियाँ चलाई थीं, जिसने देबू से धोखा करके चुनाव जीता था। गाँव के मुखिया और अन्य लोगों के सुझाव से कुमकुम की सगाई देबू के छोटे भाई–श्याम–से कर दी गई। कुमकुम चाहकर भी इंकार न कर सकी।

कुमकुम ब्याह करके एक अजनबी व्यक्ति के साथ अजनबी दुनिया में चली गई। "पुरानी टीस, पुरानी पीड़ा अब उतना जी नहीं दुखाती थी। अब धीरे-धीरे रमने लगी। अब वह एक गृहस्थिन, एक बच्चे की माँ बन गई थी।........"[2] सात साल बाद देबू जेल से छूट कर आया तो कुमकुम के "भीतर की कसक, सीलन और पीड़ा से भरा झौंका फिर उसे हिला गया, थर्रा गया।"[2] जिस व्यक्ति पर देबू ने गोलियां चलाई थीं, वह बच गया था, इसीलिए देबू जल्दी छूट गया था। "देबू के लौटते ही पति ने जैसे आँखे फेर ली थीं। शक का साँप कुंडली मार कर उसकी आँखों में बैठ गया था।.......... उसे बस अपमानित करने का ही जैसे मौका देखा जाता। .... पति रोज उसके शरीर से अपने जिस्म की आग बुझाता, फिर उसे घृणा से देखता।"[4]

देबू ने कुमकुम के लिए जेल जाने से पहले सुनार को बेसर बनाने को कहा था। आज जब सुनार ने वह बेसर दिया तो उसने वह माँ को देकर कुमकुम को देने के लिए कहा। कुमकुम ने वह बेसर सास के कहने पर पहन लिया। "देबू जब खाना खाने बैठता तो कनखियों से एक बार बेसर को जरूर देख लेता था।"[5] देबू को रोज रात को खांसी और बुखार सताने लगा। कुमकुम ने सास के साथ मिलकर देबू की खूब सेवा की पर वह दम तोड़ बैठा। उसी दिन कुमकुम ने सोने का बेसर उतार दिया। उसकी सूनी नाक देख कर सास चौंक पड़ी, लेकिन सब समझते हुए वह चुप हो गई और उसे गले से लगाकर रोने लगी। कुमकुम भी फूट-फूटकर रो पड़ी। "उसे लगा जो पत्थर इतने वर्षों से उसके सीने पर धरा था, वह धीरे-धीरे बर्फ की तरह पिघल रहा है।"[6]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अपने होने का एहसास" में एक अनाथ लड़की को अपनी बुआ मनहूस कह-कहकर पालती है और फिर बिना दहेज और खर्चे के एक विधुर से ब्याह देती है। पति के घर भी उसे सम्मान और स्नेह न मिलकर उलाहने, घृणा और मार-पीट ही मिली। पति हर पराई स्त्री से मुस्कराहटों और नैनों की भाषा का आदान-प्रदान करता लेकिन उसे नौकरानी की तरह रखता था। बेटे का जन्म हुआ तो सोचा, "कम-से-कम अपने बेटे की माँ के रूप में ही वह उसकी इज्जत करेगा, पर यहाँ भी भाग्य ने उसे मात दी।"[7] पति बेटे को हर बात पर डांटता, सलीका सिखाता लेकिन वह किसी बात पर डांटती तो उल्टे पति बेटे के सामने उसे लज्जित करता। वह जिस बात के लिए मना करती, उसी फरमाइश को पूरा करने का पति आदेश देता। बेटा कोई गलती करता तो उसका दोषी माँ को बताया जाता। पिता बेटे को अंग्रेजी ज्ञान सिखाता और वह धार्मिक ओर घरेलू ज्ञान देती। आखिर बेटे को बिगड़ता देख पिता ने बेटे को शहर पढ़ने के लिए भेज दिया और वह अपनी दोहरी हार देखती रह गई।

आज उसका बेटा–राजन–शहर से आई०पी०एस० करके घर आ रहा था और आज ही पिता ने बिना उससे पूछे और बिना उसकी माँ की राय जाने, उसकी सगाई एक अमीर बाप की नकचड़ी, इकलौती, मर्दाना कपड़े पहनने वाली, अंग्रेजी बोलने वाली लड़की से करने की सारी तैयारियाँ कर रखी थी। लेकिन पिता का सारा जोश ठंडा हो गया, जब राजन अपने साथ पढ़ने वाली एक सीधी-साधी लड़की से ब्याह करके उसे अपने साथ लाता है। बाप-बेटे में काफी झगड़ा हुआ, राजन कह रहा था, "जिस औरत को आप उम्र भर चींटी समझकर पैरों तले रौंदते रहे, वही मेरी आराध्य देवी रही। माँ ही मेरा आदर्श रूप रही और मैंने उसी की तरह एक सीधी-सादी लड़की को अपना जीवन साथी भी चुना है। तुम जीवन भर जिसके साए से भी मुझे दूर रखते आए, वही साया जीवन भर मुझ पर छाया रहा,......."[8] वह (माँ) सब चुपचाप सुन रही थी। उसे अपने कानों पर भी विश्वास नहीं हो रहा था। बहू-बेटा उसे अपने साथ शहर ले जाने आए थे। वे दोनों उसके पांव छूकर आशीर्वाद लेते हैं। बहू-बेटे को गले से लगाकर उसका रोम-रोम खिल उठा और आँखों में आंसू उमड़ आए–"जैसे आज पहली बार अपने होने का, जिंदा रहने का एहसास शिद्दत से हुआ।"[9]

"क्यों नहीं" कहानी में लेखिका ने एक असहाय नारी को आत्मनिर्भर होते दिखाया है।

गुड़िया अपने पड़ोस में रहने वाले एक युवक–दिनेश–से प्रेम करती है। गुड़िया के माता-पिता उसे दिनेश से विवाह करने की अनुमति केवल इसलिए देते हैं कि दिनेश आई०ए०एस० कर रहा है। पति के मना करने पर भी गुड़िया की माँ उन्हें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलने-जुलने की छूट देती है। अचानक दिनेश के घर से उसकी माँ के बीमार होने का समाचार आता है। दिनेश घर चला जाता है। "माँ-बाप को दिखाने के लिए दिनेश ने गुड़िया के कई फोटो रख लिए।"[10] कई दिनों के बाद दिनेश को खत आया, जिससे पता चला कि दिनेश की माँ ने मरने से पहले अपने सामने दिनेश का ब्याह अपनी बहन की अनाथ लड़की से कर दिया। गुड़िया के सारे सपने टूट गए। गुड़िया ने खुद को कमरे में बंद कर लिया। उसे खाने-पीने, बाहर जाने की कोई सुध न थी। आखिर उसकी माँ ने अपने भावुक मन पर काबू करके गुड़िया को सान्त्वना दी और सब भूल कर स्वयं आई॰ए॰एस॰ करके दिखाने को कहा। गुड़िया को जीने की नई राह मिली और उसकी आंसू भरी आँखों में नई राहत, नई चमक आई।

आज जब गुड़िया आई॰ए॰एस॰ हो गई, तो माँ-बेटी दोनों को विश्वास नहीं हो रहा था। सारा घर खुशी से झूम रहा है।

"ओढ़ना" कहानी बांछड़ा जाति की कथा है, जहाँ बहुओं को पर्दे में रहने को कहा जाता है और बेटियों से धंधा करवाया जाता है। इसी जाति की एक लड़की–रानी– को उसके माँ-बाप जाति की परम्परा के अनुसार धंधे पर बैठने के लि विवश करते हैं। वह हर एक से रो-रोकर कहती है कि वह यह काम नहीं करेगी लेकिन उसकी एक न सुनी गई। उसे एक रात डरा धमकाकर, पुचकारकर धंधे पर बिठाया गया और सुबह अनारो बुआ उसे कुएं पर नहलाने और देवी मां के मंदिर माथा टेकने ले गई। मन्दिर में उसकी भेंट एक परदेसी स्कूल मास्टर से होती है।

गाँव के मेले में रानी ने खूब गरबा नृत्य किया क्योंकि वह देवी माँ को प्रसन्न करना चाहती थी ताकि देवी माँ उसका कल्याण करे। मेले में रानी की भेंट फिर उसी परदेसी मास्टर भैरव से होती है, जिसे पहली बार मन्दिर में देखा था। वे दोनों प्रेम बन्धन में बँध गए। रानी मेले के बहाने उसी से मिलने जाती। रानी के भाई ने रानी के पहले ग्राहक चेतन से काफी पैसा लिया था। चेतन का कहना था कि रानी से अब धंधा न करवाके, केवल उसीके लिए रखी जाए, जिसके लिए वह हर कीमत देने को तैयार था। रानी ने धंधा करने से मना किया तो इनाम में माँ की मार ली। रानी की जिद देखकर घरवालों ने उसे मामा के घर भेजने का निर्णय किया। मामा ने रानी को पाँच हजार रुपए में खरीदा। अब मामा रानी को अपने गांव ले जाकर धंधा कराएंगे और ग्यारह वर्षीय सारा को रानी की जगह घर पर ही धंधा करवाएंगे। सारा सब सुनते हुए भी कुछ समझ नहीं रही थी। रानी के भाई और चेतन को जब रानी के सहारे–भैरव–के बारे में पता चला तो वे भैरव का वध करने के लिए उसे ढूंढने लगे। लेकिन रानी ने हिम्मत नहीं हारी। एक रात जब सब मुर्गा, शराब, खाने और बेटियों को धंधे पर बिठाने की तरकीबें बनाने में मस्त थे, तो रानी उस धंधे वाले कमरे के चोर दरवाजे से निकल पड़ी, जो दरवाजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्राहक को लाने-निकालने और पुलिस से बचने के लिए बनााया गया था। "उसे लगा आज यही दरवाजा उसके भाग्य का द्वार हो उठा है।......सोचा, भागने में पकड़ी गई तो मारी जाएगी, पर इस जीने से तो मर जाना अच्छा था।"[11] भागते-भागते वह भैरव के घर पहुंची। वह द्वार की कुंडी खटखटाने से पहले डर गई कि कोई देख न ले। फिर "कुछ सोचा और उसने जल्दी से सिर पर ओढ़ना ओढ़ लिया, एक दम सुहागिनों की तरह फिर उसने जोर से कुंडी खटखटा दी।"[12] उसने मन ही मन भैरव के साथ शहर जाकर पवित्र गृहस्थ जीवन जीने का निर्णय किया।

"जुगनू" कहानी शफकत के जीवन की हादसे की कहानी है। "जब भी वह जुगनू देखती है, उसे हथेली में कैद कर घंटों निहारती थी।...............और उसे बिसरी भूली घटनाएं याद आने लगती थी।"[13] शफकत की भेंट तारिक से अपने ही घर पर होती है। तारिक को अपनी सहेली के घर पर देख कर वह हैरान हो गई और शरमा कर वहाँ से भाग आई। दूर-दूर रह कर ही उन दोनों का प्यार पलने लगता है। उस दिन शफकत की खुशी का ठिकाना नहीं रहता, जब तारिक की माँ शफकत के माता-पिता से तारिक के लिए शफकत का हाथ मांगती है। अच्छा, खाता-पीता और खानदानी घर देखकर शफकत के माता-पिता मान गए और उनकी सगाई कर दी जाती है।

एक दिन सारे शहर में हलचल मची कि तारिक के घर के नौकर पीरू बावरची की पागल लड़की गुलशन ने कुँए में कूद कर आत्महत्या कर ली है। लेकिन लाश की जांच करने पर पता चला कि गुलशन के पेट में छह माह का गर्भ था। "जब गुलशन पाँच बरस की थी, तब उसके बाप ने उसे ब्याह दिया था, पर वह दूसरे दिन ही अपने ससुराल से अकेली भाग आई तो फिर नहीं गई।........."[14] पुलिस गुलशन के पिता को पकड़ कर ले गई। सात दिन भूखा-प्यासा रखा तो सातवें दिन सुबह नाश्ता मांगकर उसने साफ-साफ कहा कि उसने खुद गुलशन को गर्भवती देखकर कुँए में धकेल दिया है। उसने कहा कि–तारिक तब भी शहर से घर आता था, वह गुलशन को बुलवा कर उसकी जवान देह से खेलता था। सारे नौकर इस बात को जानते थे। पीरू ने भी इस बात को बड़ी बात नहीं समझा। गुलशन पागल थी। उसे अपने शरीर से खिलवाड़ होने, गर्भवती होने की कुछ समझ न थी। पेट बढ़ने पर शक हुआ। दाई को दिखाया तो उसने गर्भ गिराने से इन्कार किया क्योंकि उसके महीने पूरे हो गए थे। बात फैल सकती थी क्योंकि सब नौकर इस बात से परिचित थे। तारिक मालिक को बदनामी और बरबादी से बचाने के लिए पीरू ने गुलशन को कुँए में धकेल दिया।

वास्तविकता जानने के बाद शफकत के अब्बा ने बहुत लोगों के मना करने और तारिक के घर वालों को समझाने पर भी सगाई तोड़ दी। इस हादसे से शफकत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीमार हो गई। उकसे माता-पिता उसे दार्जिलिंग ले गए। धीरे-धीरे शफकत का दुख थम गया लेकिन खत्म नहीं हुआ और ना ही वह तारिक को माफ कर पाई। तारिक की मां ने पुलिस अफसर के सामने गिड़गिड़ाकर और अपने खानदान का वास्ता देकर तारिक को बचा लिया था और सज़ा पीरू बावरची को हुई थी। उम्र भर का दुख और सजा तो शफकत को भी मिली थी।

बरसों बाद बस स्टैंड पर तारिक को पुलिस की वर्दी पहने पुलिस-जीप से उतरते देखकर शफकत हैरान हो गई। "जो दो लड़कियों की जिंदगी का कातिल था और जिसे जेल की कोठरी में होना था, उसे पुलिस का हाकिम अफसर देख कर वह हैरान थी।"[15] आज तारिक के बीबी-बच्चे थे और शफकत आज भी अपना दुख लिए अकेली थी।

(ख) प्रमुख पात्र

"सोने का बेसर" कहानी की नायिका कुमकुम है। दुर्भाग्यवश उसकी शादी अपने प्रेमी देबू से न होकर उसके छोटे भाई श्याम से होती है। एक आदर्श बेटी की भांति अपने कुल की मर्यादा की रक्षा के लिए उसने न चाहते हुए भी विवाह कर लिया। लेकिन ब्याह के उपरान्त भी वह स्वयं को कुंआरी नदी की भांति कुंआरी समझती है। "जब पहली बार अम्मा (सास) उसे और उसके पति को ब्याह के फूल ठंडे कराने कुंआरी नदी पर ले गई थी, तो उसने ब्याह के फूल बतासे नदी की गोद में डालकर, दोनों हाथों की अंजुली में कुंआरी का जल लेकर नमन किया था और मन ही मन बोली थी, "माँ, तुम शरीर और मन दोनों से कुंआरी हो, पर मैं केवल मन से कुंआरी हूँ, मुझे क्षमा करना, मेरे मन के साथी को बल देना, उसकी रक्षा करना।"[16] विवाहित होते हुए भी उसका मन प्रेमी की कुशल कामना करता। लेकिन फिर भी एक आदर्श पत्नी की तरह उसने अपने पतिव्रत धर्म का पालन किया। वह शांत रहकर सबकी आज्ञा मानती। "उसके मन में किसी के लिए द्वेष, प्रतिशोध, प्रतिक्रिया और दुर्भावना नहीं थी, बस उसके मन में अवसादपूर्ण ठंडापन आ गया था।"[17]

देबू का अकेलापन, खांसी, बुखार, उसे चिंतित करता था। और वह रात भर जाग कर काढ़ा बना कर सास को देबू को पिलाने के लिए देती थी। लेकिन वह कभी देबू के सामने बिना पल्ला डाले न गई और न ही कभी उससे बात की। फिर भी उसे पति की घृणा, शंका भरी आँखों का सामना करना पड़ा।

कुमकुम भारतीय समाज की एक आदर्श नारी का प्रतीक है। जिसके कई रूप हो सकते हैं। किन्तु हर रूप में वह अपनी मर्यादा की रक्षा करती है, चाहे उसे घुट-घुटकर ही क्यों न जीना पड़े।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अपने होने का एहसास" की नायिका कुण्ठित, और अकेलेपन, अपमान, उपेक्षा से पीड़ित है। वह जीवन भर स्नेह, अपनेपन और सच्चे साथी के लिये तड़पती है। "जनमते ही पिता मर गए, थोड़ी बड़ी हुई तो माँ चल बसी। बुआ ने मनहूस कह-कहकर पाला।..........."[18] पति जो सदा एक रूपवती कन्या के सपने देखता था, उसने कभी इस साधारण, सीधी-सादी स्त्री को अपना नहीं माना। "माँ के मरने के बाद ऐसा चाहने वाला उसे कोई नहीं मिला, वह सारी उम्र इस एक झूठ को ही सुनने को तरसती रही, कलपती रही, पर कहीं नहीं लगा कि वह किसी के लिए जरूरी है।"[19] पति के स्नेह से वह अपरिचित थी। पति के लिए वह अनपढ़, निपट गंवार, फूहड़ औरत थी जिसका काम घर सम्भालना और पति के शराब के नशे को उतारना था। पति के सहज रूप का उसने जाना ही नहीं था। पति उसके सामने शराब के नशे में नाचनेवालियों की तारीफ करता और फिर आवश्यकता पड़ने पर उसके उसी घिनौने शरीर से खेलता जिसे दिन भर लातें मारता रहता है। एक बार उसके हाथ से चिलम गिर कर टूट गई तो चिलम का बदला उसके शरीर से जूते पहने लातों से लिया गया। वह पूरा दिन चूल्हा जलाए बैठी रहती क्योंकि पति दिन में कभी भी खाना खाने आ सकता था और खाना तैयार न होने या ठंडा होने पर मार-पीट, गाली-गलौच सहनी पड़ती।

समाज में ऐसी कई नारियां हैं जिनको घर में सम्मान नहीं दिया जाता और घर की किसी भी बात में नारी की राय, इच्छा नहीं जानी जाती। कहानी की नायिका भी उसी वर्ग की नारी है। जीवन के अकेलेपन से आक्रान्त, अपमान और उपेक्षा से पीड़ित, "वह कभी भी संसार से जुड़ नहीं पाई। जहाँ रही वैरागन की तरह रही, जीने का धर्म निबाहती रही.........."[20]

"क्यों नहीं" कहानी की गुड़िया कॉलेज में पढ़ने वाली एक नवयुवती है। दिनेश के साथ उसकी भेंट अपने ही घर में होती है। पहली भेंट में ही वह दिल खो बैठती है। एक साधारण युवती की तरह वह भी अपने प्रथम प्रेम को अपनी मंजिल समझती है। वह अधिक से अधिक समय दिनेश के साथ बिताना चाहती है। उसके सीधे-सादे स्वभाव में परिवर्तन आने लगता है। "गुड़िया अब ढंग से सजने-संवरने लगी थी। घंटों शीशे में अपने को निहारती, घंटों में नहाकर निकलती।"[30] घर में सब को गुड़िया और दिनेश के प्यार के बारे में पता चलने पर, वह बेझिझक होकर घंटों बाग में बैठ कर दिनेश से बातें करती। मोह-भंग होने, जीवन के प्रथम प्रेम और प्रथम राह पर ही ठोकर खाने पर वह टूट जाती है। लेकिन उसने अन्य साधारण नारियों की भांति जीवन की एक हार के पीछे अपना सारा जीवन नष्ट नहीं किया, बल्कि साहस करके संघर्ष किया और स्वयं को आत्मनिर्भर बनाया, ताकि वह संसार में सम्मान से जी सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ओढ़ना" कहानी की रानी बांछड़ा जाति की परम्परा के विरुद्ध सुहागिनों की तरह जीना चाहती है, पर उसे पेशा करने के लिए विवश किया जाता है। उसके पहले मुहूर्त पर सारे घर को सजाया गया और खुशी मनाई गई। वह हैरान थी कि जिस घर में उसने जन्म लिया, पली-बढ़ी आज उसी घर में उसके अपने लोग उसे बेइज्जत करने पर तुले हैं। मुहूर्त के दिन उसे दुल्हन की तरह सजाया गया और उसके बालों में फूल लगाए गए। उसे लगा, "..........जैसे इनमें कीड़े ही कीड़े रेंग रहे हों। इच्छा हुई, बालों से नोचकर सारे गजरे खिड़की से बाहर फेंक दे, पर वह ऐसा कोई काम नहीं कर सकती थी, जो आज अपशगुन कहलाए, वरना घर के बड़े-बूढ़े गंडासे से चीर डालेंगे।"[22] वह हर विवाह समारोह पर खूब खुश होकर नाचती थी। उसने "सोचा था, उसका भी ब्याह होगा, पर उसे क्या पता कि माँ-बाप ने बचपन से ही देवी के आगे उसे धंधे पर बिठाने का वचन कर रखा था।"[23] वह हर समय, हर एक से पेशा करने से इन्कार करती रही, लेकिन उसकी एक न सुनी गई। विद्रोह करने पर उसे मार-पीट और गालियां मिलती थी। बात-बात पर हंसने वाली रानी चुप सी हो गई। उसके सारे सपने टूट गए। "बचपन से ही उसके मन में नारी की लुभावनी तस्वीर बसी थी। उसका मन बस उसी को स्वीकारना, निहारना चाहता था। अपने लिए उसने वही रूप सोचकर रखा था।......वही सिर पर ओढ़ना ओढ़े, माथे पर घूंघट खींचे सारे संसार को जीत चुके अंदाज में जीतभरी मुस्कान से दपदपाता चेहरा लिए वह अपने को देखना चाहती थी।"[24] बचपन में सबसे छुपकर वह माँ का ओढ़ना ओढ़कर शीशे में अपना रूप निहारती रहती थी। अपने सपनों को पूरा करने के लिए वह एक दिन साहस करके घर से भाग जाती है।

"जुगनू" की शफकत अपने माता-पिता की इकलौती पुत्री है। वह संकोची, लज्जालू और एकांत प्रेमी युवती है। शफकत की बातूनी माँ हमेशा उसके शांत रहने पर आपत्ति करती है–"दूसरों के बच्चों को देखो, कितने हंसते, खिल-खिलाते हैं और एक यह जो हमेशा मुँह में मूँग भरे रहती है।"[25] शफकत का मंगेतर तारिक उसकी माँ से मिलने के बहाने शफकत को देखने आता था। वह शरमाई सी दूर से छुप-छुप कर से देखती रहती।

शफकत की पक्की सहेली रेहाना थी। वे "दोनों टूटीकार पर उचककर बैठ जाती और हथेली पर नमक लिए आम, अमरूद या इमली कुतरती रहती, या वहीं खड़िया से घर खींचकर बिल्ला खेलती।"[26]

तारिक से सगाई के बाद उसने तारिक के घर जाना छोड़ दिया। किसी विशेष अवसर पर माँ के साथ जाती थी। वह दिन शफकत के जीवन का सबसे बुरा दिन था, जब तारिक की गलती के कारण उसकी सगाई टूट गई थी। आज शफकत डॉक्टर बन गई है। लेकिन उसके मन की चोट इतना समय बीतने और प्रौढ़ होने पर भी ताजी है। आज शफकत के अब्बा-अम्मी का देहान्त हो गया है और वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का बोलना अपशगुन मानना, बीमार के लिए जादू-टोटके करना आदि। कहानी में भिंड और ग्वालियर जगहों के अतिरिक्त बीहड़ जंगलों और वहाँ के डाकुओं का उल्लेख भी हुआ है।

"अपने होने का एहसास" में भी मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। दिखावा करने का अधिक चलन मध्यवर्ग में ही है, इस बात को लेखिका ने भी प्रकट किया है–"........मेहमानों से घर भरा था। .....वही घर, जो कभी उदास-अकेला, मकड़ी के जालों से घिरा रहता था, आज नया, लिपा-पुता घर अलग चमक रहा था।"[37]

इस कहानी में समाज में पलने वाले अंधविश्वासों की ओर भी संकेत किया है। जैसे छिपकली गिर कर शरीर को छू जाए तो अपशगुन माना जाता है। इस अपशगुन से बचने के लिए स्नान के करके शरीर पवित्र किया जाता है और पंडित को बुलवा कर इस का फल देखा जाता है आदि।

लेखिका ने नायिका की कुण्ठा और घुटन का चित्रण किया है, जहां नारी देखती ही रह जाती है, उसे अधिकार नहीं दिया जाता है कि वह घर के किसी निर्णय में अपना सुझाव दे।

"क्यों नहीं" कहानी में लेखिका ने शहर में रहने वाले एक मध्यवर्गीय परिवार के वातावरण का चित्रण किया है। परिवार एक अच्छे बंगले में रहता है। बंगले में आसपास शांति, बड़े भाग, पेड़ों का झुण्ड है। परिवार के सदस्यों पर आधुनिकता की छाप है।

"बेटी की शादी की बात सुनकर माँ प्रसन्न होती है, लेकिन बेटी से जुदा होने के ख्याल से दुखी होती है। लेखिका ने भी माँ की ऐसी ही दोहरी मानसिक स्थिति का चित्रण किया है–

"मैं ढेर-ढेर सपने बुनने लगी थी।........................

ढेर सारे मेहमान, उपहार, दावत, जश्न, बैंड।......बरात आई है।......सब दूल्हा-दुल्हन को देख रहे हैं।......गुड़िया विदा हो रही है। ....हाय लड़की को कैसे विदा दूं? आँख से आंसू बहने लगते हैं और बैठे-बैठे रोना शुरू कर देती हूँ.........."[38] लेखिका ने पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण करते हुए दिखाया है कि दुःखी, परेशान और मोहभंग होने पर पात्रों को हपले वाला वातावरण ही अनजाना और अजीब लगता है।–"अपना ही घर जैसे पराया हो गया था। सब वही पर था, सब कुछ अपने स्थान पर था, सारे लोग वहीं पर थे, पर...........अजीब सा खाली-खालीपन घर के कोने-कोने में समा गया था।......"[39]

"ओढ़ना" कहानी में लेखिका ने बागाखेड़ा नामक गांव की बांछड़ा जाति का वातावरण चित्रित किया है। इस जाति के लोगों का यह अंधविश्वास है कि वे देवी माँ के आगे वचनबद्ध है कि वे अपनी बेटियों को धंधे पर बिठाएंगे और यदि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे इस प्रथा को आगे नहीं चलाएंगे तो देवी माँ नाराज हो जाएगी। कई लड़किगों को तो यह कह कर धंधे पर बैठने के लिए विवश किया जाता है कि उनके पिता ने देवी माँ के सामने बेटी को धंधे पर बिठाने का वचन दिया है और वचन का पालन न करने से उनकी (पिता की) मृत्यु होगी। कई लड़कियों को इतनी कम उम्र में धंधे पर बिठाया जाता है कि वे इस बात का अर्थ ही नहीं समझती और फिर इन्कार की संभावना ही नहीं रहती। प्रथा के अनुसार एक बेटी से धंधा करवाना आवश्यक है, बाकी बेटियों का विवाह भी किया जा सकता है। लेकिन धन के लोभ में लोग दो-तीन बेटियों से धंधा करवाने से नहीं हिचकिचाते।

घर में किसी लड़की का मुहूर्त हो तो सारा घर सजाया जाता है और अच्छे पकवान बनाए जाते हैं और लड़की को दुल्हन की तरह सजाकर उसको पहले मुहूर्त के लिए धंधेवाले कमरे में बिठाया जाता है। "घर में सारी रात ढोलक ढमकती रही। धंधेवाली औरतों ने खाना खाया फिर सबने देवी के गीत गाए, खुशियाँ मनाई। कुंआरी कन्याओं ने नृत्य किये। सुहागिनें अपनी-अपनी दहलीज पर से झांक-झांक कर देखती सुनती रही।....."[40] सुहागिनों को इस समारोह में भाग लेने की अनुमति नहीं है।

लेखिका ने गांव के वार्षिक मेले, गरबा मेले, का उल्लेख किया है। यह मेला नौ दिन का है, लेकिन चलते-चलते पूरा महीना चलता है। आसपास के सारे गांव इस मेले की राह देखते हैं और फिर दूर-दूर से लोग आकर अपनी दुकानें सजाते हैं। लोग हफ्तों पहले देवी माँ के मन्दिर में चढ़ावा चढ़ाने आते हैं। देवी का रोज नया सिंगार किया जाता है। मेले में झूले लगते, ढोल ढमके, पटाखे, जय-अम्बे की गूंज चलती रहती। मेले में हर चीज मिलती। इसीलिए, औरतें, मर्द, बच्चे, बूढ़े, मजदूर, सब साल भर के लिए चीजें ले जाते हैं। मेले में लड़कियां नाचती, रास खेलती और गीत गाती हैं। लेखिका ने गरबा मेले में गाए जाने वाले एक लोकगीत का उल्लेख भी किया है-

"म्हारा आंगण भी आवजोरी माँ,
आवीने गरबा जमाव जोरी माँ,........."।[41]

"जुगनू" कहानी में एक उच्च वर्ग और एक मध्यवर्ग के परिवारों के रहन-सहन आदि का चित्रण हुआ है। कहानी में मध्यमवर्ग के परिवार में कम जगह होने, सामान से भरे हुए कमरों आदि का स्पष्ट चित्र देखने को मिलता है। उच्चवर्गीय परिवार के सुख, ऐश्वर्य, नौकर आदि से पूर्ण वातावरण का चित्रण भी हुआ है। "भीतर पत्थर वाला बड़ा-सा आँगन था, बीच में कुँआ और कुँए के पास लम्बी सी कमरों की कतार थी, जो नौकरों के रहने के लिए थीं।.....भीतर बड़े-बड़े कमरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे। कमरों में ढेर सारा आलीशान शीशम का नक्काशीदार फर्नीचर सजा था। शेर, भालू की खालें थीं। दीवारों पर बड़ी-बड़ी बंदूकें। सारा घर एक महल की तरह था। बड़े-बड़े शीशे, सर से पैर तक खड़े होकर देखा जा सकता था।"[42]

लेखिका ने एक पुराने रिवाज को प्रस्तुत किया है—जब होटल नहीं थे और यदि कुछ थे तो वहाँ जाकर खाना बुरा माना जाता था। "उन दिनों छोटे शहरों में यह रिवाज था कि जब बाहर से कोई रहने आता था, शहर नें रहने वाले पुराने घराने से खाना बनाकर पहुँचाया जाता था। ....।"[43]

मुस्लिम वातावरण

"जुगनू" मुस्लिम घराने की कथा है। मुस्लिम परिवारों की युवतियों को बचपन से ही सीमाओं में रहना सिखाया जाता है, जिसके कारण वे लज्जालू और संकोची होती है। इस कथा की नायिका भी लज्जालू है। वह सहेली के फूफी के लड़के को देखकर हड़बड़ा कर भाग जाती है, जबकि वह उसे मन ही मन चाहती है।

मुस्लिम परम्परा के अनुसार लड़के वाले ही लड़की वालों के घर रिश्ता माँगने आते हैं। इस परम्परा का उल्लेख लेखिका ने भी किया है।

मुस्लिम वर्ग में भी विशेष अवसरों पर खास पकवान बनते हैं। वे सभी पकवानों में मांस का प्रयोग करते हैं। "आँगन में तरह-तरह के खाने का इंतजाम हो रहा था। अब्बा ने बाहर से खानसामा बुलाया था जो मुर्ग बिरयानी, कोरमा, कोपता, नान, तंदूरी, मुर्ग, मुर्ग मुसल्लम, नरगिसी कोपते, अखनी और तरह-तरह के हलवे बना रहा था।....."[44]

लेखिका ने मुस्लिम समाज में प्रचलित बाल-विवाह की प्रथा की बुराइयों की ओर संकेत किया है। कम उम्र में लड़की होने के कारण वह इस सम्बन्ध को नहीं निभा पाती।"....."जब गुलशन पाँच बरस की थी, तब उसक बाप ने उसे ब्याह दिया था, पर वह दूसरे दिन ही अपने ससुराल से अकेली भाग आई तो फिर नहीं गई।"[45]

मुस्लिम वर्ग में लड़कियों को इस्लाम धर्म के अनुसार पर्दे में रहना और सिर ढकना सिखाया जाता है, जिसके कारण उन्हें अन्य लड़कियाँ चिढ़ाती हैं। –"स्कूल जाते वक्त सिर भी ढकना होता था। सभी मुसलमान लड़कियाँ घर से स्कूल जाते समय सर ढक कर जाती थीं, जिसे देख स्कूल की लड़कियाँ छेड़ती। "क्या तुम्हारा ब्याह हो गया।"[46]

आलोच्य संग्रह में लेखिका ने अधिकतर मध्यमवर्गीय परिवारों का वातावरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने समाज की कई अच्छी-बुरी रीतियों, अंधविश्वासों, सामाजिक स्थिति और नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ड.) भाषा-शिल्प

लेखिका ने वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। अत: लेखिका ने कथा, चरित्र चित्रण आदि का विवरण स्वयं दिया है। "क्यों नहीं" कहानी का आरम्भ अन्तिम घटना से होता है और बाकी पूर्व कथा का विवरण लेखिका ने "फ्लैश बैक" पद्धति से दिया है। इस "फ्लैश बैक" पद्धति की छाया अन्य कहानियों में भी मिलती है। इसी कहानी में लेखिका ने "आत्मकथा पद्धति" का भी प्रयोग किया है। कहानी में एक पात्र–माँ स्वयं अपनी बेटी के जीवन की कथा याद करती है।

"जुगनू" कहानी में सारी घटनाएं आगे-पीछे करके अर्थात् मिश्रित रूप से मिलती हैं। इस कहानी में एक घटना से सारी कथा का प्रवाह और पात्रों की जीवन स्थिति बदलती है, इसलिए यह एक घटना-प्रधान कहानी की जा सकती है। "सोने का बेसर" में वातावरण और भावनाओं का बाहुल्य है। "ओढ़ना" और "सोने का बेसर" लम्बी और विस्तारपूर्ण कहानियाँ है।

आलोच्य संग्रह की सभी कहानियाँ सामाजिक कहानियाँ हैं। इनमें नारी जीवन की व्यथाओं को प्रस्तुत किया गया है। अत: सब कहानियाँ नायिका प्रधान है।

लेखिका ने संग्रह में कई जगहों पर कृत्रिम चिन्हों (......) का प्रयोग किया है।

लेखिका ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण वर्ग से सम्बन्धित होने के कारण पात्रों की भाषा भी ग्रामीण शब्दों से पूर्ण हैं।–

"हे राम जी, यह तो राजन बिटवा की आवाज है।"[47] "छौरी घबरा गई..... "[48] "हाय मइया री, अब तो मरे।"[49] लेखिका ने शहर के शिक्षित वर्ग के पात्रों की भाषा का चित्रण भी किया है–"आंटी, आपने मेरी प्रॉब्लम समाप्त कर दी।"[50]

तुक साम्य एवं ध्वन्यात्मक शब्दावली

मेहमान-ही-मेहमान, बीचो-बीच, चीखती-चिल्लाती, शरमाई सिमटी-सिमटी, खून-खराबा, किस्से-कहानियाँ, हिले-डुले, सही-सलामत, हक्का-बक्का, बनी-बनाई बाजी, समधी-समधन, छेड़-छाड़, रीति-रिवाजों, रातों-रात, फला-फूला, टीका-टिप्पणी, पास-पड़ोस, रेवा-परेवां, जान-पहचान, रात-बिरात,[51] शुभ-अशुभ, हक्के-बक्के, किए-कराए, सोए-तो-सोए, कोना-कोना, आदान-प्रदान, मेलों-ठेलों, मित्र-मंडली, माया-मोह, सीधी-सादी, पसंद-नापसन्द, मान-सम्मान[1], काम-धाम, चुपके-चुपके, सजा-संवरा, दुल्हा-दुल्हन, चुस्त-दुरूस्त[53], गाली-गलौच, भूला-भटका, ढोल-ढमाके, गाजे-बाजे, सुध-बुध, भुट्टे-भूंज-भूंज, बिटर-बिटर[3], बोल-बतिया, जोश-शरोश, बहू-बेटियां[55]।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुहावरे

रंग में भंग, बनी बनाई बाजी जीतना, आंख से गिरना, चार चांद लगना, कौड़ी के मोल खरीदना, अपना तीर चलाना, बिजली गिराना, मति मारी जाना, खून-खराबा होना, गुलाल में राख झोंकना[56] किए-कराए पर पानी फेरना, हक्का-बक्का रहना, आंख भर आना, बैर पालना, मात देना, शह पाना, सिर खून चढ़ना, घूरे के दिन फिरना, वावैला करना[57], तबीयत खराब होना, हामी भरना, सपना टूटना[58], खड़ी फसल में आग लगाना, दिल हारना, नाक नीची होना[59], मुंह में मूंग भरना, भांय-भांय करना, खुलकर सांस लेना, गप्पे सुनाना[60]।

ध्वनिसूचक शब्द

खों-खों, थू-थू, हुआं-हुआं[61], चख-चख[62], चूं-चूं, ठक-ठक, म्याऊं-म्याऊं[63], सर्रर, गट-गट[64]।

लेखिका ने सुन्दर शब्दावली, मुहावरों, उपमाओं, चित्रात्मकता, नारी जीवन से सम्बन्धित सूक्ति वाक्यों का प्रयोग करके संग्रह को और सौन्दर्यपूर्ण बनाया है।

(च) प्रतिपाद्य विषय-उद्देश्य

"सोने का बेसर" कहानी में लेखिका ने जिस यथार्थ को प्रस्तुत किया है, वह यह है कि भारतीय समाज की नारी एक बार मन से किसी को अपना माने तो मरतें दम तक उसे भूल नहीं पाती। दुर्भाग्यवश उसकी शादी किसी और से हो जाए तो वह आदर्श बेटी का कर्त्तव्य निभाते हुए सब कष्ट चुपचाप सहती है। समाज भी नारी की इच्छा जानने की आवश्यकता नहीं समझता। और अपनी और संस्कारों की नाक बचाने के लिए कोई भी निर्णय बिना नारी से पूछे लिया जाता है।

नारी अपनी समस्या समझते हुए भी कुछ नहीं कर पाती। मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह कोई विद्रोह नहीं कर पाती। वह तड़प से भरी दोहरी जिन्दगी जीती है लेकिन किसी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती। लेखिका ने नारी का बड़प्पन और विवशता दिखाते हुए समाज के रीति-रिवाजों पर कठोर आघात किया है। "अपने होने का एहसास" में भी लेखिका ने ऐसे समाज को चित्रित किया है, जहाँ नारी को कोई अस्तित्व नहीं समझा जाता। समाज में ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे, जहाँ नारी केवल एक कठपुतली है। उसे बहू, पत्नी, माँ किसी भी रिश्ते का एहसास या अधिकार नहीं दिया जाता। घर के हर निर्णय पति स्वयं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेता है, पत्नी की इच्छा या सुझाव जानने की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती। यदि वह अपना सुझाव दे भी दे तो उसे अपमानित किया जाता है। पुरुष समझता है, एक नारी को घर और चूल्हे के सिवा कुछ नहीं चाहिए–"औरत को इतना ही तो चाहिए, इतने में ही वह निहाल रहती है।"[65] लेकिन वास्तविकता यह है कि नारी को पूरा सम्मान, स्नेह, अधिकार चाहिए, जो उसे नहीं मिलता। "क्यों नहीं" में इस बात को दर्शाया गया है कि नारी स्वयं आत्मनिर्भर होकर जी सकती है। नारी यदि किसी के सहारे पर जीती है, तो उसे जीवन भर उस सहारे के छूटने या छिन जाने का डर रहता है और फिर ऐसा ही होता है। लेकिन यदि पुरुष ऊँची पद्वी पा सकता है नारी क्यों नहीं? इस बात को नायिका और उसके माता-पिता चोट खा कर समझते हैं। एक पढ़े-लिखे और ऊँची पद्वी वाले लड़के के पीछे भागने से अच्छा था कि माता-पिता स्वयं अपनी बेटी को भी पढ़ा-लिखा कर ऊँची पद्वी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते। "जो व्यक्ति खुद स्वावलंबी होगा, वही दुनिया का सच्चा आनन्द प्राप्त कर सकता है और आत्मनिर्भर होने के लिए साहस, विश्वास, एवं परिश्रम की अति आवश्यकता है। छोटी-छोटी विपत्तियाँ जो हमेशा इन्सान को कमजोर कर देती हैं, इनसे परे हो जाओ, अपने को ठोस बना लो।"[66] लेखिका ने नारी को यह शिक्षा देनी चाही है कि इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुष के दिए हुए दुःखों से स्वयं को नष्ट करके अपना जीवन नष्ट न करके अपने अस्तित्व को, अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करो। इस कहानी का शीर्षक स्वयं एक प्रश्न है–"क्यों नहीं?" यह एक प्रश्न होने के साथ-साथ एक सुझाव भी है। नारी ऊँची शिक्षा पाकर आत्मनिर्भर क्यों नहीं बन सकती? उसे चाहिए कि वह सहारा ढूँढने के बजाय स्वयं इस काबिल बने कि दूसरों का सहारा हो सके। लेखिका ने "ओढ़ना" कहानी बांछड़ा जाति की विवश लड़कियों पर लिखी है, जो सुहागिनों की भांति पवित्र ओढ़ना ओढ़ लेना चाहती है, लेकिन उनका ओढ़ना, उनकी इज्जत सदा के लिए उतार दी जाती है। नायिका की भांति कई लड़कियां इस धंधे में नहीं आना चाहती और यदि आ गई हैं, तो इस गंदगी से छुटकारा पाना चाहती हैं, किन्तु चाह कर भी वह कुछ नहीं कर पाती। आश्चर्य की बात तो यह है कि यदि कोई युवक ऐसी लड़की को अपनाना चाहता है, तो उसको रास्ते से हटा दिया जाता है, चाहे फिर उस युवक का वध ही क्यों न करना पड़े। अपनी बेटी को किसी एक ही पुरुष के लिए रखना भी घरवालों को अच्छा नहीं लगता। घर की बहुओं को पर्दे में रखा जाता है और बेटियो को धंधे पर बैठने के लिए विवश किया जाता है। "बहू के लिए आदमी कैसा खूंखार शेर हो जाता है और बेटी को धंधे पर बैठाता है। यह कैसा नियम है? कैसा कानून है?"[67]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आखिर क्यों इन विवश युवतियों को बरबाद करने का रिवाज है? क्यों नहीं इनको अपनी इच्छानुसार पवित्र जीवन व्यतीत करने दिया जाता? लेखिका को इन नारियों से सहानुभूति है। यह समस्या कई नारियों की है। लेखिका ने नायिका के माध्यम से उन सब नारियों की समस्या को उभारा है और समाज एवं पाठकों के सामने रखा है। "जुगनू" कहानी में भी लेखिका का उद्देश्य नारी मन की विवशता और पुरुष के निश्चिन्त जीवन को दिखाया है। नारी अपने जीवन में खाई हुई चोट कभी नहीं भूल पाती, वह चोट उसे जीवन भर रह-रह कर तड़पाती है। नारी चाहे कितनी ही प्रौढ़ और आत्मनिर्भर क्यों न हो वह अपने नारी मन को नहीं मार पाती। पुरुष पाप करके साफ निकल जाता है और नारी जीवन भर उस पाप की सजा काटती है। वह अपने दिल और भावनाओं के हाथों विवश है और इसी विवशता को वह जीवन भर झेलती रहती है।

आलोच्य कहानी-संग्रह में नारी जीवन की समस्याओं में से कुछ समस्याओं का अध्ययन करके पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है, ताकि पाठक भी समाज में पलने वाले अत्याचारों से परिचित हों और इन पर विचार करने के लिए विवश हों।

संदर्भ

1. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर", पृ॰ 11, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
2. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 21.
3. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 21.
4. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 24.
5. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 29.
6. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 33.
7. वही, वही संग्रह - "अपने होने का एहसास", पृ॰ 41.
8. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 45.
9. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 46.
10. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "क्यों नहीं", पृ॰ 56.
11. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "ओढ़ना", पृ॰ 94.
12. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 94.
13. वही, वही संग्रह - कहानी "जुगनू", पृ॰ 109.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जुगनू", पृ॰ 105, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
15. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जुगनू", पृ॰ 109, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
16. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर" पृ॰ 20, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
17. वही, पृ॰ 21.
18. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ॰ 39, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
19. वही, पृ॰ 38.
20. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ॰ 37, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
21. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "क्यों नहीं", पृ॰ 49, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
22. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 63.
23. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "ओढ़ना", पृ॰ 63.
24. वही, पृ॰ 93.
25. वही, वही संग्रह - कहानी "जुगनू", पृ॰ 100.
26. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जुगनू", पृ॰ 104.
27. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ॰ 44, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
28. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 87.
29. वही, वही संग्रह - कहानी "सोने का बेसर", पृ॰ 22.
30. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "क्यों नहीं", पृ॰ 47, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
31. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 90.
32. वही, वही संग्रह - कहानी "सोने का बेसर", पृ॰ 20.
33. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर", पृ॰ 11.
34. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर" पृ॰ 12.
35. वही, पृ॰ 20.
36. वही, पृ॰ 12.
37. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ॰ 36.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

38. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "क्यों नहीं", पृ॰ 54.
39. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 56.
40. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "ओढ़ना", पृ॰ 66, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
41. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "ओढ़ना", पृ॰ 80, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
42. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जुगनू", पृ॰ 103, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
43. वही, वही संग्रह, वही कहानी, पृ॰ 99.
44. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "जुगनू", पृ॰ 105.
45. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 105.
46. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 101.
47. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ॰ 44, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
48. वही, वही संग्रह, कहानी, "ओढ़ना", पृ॰ 65.
49. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 78.
50. वही, वही संग्रह - कहानी "क्यों नहीं" पृ॰ 53.
51. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर", पृ॰ 11-25, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
52. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का अहसास" पृ॰ 34-45, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
53. वही, वही संग्रह - कहानी "क्यों नहीं", पृ॰ 47, 51, 53, 54, 55, 59.
54. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 69, 77, 78, 80, 81, 88, 93.
55. वही, वही संग्रह - कहानी "जुगनू", पृ॰ 100, 106, 108.
56. वही, वही संग्रह - कहानी "सोने का बेसर", पृ॰ 13, 17, 23, 28, 29, 31, 17, 15.
57. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ॰ 34, 35, 39, 41, 43, 46, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
58. वही, वही संग्रह - कहानी "क्यों नहीं", पृ॰ 50, 54, 58.
59. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 68, 83, 88, 89, 92.
60. वही, वही संग्रह - कहानी "जुगनू", पृ॰ 100.
61. वही, वही संग्रह - कहानी "सोने का बेसर", पृ॰ 29, 32.
62. वही, वही संग्रह - कहानी "क्यों नहीं", पृ॰ 55.
63. वही, वही संग्रह - कहानी "ओढ़ना", पृ॰ 71, 73.
64. वही, वही संग्रह - कहानी "अपने होने का एहसास", पृ॰ 34, 35

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

65. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "अपने होने का एहसास", पृ० 40, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1991.
66. वही, वही संग्रह - कहानी "क्यों नहीं" पृ० 59.
67. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "ओढ़ना", पृ० 91.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सप्तम अध्याय

"अयोध्या से वापसी" की कहानियों का मूल्यांकन

आलोच्य संग्रह में पन्द्रह नायिका प्रधान कहानियाँ संकलित हैं। जिनमें से अधिकांश कहानियाँ इनके पूर्व संग्रहों में भी संकलित हो चुकी हैं। आलोच्य संग्रह की प्रथम कहानी, "अयोध्या से वापसी" की नायिका को मायके और ससुराल दोनों जगहों से सहारा और स्नेह न मिलकर अपमान और उपेक्षा मिलती है, इसलिए वह दोनों जगहों का परित्याग करके अपना जीवन अपने बल पर जीती है। "देहरी की खातिर" की नायिका जीवन भर ढंग से जीने का प्रयत्न करती है, सहारा ढूँढती है। लेकिन बाहर की दुनिया उसे इतना कष्ट देती है कि वह अपने बच्चे को सहारा और देहरी दिलाने के लिए और स्वयं को दुनिया की भूखी नज़रों से बचाने के लिए, निर्दोष होते हुए भी जेल की सलाखों के पीछे सुरक्षित जीवन जीना स्वीकार कर लेती है।

"पत्थरवाली गली" में एक कोमल बालिका अपनी जीविका चलाने के लिए घर-घर जाकर चूड़ियाँ बेचती है। एक शाम जब वह चूड़ियाँ बेच कर लौट रही होती है, तो गांव का बनिया सुनसान जंगल और अंधेरे का लाभ उठाकर उसे बेटी समान बालिका का कौमार्य नष्ट करके उसे जीवनभर का दुख देता है। "अकेला गुलमोहर" की नायिका कमाऊ है और हर महीने अपने वेतन में से दो सौ रुपए बड़े भैया को देती है। यही कारण है कि घर में किसी को उसके ब्याह की चिंता नहीं क्योंकि यदि उसका ब्याह हो जाता तो उसके वह महीने को दो सौ रुपए बन्द हो सकते हैं। इस बात का विश्वास नायिका को तब होता है जब बड़े भैया उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवाह करने की अनुमति नहीं देते। वह बिना किसी के आशीर्वाद के विवाह करने का निर्णय करती है।

"रेगिस्तान" ऐसे नारी-पुरुष के प्रेम की कथा है, जो प्रौढ़ हैं और उनके अपने बच्चे हैं। समाज, बदनामी और घर वालों की अनुमति ने मिलने के कारण पुरुष नायिका को बिना शादी किए हो सम्बन्ध बनाए रखने को कहता है। यह बात नायिका को अपमानजनक लगती है और वह नायक का घर छोड़कर चली जाती है।

आलोच्य संग्रह की कहानियों में नारी जीवन की समस्याओं और नारी की भावनाओं को उभारा गया है।

(क) कहानियों का कथ्य

"अयोध्या से वापसी" कहानी में नायिका अपने पति-राजेन्द्र-से अनबन होने के कारण मायके जाती है, लेकिन ससुराल से अधिक अपमान तो उसे मायके में ही मिलता है और वह पति के घर लौट जाने के लिए विवश होती है पति भी अब जान गया था कि नारी के पास अब जाने के लिए कोई जगह नहीं। "इसलिए अब वह दिलेर हो उठा था। अब उसे परेशान करने, दु:ख देने में, अपमान करने में उसे मजा आने लगा था।........"[1] नीरा सब भूलकर अपना घर संभालना चाहती थी, लेकिन सदा व्यस्त रहने वाला राजेन्द्र अब उसकी हर बात पर नज़र रखता था। वह, "पारखी, ताड़ती, बोलती नज़रों से उसका पीछा करता था, जिसके कारण वह अस्त-व्यस्त हो उठती थी।"[2] नीरा जानती थी कि राजेन्द्र चुपचाप उसकी चिट्ठियां और डायरी पढ़ता है, मानों वह कोई सुराग ढूँढ रहा हो। वास्तव मे "राजेन्द्र के दिमाग में यह शक किसी ने बैठा दिया था कि जो वह मायके चली गई थी उसके पीछे कोई था जिससे वह शादी करती।"[3] एक दिन राजेन्द्र ने नीरा को फिल्म देखने के लिये साथ चलने को कहा तो उसने यह कह कर मना किया कि वह यह फिल्म मायके में देख चुकी है। यह बात सुनते ही राजेन्द्र अपनी सस्ती बातों पर उतर आया, वह उसके मायके के दोस्तों, आशिकों, दूसरी शादी के लिए आए प्रस्तावों को लेकर ताने और गालियाँ देने लगा। नीरा हर समझौता करने के लिए तैयार थी, लेकिन यह अपमान उससे सहा नहीं गया। नीरा ने उसी समय वह घर सदा के लिए छोड़ दिया। नीरा कह रही थी, "..........इससे पहले कि राम की तरह अंधे होकर तुम मुझे निकालो, मैं खुद तुम्हारी अयोध्या त्याग कर जा रही हूं, अब कभी न लौटने के लिए।"[4]

आज नीरा दिल्ली शहर के एक लड़कियों के होस्टल में रहती है।

"देहरी की खातिर" की नायिका-पापा-जेल की सलाखों में रहकर स्वयं को सुरक्षित पाती है क्योंकि बाहर की दुनियां से उसे कष्ट ही कष्ट मिला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहली पत्नी की मृत्यु के बाद पापा के पिता ने अपनी से आधी उम्र वाली को ब्याह कर घर लाया। पहले की तरह वह अब भी रिक्शा चलाता था, "पर जितना कमाता था, उतना शराब पी लेता था या जुए में हार जाता था। घर का दो समय का खर्चा नानी आया (दूसरी पत्नी) ही उठाती थी।"[5] पापा की सौतेली माँ अपना शरीर बेचकर घर चलाती थी, पति ने भी उसे कभी नहीं पूछा कि वह घर का खर्चा कहाँ से लाती है। कहने को तो वह और पापा घर-घर जाकर जाकर काम करती थीं। सौतेली माँ ने पापा को भी सजने-संवरने के ढंग सिखा कर, धंधे का नियम समझाते हुए, सावधान किया – "..............बस मर्द से खेलती रहेगी तो खुश रहेगी, जहाँ प्यार करने लगेगी वहीं जिन्दगी बेकार हो जाएगी। बाबू देह का भूखा होता है मन का नहीं।"[6] लेकिन स्वयं को लाख रोकने पर भी पापा शहरी बाबू–एक मास्टर–से प्यार कर बैठी। मास्टर जब कभी अपनी इच्छा से पैसे देता तो वह लेती थी वरना कभी नहीं मांगती थीं। "धीरे-धीरे उसे लगा वह गर्भवती हो गई।"[7] माँ ने यह बात बाबा को कही तो बाबा ने गुस्से में उसे रात में ही घर से निकाल दिया। पापा काका-काकी के घर चली गईं, जिन्होंने बच्चे की लालच में उसे घर में रख लिया और उसकी देखभाल की। पापा कई बार मास्टर के पास गई लेकिन उसने तो पापा को पहचानने और उसके गर्भ को अपना मानने से इन्कार कर दिया। पापा पापा ने एक बेटे को जन्म दिया जो काकी के सुरक्षित हाथों पलने लगा। पापा अब काकी के घर और दुकान में भी हाथ बटाने लगी थी। कुछ दिनों से पापा को लग रहा था कि पिता समान काका उसे अश्लील आँखों से निहारता है। उसने काकी को इस डर से कुछ नहीं कहा कि, "कहीं काकी ने देख लिया तो? भरी दोपहरी में बच्चे के साथ घर से बाहर कर देगी, तब वह बच्चे को लेकर कहां जाएगी?"[8] एक रात काका मौका पाकर उसे घसीटते हुए घर के पिछवाड़े ले गया। काका ने उसे दीवार से चिपकाकर अपनी बाहों में कैद किया। वह चीखने ही वाली थी कि काकी ने टंगिया से पीछे से काका का सिर फोड़ दिया। सारा खून पापा पर आ गिरा। काका जमीन पर मृत पड़ा था। काकी अन्दर रोते हुए बच्चे को चुप कराने चली गई। पापा के दिमाग में एक विचार आया। उसने टंगिया उठाई और भागते-भागते जगदलपुर के थाने में जाकर खून का इलजाम अपने सर ले लिया। अपने "बच्चे को एक ठौर दिलाने के लिए, एक देहरी देने की खातिर उसने झूठ कह कर अपने-आपको कानून की गरम भट्टी में झोंक दिया था।"[9] आज मुन्ना भी काकी के पास सुरक्षित है और वह स्वयं भी दुनिया की भूखी नजरों से दूर है। "वरना वह अपनी जवान देह को लेकर और कितनी ठोंकरें खाती भटकती। !"[10]

"पत्थरवाली गली" एक छोटी बालिका–जेबा के जीवन की विडम्बना की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथा है। जेबा अपने दादा और खाला के साथ रहती है। उसे अपने अब्बा-अम्मी ठीक से याद ही नहीं हैं। उसके "अब्बा पक्के जुआरी और शराबी थे। अफीम की तस्करी उनका धंधा था। ...."[11] जेबा के अब्बा अपने दोस्त को घर लाकर दोनों शराब पीते थे। एक बार तो शराब के नशे में उन्होंने अपने दोस्त से कहा-"मेरी हर चीज में तुम्हारा हिस्सा है। यहां तक कि मेरी बीबी में भी........."[12] अब्बा अधिकतर घर से बाहर ही होते थे और उनके दोस्त आए दिन अम्मा के लिए अच्छी-अच्छी चीजें और जेबा के लिए ढेर सारे खिलौने लेकर आने लगे। धीरे-धीरे अम्मा उससे हिल-मिल गई और कुछ ही महीनों में वह गर्भवती हो गई। उन दिनों अब्बा तस्करी के धंधे में जेल में थे। लौट आने पर जब उन्हें पता चला तो उन्होंने खूब शराब पी कर पत्नी को पीटा। वे शहर में दूसरी पत्नी के साथ रहने लगे और तस्करी का धंधा छोड़कर ईंट बनाने का ठेका लिया। लेकिन उनके दोस्तों ने धंधा छोड़ने की दुश्मनी में उनको शराब में जहर मिलाकर पिलाई। पुलिस उनकी मृत्यु की खबर लाई थी। जेबा की अम्मा अपने कपड़ों की गठरी उठाए पत्थरवाली गली से पति के दोस्त के साथ भाग गई थी।

जेबा कुछ बड़ी हो गई थी। वह खाला की चूड़ियों की दुकान पर भी बैठती थी। एक दिन जेबा को दादा ने बनिए की दुकान पर समय पूछने भेजा तो दुकान बन्द थी। जेबा घर के अन्दर चली गई तो बनिए ने कमरा बन्द करके उसे पकड़ लिया। जेबा की सारी चूड़ियां टूट गई, लेकिन वह वहां से भाग निकलने में सफल हो गई। जेबा ने यह बात घर वालों से छुपाई और फिर कभी बनिए के घर या दुकान पर नहीं गई।

एक शाम जेबा मौलाना की जच्चा बहू को चूड़ियां पहनाकर घर लौट रही थी। वह बहुत खुश थी क्योंकि मौलाना की बहू ने उसे नई कढ़ाई वाली ओढ़नी दी थी। रास्ते में उसे बनिए ने देखा जो शहर जा रहा था। बनिए ने जंगल के सूनेपन और अंधेरे का लाभ उठाकर उसका कौमार्य नष्ट किया। इस सदमें में जेबा के दादा की मृत्यु हो गई।

"अकेला गुलमोहर" में सुधा अपने दो विवाहित भाइयों और पिता के साथ रहती है। सुधा छोटे भाई से बड़ी और बड़े भाई से तीन वर्ष छोटी है। "सुधा का ब्याह क्यों नहीं हुआ, यह भी अजीब प्रश्न है जो वह अक्सर लोगों के मुंह से सुन लेती है। जब से सुधा और उमेश की दोस्ती हुई, लोग ज्यादा गंभीरता से प्रश्न को दोहराते हैं।" सुधा के उमेश से दोस्ती करने और उसे घर लाने पर घर में किसी ने आपत्ति नहीं की। शायद इसलिए कि उमेश विवाहित था।

बड़े भैया महंगाई के कारण परेशान थे। छोटे भैया की आमदनी कम थी। इसलिए बड़े भैया चाहते थे कि वह अपना अलग घर बसाए। न चाहते हुए भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोटे भैया बीवी-बच्चों को लेकर चले गए। दोनों भाइयों में खूब झगड़ा हुआ। झगड़े में छोटे भैया ने बड़े भैया से एक कड़वी बात की तो सारा घर चुप-सा हो गया। छोटे भैया ने कहा था, "........तुम चाहते हो हर आदमी कमाकर लाये तो खाये। इसलिए तुमने सुधा की शादी नहीं की। सुधा दूसरे घर चली जाएगी तो बंधे हुए दो सौ कौन लाकर देगा? सुधा ने बात सुनी-अनसुनी कर दी, लेकिन इस बात का विश्वास सुधा को तब होता है, जब बड़े भैया उसे उमेश से विवाह करने की अनुमति नहीं देते। उमेश की पत्नी सदा के लिए मायके चली गई थी। यह जानते हुए कि उमेश और सुधा के शारीरिक सम्बन्ध भी हैं, फिर भी बड़े भैया ने इस विवाह से इन्कार किया। आश्चर्य और दुख से सुधा कुछ न कुछ पाई। उसे विश्वास हुआ कि बड़े भैया को उसके भविष्य की चिंता न होकर उन दो सौ रुपए की चिंता है जो सुधा हर महीने उन्हें देती है। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह उमेश से अवश्य विवाह करेगी, चाहे उसे आशीर्वाद ना भी मिले।

"रेगिस्तान" नामक कहानी में नीरा का विवाह देव से हुआ था जो उसकी उम्र से दुगनी उम्र का था। "अधेड़ पति से पिता का सा स्नेह मिला पर पति का वह पौरुष नहीं मिला।"[13] शादी के पहले साल एक बेटी–हेम–का जन्म हुआ। नीरा को अपना जीवन कैद-सा लगता था। दुर्भाग्यवश एक दुर्घटना में देव अपाहिज हुआ और उस पर गाड़ी के नीचे एक बूढ़ी औरत को कुचल मारने का केस भी चला। वह अपना दुख शराब पीकर भुलाने लगा। नशे में वह नीरा को गंदी और सड़कछाप गालियाँ देता था। "देव से तलाक, अमित से भेंट, नई नौकरी, सब एक साथ, एक समय वाले दृश्य थे।"[14] अमित की पत्नी की मृत्य हो गई थी और वह नीरा से विवाह करना चाहता था। नीरा भी अपने जीवन के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए तब विवश होती है जब उसकी नौ वर्षीय पुत्री–हेम उससे पूछती है, "........मेरे पिता कौन हैं? वह अपाहिज बाबूजी या अमित अंकल? स्कूल में टीचरें मजाक करती हैं।"[15] नीरा जब अमित की बेटी–मंजू–की शादी पर अमित के घर आई तो अमित के काका और मंजू दोनों को नीरा का आना अच्छा नहीं लगा और ना ही काका ने अमित को विवाह करने की अनुमति दी। काका की अनुमति न मिलने क कारण, बदनामी और समाज के डर से, मंजू के विवाहित जीवन और अन्य दो छोटे बच्चों के भविष्य की रक्षा के लिए, अमित नीरा से विवाह न करके यों ही जीवन भर सम्बन्ध बनाए रखना चाहता था। यह बात नीरा को गहराई तक अपमानित कर गई। "इतना सब देखकर, समझकर भी उसकी आँखों में आंसू नहीं आ रहे थे, जैसे आँखें रेगिस्तान-सी सूख गई थी।"[16] वह तभी उठी और जाने के लिए अपना सामान समेटने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) चरित्र-चित्रण

"अयोध्या से वापसी" कहानी की नायिका नीरा चकित है कि जो पिता अपनी बेटी के लिए बड़ी-बड़ी बातें करता था, आज वही उसे अपना स्वाभिमान कुचल कर पति की हर बात मानने के लिए कहकर पति के पास छोड़कर चला गया। विवश होकर वह न चाहते हुए भी पति के साथ रहना स्वीकार करती है। "वह तो आई ही थी सारी स्थितियों से समझौता करने, पर इस तरह बोल-बोलकर तो उसे उकसाया जा रहा था, लड़ने के लिए तैयार किया जा रहा था।"[17] वह जब भी घर के काम निपटा कर आती "तो वह देखती उसकी डायरियों को पढ़ा गया है, जांच-पड़ताल की गई है।"[18] वह किसी से बात करती तो उसका पति उसे ताकता रहता, उसकी हर बात पर नज़र रखता। नीरा के चरित्र में कोई खोट न था। इसलिए वह अपने पत्र-डायरी खुला छोड़कर उठ जाती तो पति को पढ़ने का अवसर देती थी, ताकि वे निश्चिन्त हो जाएं। लेकिन पति का शक कम नहीं हुआ। वह चुपचाप अपना घर संवारती रहती और पति का हर काम स्वयं करती थी। लेकिन "राजेन्द्र (पति) की दिन-प्रतिदिन ज़हर उगलती नज़रें उसकी व्यक्तित्व को और खोखला कर देती थी।"[19]

वह भीतर से पत्थर-सी हो गई थी, जिस पर कितनी भी चोटें की जाएं, कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। लेकिन उसका स्वाभिमान उसे पति के प्रतिदिन के उलाहने और उसके चरित्र पर आरोप नहीं सहने देता और वह फिर से पति का घर छोड़ती है। और अपने बल पर जीने का निश्चय करती है। वह पति और पिता दोनों के घरों को त्याग कर हॉस्टल में रहती है।

"देहरी की खातिर" की नायिका–पापा–एक साधारण लड़की है जो सौतेली माँ की बातों में आकर बुरी राह पर लग जाती है। "वह सयानी हो गई है तथा सुन्दर भी, यह बात उसने सड़क के मनचलों की आँखों से जाना।.........उसने अपनी आँखों में लम्बा काजल भरना, जूड़े में फूल खोंसना भी शुरू कर दिया था। नानी आया! (सौतेली मां) ने हटरी से उसके लिए एक स्नो की शीशी और पाउडर का डिब्बा भी खरीद दिया था.......,"[20] सौतेली मां ने उसे अपनी तरह शरीर बेचने के धंधे पर लगा दिया था और समझाया कि वह केवल धंधा करे, प्यार करके अपना जीवन बरबाद न करे। लेकिन अपने आपको बहुत रोकने पर भी "..................देह का रिश्ता प्यार का रिश्ता हो गया।..............उसके शरीर से प्यार की गंध महुवे की गंध की तरह उठने लगी थी।"[21] वह एक शहरी बाबू मास्टर से प्रेम करने लगती है। गर्भवती होने पर उसे घर से भी निकाला गया और मास्टर ने भी उसे ठुकराया। कुंआरी कोख से अपने बेटे को जन्म दिया और उसकी आंखों में ममता उतर आई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह एक स्वाभिमानी नारी है। वह काकी पर बोझ नहीं बनना चाहती। इसलिए वह उसके घर को भी देखती है और चूड़ियों की दुकान पर भी बैठती है।

पापा एक पवित्र जीवन जीना चाहती थी। वह जीवन में केवल एक पुरुष के सहारे जीना चाहती थी। लेकिन जीवन के प्रथम पुरुष, प्रथम प्यार ने ही उसे धोखा दिया।

अपने बेटे को काकी के सुरक्षित हाथों का सहारा और देहरी दिलाने के लिए वह स्वयं खून का आरोप अपने सर लेती है। जेल जाने से वह समाज की भूखी आंखों से भी अपनी देह को बचा सकी। "साल दर साल के बाद वह छूटेगी, तब इस काल-कोठरी से वह पवित्र होकर जाएगी, शुद्ध हो जाएगी। उसके सारे पाप धुल जाएंगे। तब उसकी जवान देह समाप्त हो जाएगी, वह सिर्फ माँ रह जाएगी, माँ बनकर जाएगी।"[22]

"पत्थरवाली गली" की नायिका एक छोटी युवती है जो खाला की दुकान पर बैठ कर चूड़ियाँ बेचती है। खाला जब भी अन्दर खाना बनाने जाती है तो वह (जेबा) खाला की जगह बैठकर चूड़ियाँ बेचती है। वह घर-घर जाकर भी चूड़ियाँ बेचती थी। जेबा जो भी पैसे ग्राहकों से लेती, उनको खाला की पुरानी संदूकची में रख देती और चुपचाप दस का सिक्का ले लेती, जिसे वह अपना पारिश्रमिक मानती थी। खाला उसकी चोरी को देखकर अनदेखा करती थी क्योंकि वह जानती थी कि जेबा के बिना उसका काम नहीं चल सकेगा।

जेबा थोड़ा बड़ी हुई तो उसके लिए रिश्ते आने लगे। दादा उसकी शादी अच्छी जगह कर देना चाहते थे। जेबा को लाल छींट वाली चूड़ियाँ पहनने की बहुत रुचि थी, जो केवल सुहागिनें ही पहनती थीं। लेकिन जेबा के सारे सपने गांव के बनिए ने उसका कौमार्य लूट कर तोड़ दिया। सुनसान जंगल का जेबा का रोना, दुहाई केवल पक्षी और शान्त वृक्ष ही सुनते रहे। इस प्रकार इस बालिका का जीवन नष्ट होता है जबकि उसका कोई दोष न था।

"अकेला गुलमोहर" की नायिका शिक्षित और कमाऊ है। काफी उम्र होने पर भी उसके ब्याह की चिंता किसी को न थी। वह भरे-पूरे घर में भी अकेली है। किसी को भी उसके भविष्य की चिंता नहीं। वह सब बातों से परिचित हर महीने अपने वेतन में से दो सौ रुपए भाई.को देती है।

प्रौढ़ होते हुए भी वह बच्चों जैसी आदतें रखती है। वह रोज आँगन में चींटियों को शक्कर खिलाती है। "यह शक्कर डालने की आदत उसे बचपन से ही है। ... .अपनी इस बेतुकी आदत पर वह कई बार भइया से डाँट खा चुकी है।"[23] सुधा एक विवाहित पुरुष-उमेश से प्रेम करती है, जो अपनी पत्नी से घृणा करता है और वह मायके में रहती है। सुधा और उमेश, "दोनों कमरे में बैठ घण्टों बातें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते रहते हैं, फिर पिक्चर का भी प्रोग्राम बन जाता है।"[24] उमेश के सुधा के घर आने पर किसी ने आपत्ति न की, बल्कि उनको अकेले छोड़ दिया जाता।

सुधा और उमेश ने विवाह करने का निश्चय किया। सुधा एक आधुनिक नारी है। वह समाज के बनाए आडम्बरों को नहीं मानती। उन्होंने साधारण ढंग से विवाह करने की योजना बनाई थी। भाई से विवाह की अनुमति न मिलने पर उसे दुख होता है।

सुधा चुपचाप अत्याचार सहने वाली नारी न होकर दृढ़ निश्चय वाली नारी है। उसने, भाई के उसकी वेतन के लालच के लिए, अपना जीवन नष्ट न करके बिन आशीर्वाद के विवाह करने का निश्चय किया।

"रेगिस्तान" की नीरा तीस वर्षीय महिला है जिसकी नौ वर्षीय पुत्री भी है। उसका विवाह अपने से दुगनी उम्र वाले पुरुष से हुआ था। उससे पूर्ण पौरुष न मिल पाने के कारण उसकी आत्मा भूखी रहती थी। "देव (पति) थका-हारा पलंग पर लेटते ही अबोध बच्चा-सा गहरी नींद में सो जाता और वह अपनी ही आग में सुलगती रहती।"[25] नशे में जब पति उसे गालियाँ देता तो उसे वह जाहिल और गंवार लगता। इस प्रकार पति से बचे-खुचे सम्बन्ध भी अपने आप टूट गए। "उसे अपना जीवन पिंजरे में बंद तोते-मैना-सा लगता,............जिसे समय-समय पर खाना-पीना मिल जाता है और कभी-कभी मालिक की पुचकार, बस।"[26]

नीरा एक दृढ़ नारी है। वह पति से तलाक लेकर नौकरी करती है और बेटी का पालन-पोषण करती है। देव जब भी बेटी से मिलने आता, वह उनको अकेला छोड़कर घर से बाहर चली जाती।

अलगाव के बाद नीरा कुण्ठित और अतृप्त जीवन नहीं जीती। वह अमित से विवाह करने का निर्णय करती है और विवाह से पहले ही उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है।

नीरा एक स्वाभिमानी नारी है। वह वेश्या नहीं, पत्नी बनकर जीना चाहती है। वह भीख नहीं प्यार चाहती है। जब उसे पता चलता है कि अमित उससे विवाह नहीं करेगा, तो अपमानित और दुखी होकर उसी समय अमित का घर सदा के लिए छोड़ती है।

(ग) कथोपकथन

कथोपकथन के माध्यम से लेखिका ने पात्रों के चरित्र-चित्रण, कथा को प्रवाह दिया है। आलोच्य संग्रह में प्रभावशाली और रोचक संवादों का प्रयोग हुआ है।

लेखिका ने व्यावहारिक और आम जीवन में बोले जाने वाले संवादों का प्रयोग किया है। निम्नलिखित संवादों में लेखिका ने एक पुरुष की मानसिकता का चित्रण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया है। पुरुष के दिमाग में हर समय नारी के लिए शक बसा रहता है, जो जरा सी बात से भी उसके संवादों में छलक आता है।–

"नीरा, पिक्चर अच्छी लगी है, चलोगी?"
राजेन्द्र ने पूछा। "कौन-सी है?" "घर"।

"यह तो मेरी देखी हुई है, बाबूजी के घर थी तो तब देख आई थी।" "और क्या-क्या करती थी तुम वहाँ?" राजेन्द्र ने तेज ज़हर बुझे लहजे में अचानक पूछा। "क्या मतलब?" "मतलब साफ है, इतने दिन तुम वहाँ रही, किसी से दोस्ती तो हुई होगी। सुना है वहाँ काफी जोर-शोर से तुम्हारी शादी की बातें आ रही थीं। इतने तुम्हारे आशिक होंगे यह तो हमें भी पता नहीं था।"[27]

लेखिका ने अश्लील संवादों का प्रयोग करके पात्रों की मानसिकता, वर्ग, चरित्र का चित्रण किया है–

"हरामजादी, नखरे दिखाती है ! हराम का बच्चा पैदा करने में नाक नहीं कटी ! मेरे घर इतने महीने से खा रही है ऐसे ही, अब तो तुझे अपनी औरत बना कर ही छोड़ूंगा।"[28]

लेखिका ने कहानी की मुख्य बात को बड़ी ही आसानी से मात्र एक संवाद के माध्यम से कहा है। ".........इसीलिए तुमने सुधा की शादी नहीं की। सुधा दूसरे के घर चली जायेगी, तो बंधे हुए दो सौ रुपए कौन लाकर देगा।?"[29]

लेखिका ने संवादों के माध्यम से बाल मनोविज्ञान का चित्रण भी किया है, कि किस प्रकार बच्चों में थोड़ी सी समझ आ जाने पर वे अपने जीवन, अपने आस-पास के बारे में सोचने लगते हैं और फिर प्रश्न करते हैं। कहीं से अपने बारे में बात सुनने पर विचार में पड़ जाते हैं और प्रश्न करते हैं–"ममी, सच कहो, मेरे पिता कौन हैं? वह अपाहिज बाबूजी या अमित अंकल? स्कूल में टीचरें मजाक करती है।"[30]

लेखिका ने कई बार पात्रों के बीच चलने वाले संवादों की कड़ी-सी बांधी है, जिनसे कहानियों में ऐसी नाटकीयता आई है कि पाठक की आंखों के सामने चित्र से खिंच जाते हैं। कहीं भी बोझिल और कृत्रिम लगने वाले संवादों का प्रयोग नहीं किया है।

(घ) कहानियों में चित्रित वातावरण

"अयोध्या से वापसी" नामक कहानी में एक मध्यवर्गीय नारी के जीवन की कुण्ठा का वातावरण चित्रित है। कहानी में उस समाज का चित्रण हुआ है जहाँ नारी का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थान पति का घर ही समझा जाता है। उसे वहीं रहना है, चाहे उसे वहाँ कितना ही मानसिक कष्ट क्यों न हो। समाज के प्रश्नों और अनचाहे बोझ के डर से मायके वाले बेटी को अपने घर रहने नहीं देते और पति के कटु व्यवहार के कारण वह ससुराल में रह नहीं पाती। नारी की इसी उलझन का चित्रण कहानी में हुआ है।

लेखिका ने पति-पत्नी के आपसी सम्बन्ध के खोखलेपन का चित्रण भी किया है। –"उसने महसूस किया जीवन अब पहले से अधिक यातनापूर्ण हो गया था। पहले तो वह लोग लड़कर, एक-दूसरे पर व्यंग्य कर ही मन का रोष निकाल लेते थे, पर अब वह दोनों एक-दूसरे को कुछ नहीं कहते थे। इस तरह का वातावरण ज्यादा गंभीर होने लगा था। परायापन अधिक नंगा होकर दिखने लगा था।"[31]

"देहरी की खातिर" कहानी में लेखिका ने एक निम्नवर्गीय परिवार का चित्रण किया है, जहां मुश्किल से मजदूरी करके पेट पाला जाता है और रहने की जगह भी कच्ची और बहुत कम है।

लेखिका ने निम्नवर्गीय समाज की कठिनाइयों को प्रकट किया है। इस वर्ग की सबसे बड़ी समस्या पेट भरना है। छोटे-छोटे बच्चों को दिनभर मछलियाँ पकड़ते दिखाया गया है। लड़कियाँ जंगल में अपने आप उगने वाली सब्जियाँ आदि इकट्ठा करके कुछ तो अपने घर ले जाती है और कुछ बाजार में बेचकर पैसा कमाती है। "………लड़कियों का झुंड-का-झुंड सारा-सारा दिन जंगल में बोड़ा, छाती, भाजी, बासता, और जामुन के लिए भटकता था। ………जंगल के रहमोकरम पर ही बदनसीब गरीबों की गुजर थी।"[32]

लेखिका ने समाज में पलने वाले एक अंधविश्वास का उल्लेख भी किया है–

"…………काकी कहती है हर अला-बला बाहर के आने-जाने वालों के पैरों के साथ घर में प्रवेश कर जाती है। प्रेतआत्मा आग से डरती है, दहलीज पर आग देख ठिठक जाती है और बाहर ही रह जाती है।"[33]

लेखिका ने गाँव में मनाया जाने वाला एक "तारा त्यौहार" के बारे में भी लिखा है, जिसमें लड़कियाँ हर घर के सामने खड़े होकर गीत गातीं और बदले में पैसा, चावल इकट्ठा करती।

"पुनी का चाँद बच्चों के इस त्यौहार के लिए अपनी सारी रोशनी धरती पर बिछाकर खुश होता। ये नवा-खानी का त्यौहार, फसल काटने पर बस्तर के गाँव-गाँव में मनाया जाता है। लड़कियाँ गुड़ियाँ टुकने में सजा, जलता दीया रख निकलती है, वहीं लड़के रंग-बिरंगा भेष बनाकर "छेर-छेर" नाचते हैं और चावल और पैसा इकट्ठा करते हैं। फिर इस इकट्ठा किए चावल और पैसे से पिकनिक मनाई जाती है।"[34] कहानी में इस "तारा त्यौहार" में गाया जाने वाला "तारा गीत" भी मिलता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"पत्थरवाली गली" में भी निम्नवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। घर का खर्च केवल खाला की चूड़ियों की दुकान और दादा के पेंशन से ही चलता है। लेखिका ने परिवार की आर्थिक स्थिति की ओर संकेत करते हुए, एक अंधविश्वास को भी दिखाया है।

"पीपल के पेड़ के तने से पीछे घर की दीवार धसकने लगी थी, जिस वजह से दादा ने उस पेड़ को कटवा दिया। तब से ही सारे लोग कहने लगे हैं कि पीपल का पेड़ कटवाना अपशकुन होता है।..........."[35]

लेखिका ने एक पिछड़े गांव का वातावरण प्रस्तुत किया है, जहां सब परिवार आर्थिक तनाव से ग्रस्त हैं–"छोटा सा गांव ! चरती मुर्गियां, घूमते सूअर, कंची खेलते बच्चे, थोड़ी सी बकरियाँ, बत्तखें और कबूतर, यही इन लोगों की दौलत थी, जायदाद थी और यही कुछ पुरानी पीढ़ी, नयी पीढ़ी के लिए वसीयत में छोड़ जाती थी।"[36]

"अकेला गुलमोहर" में बढ़ती हुई महंगाई से पीड़ित मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण हुआ है। घर में अधिकांश सदस्य नौकरी करके घर के खर्च में हाथ बँटाते हैं और हर व्यर्थ खर्च को कम करने का प्रयत्न किया जाता है। जैसे गृहस्वामी पत्नी से कहता है–".......अरहर की दाल एक दिन का अन्तर देकर बनाओ। पापड़ तलने के बजाय भून दिया करो।"[37]

एक ही क्वार्टर में दो भाइयों के परिवार, बहन और पिता रहते हैं। हर एक को अपना अलग कमरा चाहिए, जिसके कारण उन्हें जगह कम लगती है। – "........वैसे घर छोटा नहीं, पर बँटे हुए कमरों में रहने वालों को खामखाह ख्याल होता था कि घर छोटा है।"[38]

लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवारों के आसपास के वातावरण का सुन्दर शब्दों में चित्रण किया है– "पीछे आंगन की दीवार पिछली बरसात में गिर गई,......... ईंटों का ढहा हुआ ढेर वैसे ही पड़ा है। टूटी दीवार के पार से मुसलमानों के कब्रिस्तान का आहाता दिखता है। कब्रिस्तान की दीवार ज्यादा ऊँची नहीं है, अक्सर खड़े रहने पर अनचाहे तौर पर अन्दर बनी कब्रें दिखती हैं। कब्रिस्तान की दीवार पर ज्योति काजल का इश्तहार अजीब-सा लगता है।"[39]

"रेगिस्तान" कहानी में भी मध्यमवर्गीय परिवार का वातावरण चित्रित है। इसमें नारी के अकेलेपन की पीड़ा और भविष्य के सहारे के लिए संघर्ष करने की प्रक्रिया को दिखाया गया है। नायिका नौकरी करके स्वयं और बेटी को पालती है और बेटी की कॉन्वेंट की पढ़ाई का खर्चा उठाती है।

शादी के अवसर पर दुल्हन के शरीर पर हल्दी लगाई जाती है। इस प्रथा की ओर लेखिका ने भी संकेत किया है।–"सारा घर हल्दी की सोंधी महक से भरा था।। ....फर्श पर हल्दी के दाग लगे थे। [illegible] की सखियाँ आई थीं, उनमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही मंजू को हल्दी लगाई थी। सारा दिन वे लोग बड़े कमरे में शोर करती रहीं। उनकी तेज-तेज हंसी के बीच कहे मजाक के शब्द हवा में दहकर उसे यहाँ तक सुनाई देते रहे, ..."[40] इस प्रकार लेखिका ने हल्दी लगाने के अवसर का वातावरण भी चित्रित किया है।

मुस्लिम समाज

मुस्लिम समाज में युवतियों को इस्लाम धर्म के अनुसार बचपन से ही सिर ढकने के लिए कहा जाता है। इसका संकेत लेखिका ने भी किया है।

"..........उसने ओढ़नी से सिर की अच्छी तरह ढका......"[41] "उसने सिर का दुपट्टा ठीक किया......"[42] "नन्हीं बच्चियों का झुंड सिर ढके मकतब पढ़ने जाने की तैयारी में जाता हुआ।"[43]

मुस्लिम परम्परा के अनुसार मरे हुए व्यक्ति को कफन पहनाकर कब्रिस्तान में दफनाया जाता है और यह संस्कार निकटतम सम्बन्धी ही करते हैं–"दादा शहर गए, फिर.........अब्बा का कफन दफन कर लौटे।"[44]

मुस्लिम समाज में अनेक विवाह करने की अनुमति है। पुरुष एक ही समय में कई पत्नियाँ रख सकता है। नारी भी पति की मृत्यु या अलगाव के बाद दूसरा ब्याह कर सकती है। "पत्थर वाली गली" कहानी में जेबा के पिता शहर जाकर दूसरी औरत के साथ रहते हैं और माँ भी पति की मृत्यु के बाद दूसरे आदमी के साथ चली जाती है। "मौलाना की तीन बीबियां हैं।"[45] रिश्ते का पैगाम अर्थात् संदेशा लड़के वालों की तरफ से लड़कीवालों के घर आता है–"मौलाना के छोटे बेटे के लिए उसकी बात आई थी,..........."[46] मुस्लिम वर्ग जिन्न, प्रेत आदि में विश्वास करते हैं। लेखिका ने भी जिन्नातों का उल्लेख किया है।

(ड.) भाषा-शिल्प

आलोच्य संग्रह में सभी कहानियाँ नायिका-प्रधान हैं। लेखिका ने सभी कहानियों में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त "फ्लैश बैक" पद्धति अर्थात पूर्वदृश्य पद्धति भी मिलती है। इस पद्धति का स्पष्ट रूप "अयोध्या से वापसी" कहानी में मिलता है। कहानी का आरम्भ और अंत एक ही घटना से होता है। और आरम्भ के बाद पूर्व कथा नायिका के मस्तिष्क में गुजरती है।

लेखिका की भाषा में कभी-कभी गंभीर चिंतन पक्ष की प्रधानता आती है। उदाहरणार्थ–

"जिन्दगी वास्तव में कितनी विचित्र है। ....कभी लगता है सारे अधिकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे हैं, सब पर हमारा अधिकार है और कभी यह एहसास होता है, नहीं हम एक झूठे भ्रम को पाले हुए थे। हमें सारे अधिकारों से वंचित कर दिया है, तिनके पर भी हमारा हक नहीं बनता। अचानक लगता है कि समय के दावेदार ने हमें दिवालिया घोषित कर दिया है।......"[47]

लेखिका ने ऐसे वाक्यों का प्रयोग किया है जो मिलकर एक चित्र सा बनाते हैं। पाठकों के सामने मानों चित्र खिंच जाते हैं। "वह रंगीन तस्वीरें देखते मुग्ध भाव से भीतर कोठरी में चली गई थी। दुकानदार मौके की तलाश में था ही, उसने लपककर दरवाजे की कुण्डी चढ़ादी और उसे पकड़ लिया। उसने भयभीत होकर दुकानदार को देखा और घबराई-सी छटपटाती दौड़ने लगी। छीना-छपटी में उसकी चूड़ियां भी टूट गईं। आखिर वह दरवाजे की कुण्डी खोलने में सफल हो गई और भाग खड़ी हुई।"[48]

आलोच्य संग्रह में पात्रानुकूल भाषा के सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। "वाय पापा, गुलाय छुई-छुई होली?"[49] "काकी, को दो भाटा में हुई नहीं है, सब खोद-खोद कर ले गए।"[50]

तुक साम्य एवं ध्वन्यात्मक शब्दावली

टीका-टिप्पणी, मान-मर्यादा, तुड़े-मुड़े, अस्त-व्यस्त, दिन-प्रतिदिन, खुला-का-खुला, टोका-टाकी, ओने-कोने, कैसी-कैसी,[51] कष्ट-ही-कष्ट, हिल-मिल, पेज पिला-पिला कर पाला, कोई न कोई, बाल-बच्चा, तितर-बितर, नहलाने-धुलाने, गाली-गलौच, झूला झूल-झूल, भारी-भरकम, फुक्का-फाड़, खुश-खुश, काल-कोठरी[52], बकरियाँ बाँधते-बाँधते, झूठ-मूठ, छीना-छपटी, मटका-मटका, अकेली-अकेली, कफन-दफन, ऊबड़-खाबड़, संभल-संभलकर[53], मुड़े-मुड़े, खामखाह, शादीशुदा।[54]

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

चैन की सांस लेना, जी चुराना, चेहरा सफेद पड़ना, मन भर जाना[55], दम तोड़ना, नाक कट जाना[56], अपनी गली में आकर कुत्ता भी शेर हो जाता है, जान में जान आना[57], जले पर नमक छिड़कना, पोल खोलना, मुंह उतरना[58]।

ध्वनि सूचक शब्द

म्याऊँ-म्याऊँ, चूँ-चूँ, हैश........हैश..........हिर्रर[59], सायं-सायं, चीं-चीं[60]।

लेखिका ने कृत्रिम चिन्हों (.........), ग्रामीण शब्दों जैसे छुई-छुई, छेर-छेर,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदि के प्रयोग के अतिरिक्त मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों और सूक्ति वाक्यों का प्रयोग भी किया है।

(च) प्रतिपाद्य विषय-उद्देश्य

"अयोध्या से वापसी" में लेखिका ने नारी के सदियों पुरानी और निरन्तर चलने वाली समस्या को उभारा है। यों तो लोग नारी के सम्मान, स्वतंत्रता, पुरुष की बराबरी की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं लेकिन समय आने पर अपनी बेटी को इसके विपरीत शिक्षा देते हैं। जैसे-"...........औरत पति के घर ही अच्छी लगती है। अपने स्वाभिमान को लेकर कब तक जिन्दा रहेगी ! स्वाभिमान को कुचल दो,.... ....पत्नी का दरजा छोटा होता है, पति का बड़ा।"[61]

नारी का एकमात्र सहारा मायका होता है। लेकिन उसे वहाँ से निकाल कर वापस पति के घर पटक दिया जाता है तो पति का उसे अपमानित करने का साहस बढ़ जाता है। ".........किसी भी युग में झगड़े के बाद पति के घर लौटने पर नारी को सम्मान नहीं मिला। सीता का भी अयोध्या लौटने पर अपमान हुआ था।....."[62] और आज भी ऐसा ही होता है। पुरुष के पास यदि नारी को पराजित करने के सब शस्त्र खत्म हो जाएं तो भी उसके पास एक शस्त्र बच जाता है। वह है-नारी को चरित्रहीन घोषित करने का शस्त्र। लेकिन आज की नारी स्वाभिमानी है। वह चुपचाप सब अत्याचार या चरित्रहीन हाने का आरोप नहीं रखती। वह सब सीमाएँ तोड़ कर अपने अस्तित्व को बनाने और अपने बल पर जीने की शक्ति रखती है।

"देहरी की खातिर" में लेखिका ने नारी के कच्चे सपनों को चूर-चूर होते हुए दिखाया है। वातावरण, निर्धनता के कारण कई युवतियाँ बुराइयों में पड़ जाती हैं। वह उस बुराई से निकलने के लिए पुरुष का सहारा लेती है। पुरुष उसे झूठा प्यार, स्नेह देता है कि वह उसे अपनी मंजिल समझने लगती है। मोहभंग होने पर वह हर तरफ से बेघर, बेसहारा होती है।

असहाय नारी का सौन्दर्य और यौवन उसके लिए शाप बन जाता है। समाज की नीच और अश्लील आँखें उसका पीछा करती है। कहानी की नायिका ने स्वयं को समाज की अश्लील आँखों से बचाने के लिए स्वयं को जेल की भट्टी में झोंक दिया और वहाँ वह सुरक्षित अनुभव करती है।

लेखिका ने इस बात को भी प्रकट करना चाहा है कि माँ विवाहित हो या अविवाहित, उसकी ममता में कोई अंतर नहीं होता। वह अपने बच्चे को सुरक्षा और सहारा दिलाने के लिए स्वयं कठोर से कठोर कष्ट भी सह सकती है।

"पत्थर वाली गली" में लेखिका ने एक बालिका के जीवन की विवशता और समाज के नीच लोगों की नीचता प्रस्तुत की है। समाज में कई असहाय नारियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं, जिन्हें सहारे की आवश्यकता है। लेकिन उन्हें सहारा तो नहीं मिलता, बल्कि हर नीच व्यक्ति उनको बरबाद करने, उनके कौमार्य को लूटने की ताक में रहते हैं। हर नारी की तरह इन असहाय निम्नवर्गीय बालिकाओं में भी सुखी गृहस्थ जीवन जीने, सुहागिन बनने के सपने होते हैं, लेकिन उन सपनों को समाज की भूखी आँखें चूर-चूर करती हैं। ऐसी कई बालिकाएं एवं नारियाँ हैं जिनका कौमार्य नष्ट किया जाता है और उन्हें जीवन भर की सज़ा और मानसिक पीड़ा सहनी पड़ती है, जबकि उनका कोई दोष नहीं होता।

"अकेला गुलमोहर" में लेखिका ने उस नारी की समस्या उभारी है जो कमाऊ है और धन के लोभ के कारण घरवाले न उसका विवाह करते हैं और उसे अपनी इच्छानुसार विवाह करने देते हैं। लेकिन आज की नारी के पास शक्ति है कि वह अपना जीवन स्वयं सुधारने के लिए संघर्ष करें और अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले।

"रेगिस्तान" कहानी से भी यह बात स्पष्ट होती है के नारी अपने जीवन से समझौता करके घुट-घुटकर नहीं जीना चाहती। वह न तो अनचाहे बन्धन का बोझ उठाती है और न ही किसी पर अनचाहा बोझ बनती है। नायिका चाहती तो अपने प्रेमी की इच्छानुसार उससे विवाह बिना ही जीवन भर सम्बन्ध बनाए रख सकती थी। लेकिन उसका स्वाभिमान उसे इस बात की अनुमति नहीं देता। वह किसी की पत्नी बनकर सम्मान से जीना चाहती है।

आलोच्य संग्रह में भी लेखिका ने नारी की मानसिक पीड़ा, कुण्ठा, तड़प, ऊब, संघर्ष, विद्रोह आदि का चित्रण किया है।

संदर्भ

1. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 16, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
2. वही, पृ॰ 15.
3. वही, पृ॰ 15.
4. वही, पृ॰ 20.
5. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "देहरी की खातिर", पृ॰ 24, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
6. वही, पृ॰ 27.
7. वही, पृ॰ 28.
8. वही, पृ॰ 34.
9. वही, पृ॰ 43.
10. वही, पृ॰ 43.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. वही, वही संग्रह - कहानी "पत्थरवाली गली", पृ॰ 53.
12. वही, पृ॰ 53.
13. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "रेगिस्तान", पृ॰ 99.
14. वही, पृ॰ 99.
15. वही, पृ॰ 100.
16. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "रेगिस्तान", पृ॰ 104, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
17. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 13, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
18. वही, पृ॰ 15.
19. वही, पृ॰ 16.
20. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "देहरी की खातिर", पृ॰ 25.
21. वही, पृ॰ 27.
22. वही, पृ॰ 43.
23. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 91.
24. वही, पृ॰ 93.
25. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "रेगिस्तान", पृ॰ 99, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
26. वही, पृ॰ 99.
27. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 19, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
28. वही, वही संग्रह - कहानी "देहरी की खातिर, पृ॰ 41.
29. वही, वही संग्रह - "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 94.
30. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "रेगिस्तान", पृ॰ 100, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
31. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 13.
32. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "देहरी की खातिर", पृ॰ 31.
33. वही, वही संग्रह - कहानी वही, पृ॰ 33, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
34. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 39.
35. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "पत्थरवाली गली", पृ॰ 57.
36. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 51.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

37. वही, वही संग्रह - कहानी "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 92.
38. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 96, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
39. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 93.
40. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "रेगिस्तान" पृ॰ 98.
41. वही, वही - कहानी "पत्थरवाली गली", पृ॰ 46.
42. वही, वही - वही कहानी, पृ॰ 47.
43. वही, वही - वही कहानी, पृ॰ 52.
44. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "पत्थरवाली गली", पृ॰ 54.
45. वही, वही - वही, पृ॰ 57.
46. वही, वही - वही, पृ॰ 57.
47. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 18.
48. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "पत्थरवाली गली", पृ॰ 50.
49. वही, वही संग्रह - कहानी "देहरी की खातिर", पृ॰ 38.
50. वही, वही संग्रह - वही कहानी, पृ॰ 40.
51. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 13, 15, 16, 17, 18.
52. वही, वही संग्रह - कहानी "देहरी की खातिर", पृ॰ 21-43.
53. वही, वही संग्रह - कहानी "पत्थरवाली गली", पृ॰ 44, 48, 50, 52, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
54. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 93, 96, 97, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
55. वही, वही संग्रह - कहानी "अयोध्या से वापसी", पृ॰ 10, 11.
56. वही, वही संग्रह - कहानी "देहरी की खातिर", पृ॰ 36, 41.
57. वही, वही संग्रह - कहानी "पत्थरवाली गली", पृ॰ 44, 45.
58. वही, वही संग्रह - कहानी "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 92, 94.
59. वही, वही संग्रह - कहानी "देहरी की खातिर", पृ॰ 23, 36, 38.
60. वही, वही संग्रह - कहानी "पत्थरवाली गली", पृ॰ 46, 52.
61. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अयोध्या से वापसी," पृ॰ 11, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991.
62. वही, पृ॰ 20.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसंहार

महिला कहानीकारों ने हिन्दी साहित्य में अपनी एक विशेष परम्परा बनाई है। श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने प्रथम भारतीय महिला कवि सम्मेलन में सभानेत्री के पद से कहा, "साहित्य के क्षेत्र में स्त्रियों का आना अत्यन्त आवश्यक है। स्त्रियों के सहयोग के बिना मानव साहित्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता। एक पुरुष किसी पुरुष की हृदयानुभूति का सफलता पूर्वक प्रकट कर सकता है, परन्तु जब वह स्त्रियों की अनुभूति को प्रकट करने जाता है, तब उसे विवश होकर कल्पना से काम लेना पड़ता है। उदाहरणार्थ–सती की मनोभावना, वधु के उल्लास और माता के वात्सल्य का पुरुषों द्वारा किया हुआ वर्णन सैकेंड-हैंड ही रहेगा क्योंकि पुरुष इन उदान्त अवस्थाओं का अनुभव कर ही नहीं सकते।" – ("सुधा" पत्रिका–मई 1933–पृ॰ 327)[1] यह बात सही है कि पुरुष जब स्त्री के बारे में लिखता है तो वह सत्य की कसौटी पर खरा उतरे, ऐसा आवश्यक नहीं है। इसी बात का समर्थन करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेद्वी ने "स्त्री प्रतिभा" शीर्षक लेख में लिखा है, "यह विचित्र बात है कि स्त्री जब साहित्य लिखती है स्त्रियों के सम्बन्ध में ही लिखती है और पुरुष जब साहित्य लिखता है तब भी वह स्त्रियों के ही सम्बन्ध में लिखता है। दोनों में अन्तर यह होता है कि स्त्री के लिखने का उद्देश्य है अपने विषय में फैले हुए भ्रम का निराकरण और पुरुष का उद्देश्य है उसके विषय में और भी भ्रम पैदा कर लेना।" ("कमला" पत्रिका, अक्टूबर, 1939, पृ॰ 3)[2]

शिक्षा की अपर्याप्तता, अध्ययन की सीमाओं, अनुभव की कमी, सामाजिक बन्धन, संकोच, गृहस्थी, का भार, पर्दा, पारिवारिक कर्त्तव्यों एवं समाज और परिवार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के विरोध, प्रोत्साहन की कमी आदि बाधाएं होते हुए भी लेखिकाएं सितारों की भांति चमक कर उभर आई हैं और अपनी भावनाओं को कहानियों का रूप दिया है।

हिन्दी की प्रारम्भिक कहानी लेखिकाओं में श्रीमती **बंगमहिला** जी का नाम ही प्रमुख और आदरणीय है। इनकी रचनाएं "सरस्वती" "कन्या मनोरंजन" आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं, जिनका संग्रह आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित "कुसुम संग्रह" में हुआ। इस संग्रह में लेखिका की दो मौलिक तथा दस अनूदित कथाएं संकलित हैं। उनकी दो मौलिक कहानियाँ हैं–"दुलाई वाली" तथा "भाई-बहन"।

"दुलाई वाली" को पं० भगवती प्रसाद वाजपेयी ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है। इस कहानी में मनोरंजक यात्रा का वर्णन हुआ है। कहानी में प्रमुख पात्र–वंशीधर, उनकी पत्नी–जानकी, नवलकिशोर, उनकी नवपरिणीता वधू हैं। कहानी के संवाद तर्क और हास परिहास से पूर्ण हैं।

"भाई-बहन" शीर्षक कहानी में देश-भक्ति के भाव व्यक्त हैं। कहानी में – गंगादेई, साहब, श्रीराम, पिता–चार पात्र हैं। लेखिका ने बाल-मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण किया है। इस कहानी में विदेशी वस्तुओं का त्याग एवं स्वदेशी के ग्रहण का संदेश है। बंगमहिला की कहानियों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण है और देशज शब्दों से पूर्ण है। बंगमहिला होते हुए भी इनकी हिन्दी कहानियाँ बंग भाषा के प्रभाव से मुक्त हैं।

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने तीन कहानी संग्रहों की रचना की है। "बिखरे मोती" (1932), "उन्मादिनी", (1934) "सीधे सादे चित्र" (1947)। इन कहानी-संग्रहों में क्रमशः 15, 9, 14 (कुल 38) कहानियां संकलित हैं। "बिखरे मोती" के लिए उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से सेक्सरिया पुरस्कार भी मिला है।

इन्होंने कई पारिवारिक एवं सामाजिक कहानियाँ लिखी हैं। जिनमें नारी की विभिन्न समस्याओं तथा भावनाओं का अंकन हुआ है। जैसे – "मंझली रानी", "परिवर्तन", "फूल", "एकादशी", "आहुति", "उन्मादिनी", "नारी हृदय", "पवित्र ईर्ष्या", "वेश्या की लड़की", "गौरी", "कल्याणी" आदि।

इसके अतिरिक्त इन्होंने राष्ट्रीय कहानियाँ –("पापी पेट", "राही", "तांगेवाला" आदि) और मानव की जटिल प्रकृति पर व्यंग्य करने वाली कहानियाँ ("चढ़ा दिमाग", "दुराचारी" आदि) भी लिखी हैं।

लेखिका ने कहानियों में विभिन्न परिवारों का चित्रण किया है, जिनमें सास से पीड़ित नारी, भाई-बहन के पावन प्रेम, देशभक्ति, नारी की सहनशीलता, त्याग, आज्ञाकारिता, मर्यादा आदि अन्धआस्था, आभूषणप्रियता आदि को दिखाया गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। अधिकांश सहज और प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। इनकी भाषा में सरल देशज शब्दों, प्रचलित अंग्रेजी शब्दों और उर्दू शब्दों जैसे– दरख्वास्त, इज्जतदार, फिराक, अफसोस, हरकत, लिहाज आदि का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

श्रीमती उषादेवी मित्रा के सात संग्रहों का प्रकाशन हुआ है–"आंधी के छन्द", "महावर", "नील चमेली", "रात की रानी", "मेघ मल्हार", "रागिनी", "सान्ध्य पूरवी"। इन संग्रहों में क्रमशः 15, 12, 15, 11, 12, 13, 9 कहानियाँ संकलित है। इसके अतिरिक्त पत्रिकाओं में भी इनकी कहानियाँ प्रकाशित होती थी। इन्होंने सामाजिक, काल्पनिक, पौराणिक एवं भावपूर्ण कहानियां लिखी हैं। लेखिका ने नारी को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। "आंधी के छन्द" में संग्रहित अधिकांश कहानियों ("प्रतीक्षा", "परिचय", "मातृत्व" आदि) में नारी की उदारता, क्षमा, निष्ठा, भक्ति, सहनशीलता आदि गुणों का चित्रण हुआ है।

लेखिका ने वेश्यावृत्ति, अछूतों के प्रति कुलीनों का दुर्व्यवहार, जमींदार वर्ग की कृषि जीवियों के विरुद्ध कठोर नीति, वैमनस्य, ऊंच नीच, जाति-भेद, अंधविश्वास, नारी समस्या आदि को अपनी कहानियों में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट किया है। लेखिका ने दिनावशेष, परिवर्तन, सीमान्तिनी, उलंग, उपशिरा, आर्तनाद, रिक्ता, सर्वशान्ता, आदि गंभीर तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे उनकी भाषा में क्लिष्टता, दुरूहता एवं बोझिलता आ गई है।

श्रीमती कमला चौधरी के चार कहानी-संग्रह–"उन्माद", "यात्रा", "पिकनिक, "प्रसादी कमण्डल" प्रकाशित हुए हैं। जिनमें क्रमशः 11, 1, 15, 12 कहानियाँ संकलित हैं। लेखिका ने मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, भावात्मक, प्रतीकात्मक, एवं हास्य रस की कहानियाँ लिखी हैं। "हार", "स्वप्न", "साधना का उन्माद", "मधुरिमा", "वीणा" तथा "बैरिस्टर साहब" मनोवैज्ञानिक कहानियाँ हैं। ऐतिहासिक एवं पौराणिक कहानियों में "बलिदान", "अधूरा चित्र" तथा "टेक की रक्षा" उल्लेखनीय है। "भ्रम", "पागल", "मेरी रानी", "त्याग", "कर्त्तव्य," "पराजय", "रोना", "पतन", "रूपा", "अपमान", "अजाब", "समस्या" आदि इनकी सामाजिक कहानियाँ हैं जिनमें दाम्पत्य प्रेम, अभावग्रस्त परिवारों का संघर्षपूर्ण दयनीय जीवन, नारी-ईर्ष्या, स्नेह, विधवा जीवन आदि का चित्रण हुआ। इनकी अधिकांश कहानियाँ नायिका प्रधान हैं और उन्होंने नारी की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है। तत्सम बहुला शब्दावली, देशज शब्दों, युग्म शब्दों, मुहावरों आदि से इनकी भाषा सजीव हो उठी है।

श्रीमती कान्ता सिन्हा का "काँच का रास्ता" कहानी-संग्रह नारी की समस्याओं एवं भावनाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करके मानव जीवन पर व्यंग्य करता है। इन्होंने सामाजिक एवं पौराणिक कहानियाँ लिखी हैं। "अभागिन", "आठ वर्ष के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद" आदि कहानियों में नारी के प्रति पुरुष के कटु व्यवहार और विश्वासघात का चित्रण हुआ है।

सोमा वीरा के कहानी-संग्रह "धरती की बेटी" में 33 कहानियाँ हैं, जिनमें वृद्ध विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, पारिवारिक जीवन में अनबन, विधवा विवाह, अंधविश्वास आदि विषयों का चित्रण किया गया है। सामाजिक कहानियों में लेखिका ने नारी हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति, हिन्दू परिवारों की रुढ़िवादिता और अंधविश्वासों का चित्रण किया है। बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण 'मिट्टी के खिलौने' 'सलोनी', 'अम्मा-पापा', 'कटोरे' ले आदि कहानियों में हुआ है। सोमा वोरा कृत "दो आँखों वाले चेहरे" कहानी-संग्रह में 14 कहानियाँ हैं जो पाश्चात्य परिवेश के आधार पर लिखी गई हैं।

रजनी पनिकर के कहानी-संग्रह "सिगरेट के टुकड़े" में सोलह कहानियाँ हैं।

कहानियों में समाज एवं व्यक्ति की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया गया है। "नई पीढ़ी" कहानी में मनोरमा नामक लड़की की कथा है जो माता-पिता से विद्रोह कर निर्धन रेवती से विवाह कर साधा जीवन व्यतीत करती है। "आप-तुम" कहानी में आधुनिक सभ्यता पर तीव्र व्यंग्य हैं। "सातवीं बहन" में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार का करुण चित्र प्रस्तुत है, जहाँ पुत्र की आशा में प्रति वर्ष पुत्री उत्पन्न होती है। "समस्या उलझती गई" कहानी में किशोर की पत्नी द्वारा परपुरुष से प्रेम की समस्या का चित्रण हुआ है। इनकी कई सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कहानियाँ "सारिका" "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती थी।

शिवानी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं– "करिएछिमा", "विषकन्या", "अपराधिनी", "पुष्पहार", "रतिविलाप", "लाल हवेला", "रोमान्स", "मेरी प्रिय कहानियाँ" आदि।

लेखिका का कहानी-साहित्य कुमायूँ कथांचल से भरा हुआ है। "करिएछिमा" कहानी में नायिका अपनी अवैध सन्तान को नदी में बहाती है लेकिन अपने प्रेमी को समाज की नज़रों से बचाती है। पकड़े जाने पर भी वह अपने प्रेमी का नाम नहीं बताती। इन्हें गुजराती, बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का पूर्ण ज्ञान है। विभिन्न भाषाओं के प्रयोग से इनकी भाषा सुन्दर बनी है। लेखिका ने नारी की समस्याओं को उभार कर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी-जीवन की सूक्ष्म बातों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

ममता कालिया के कहानी-संग्रह में अधिकतर कहानियां सेक्स सम्बन्धी हैं। जैसे–बड़े दिन की पूर्व साँझ, दो जरूरी चेहरे। इनकी कहानियों में टूटते सम्बन्धों, तड़प, रिश्तों के खोखलेपन का चित्रण है। जैसे – "वे" और "छुटकारा" कहानी में इसका उदाहरण मिलता है। "अपत्नी" में प्रबोध और लीला पति-पत्नी की तरह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहते हैं, लेकिन प्रबोध ने पहली पत्नी को तलाक नहीं दिया है। "साथ" में भी सुनव्या ऐसे व्यक्ति के साथ रहती है जो अपनी बीबी से अलग हुआ है लेकिन तलाक नहीं हुआ। "बेतरतीब", "पिछले दिनों का अंधेरा", में मनुष्य के अकेलेपन का चित्रण हुआ है। इनकी कहानियों का कथ्य यथार्थ पर आधारित और नवीन है। इन्होंने "बेघर", "नरक दर नरक" आदि उपन्यास भी लिखे हैं।

मृदुला गर्ग अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका हैं। उसके "हिस्से की धूप", "चित्तकोबरा", "वंशज", "वे सात दिन", "अनित्य" आदि इनके उपन्यास हैं। "कितनी कैदें", "टुकड़ा-टुकड़ा आदमी", "डेफोडिल जल रहे हैं" आदि इनके कहानी-संग्रह हैं। "एक और अजनबी"—नाटक और "एटच ऑफ सन" अंग्रेजी उपन्यास हैं। मृदुला जी अधिक महत्व उपन्यास को ही देती है क्योंकि उनके अनुसार वह उपन्यास में सरलता से अपनी बात कह पाती है। इनका मुख्य विषय सेक्स है। "अवकाश", "एक और विवाह", "अगर यों होता", "अलग-अलग कमरे" आदि सब सेक्स से सम्बन्धित हैं। पुरस्कृत कहानी "कितनी कैदें" भी सेक्स सम्बन्धी हैं। इन्होंने आधुनिक समाज की विषमताओं और विडम्बनाओं, उच्चवर्ग की बुराइयों, उच्च वर्ग के परिवेश का चित्रण किया है। "उनके जाने की खबर", "दुनिया का कायदा", में लेखिका ने उच्चवर्ग के लोगों को अपनी पत्नी को परपुरुष को समर्पित करते दिखाया है। "हरी बिन्दी", "एक और विवाह" जैसी कहानियों में नारी स्वयं परपुरुष की ओर आकर्षित होती है। "हरी बिन्दी" की नायिका विवाहित भी है। मृदुला जी ने स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्धों एवं अनुभवों पर आधारित कहानियाँ लिखी हैं।

शशिप्रभा शास्त्री की कई कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। सीढ़ियाँ, अमलतास, नावें, परछाइयों के पीछे आदि इनके उपन्यास हैं। "धुली हुई शाम", "अनुत्तरित" कहानी संग्रहों की अधिकांश कहानियाँ सामाजिक समस्याओं पर आधारित हैं। "अनुत्तरित" की कई कहानियाँ पति से ऊबी हुई और परपुरुष की ओर आकर्षित नारियों पर लिखी गई हैं। "दो कहानियों की बीच" (1978) में 11 कहानियाँ हैं, जो आज के सामाजिक जीवन और मध्यवर्गीय समस्याओं पर आधारित हैं। इन्होंने अधिकतर नारी समस्या को ही चित्रित किया है। इन्होंने परम्परागत वर्णनात्मक शिल्प के अनुसार कहानियाँ लिखी हैं। साफ, सुथरी, सरल, प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें संकेत, प्रतीक भी मिलते हैं।

दीप्ति खंडेलवाल के प्रमुख कहानी-संग्रह "कड़वे सच", "सलीब पर", "वह तीसरा", "नारी मन", "दो पल की छांह", "धूप के अहसास" हैं। "क्षितिज", "वह", "शेष-अशेष", "देह की सीता", आदि कहानियों में पति-पत्नी के टूटते सम्बन्धों का चित्रण किया गया है। इन्होंने मन की कोमलता, अकेलेपन, प्रेम और मोहभंग का चित्रण किया है। "वह तीसरा" (1976) संग्रह में एक लघु उपन्यास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और दस कहानियाँ संकलित हैं। इनकी अधिकांश कहानियाँ नारी-पुरुष के विभिन्न सम्बन्धों पर आधारित हैं। लेखिका ने सरल भाषा, प्रतीकों, संकेतों, व्यंग्य के माध्यम से नारी पुरुष के जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है और नारी की परम्परागत रूढ़ियों से मुक्ति पाने के लिए छटपटाते दिखाया है।

सुधा अरोड़ा की अधिकांश कहानियों में किशोरों और किशोरियों के आपसी तनाव और उनके मोहभंग का चित्रण मिलता है। इन्होंने अपने कहानी-संग्रह "युद्ध विराम" और "बगैर तराशे हुए" में युवक युवतियों की परेशानियों, प्रेम, विवाह, असफलता, निराशा, घुटन, अकेलेपन का चित्रण किया है। इन्होंने एक युवती की मानसिक उलझनों को कहानियों में प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त विश्वासघात, असत्य मुखौटे, घृणित कर्मों के चित्र प्रस्तुत किए हैं। "मेरी हुई चीज", "डर" "बगैर तराशे हुए", "एक सेंटीमेंटल डायरी की मौत", "घर", "आग" आदि इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

निरूपमा सेवती के प्रमुख कहानी-संग्रह हैं–'आतंक बीज', 'खामोशी को पीते हुए', 'काले खरगोश', 'भीड़ में गुम कच्चे मकान' आदि इन्होंने मध्यवर्गीय मानसिकता और नारी-पीड़ा पर आधारित कहानियाँ लिखी हैं। इनकी कहानियों में मध्यवर्गीय नारी का विद्रोह, भटकाव, आम-आदमी का विद्रोह, भटकाव, संघर्ष, समर्पण आदि मिलता है। "आतंक बीज" (1975) कहानी-संग्रह में 9 कहानियाँ हैं, जिनमें बदलते जीवन मूल्य और मध्यवर्गीय आन्तरिक संघर्ष और आधुनिक नारी का चित्रण हुआ है। "निरूपमा सेवती की कहानियों मे बदले जीवन मूल्यों और मध्यमवर्गीय आन्तरिक संघर्षों का चित्रण मिलता है।"[1] लेखिका ने सशक्त भाषा, अंग्रेजी शब्द, पात्रानुकूल भाषा, संकेतों का प्रयोग किया है।

उषा प्रियम्वदा ने भी हिन्दी साहित्य जगत को बहुत कुछ दिया है। 'फिर बसन्त आया', 'जिन्दगी और गुलाब के फूल', 'एक कोई दूसरा', 'मेरी प्रिय कहानियाँ, 'कितना बड़ा झूठ'। इनका "जिन्दगी और गुलाब के फूल" नामक कहानी-संग्रह सन् 1960 से पूर्व का है। इसमें 12 कहानियाँ हैं, जैसे "पैरम्बुलेटर", "वापसी", "मोहबन्ध", "कच्चे धागे", "पूर्ति", "चांद चलता रहा" आदि। इन कहानियों में नारी जीवन की कुंठाओं, पीड़ाओं, अतृप्त आकांक्षाओं आदि को प्रस्तुत किया गया है।

उषा प्रियम्वदा का "कितना बड़ा झूठ" आठ कहानियों का संग्रह है, जिनमें नारी-पुरुष के बनते बिगड़ते सम्बन्धों का चित्रण हुआ है। लेखिका ने ऐसी नारियों का चित्रण भी किया है जो पुरुष को खिलौना समझती है और ऐसी नायिका भी मिलती है जो पुरुष के झूठे प्यार और धोखे से पीड़ित है। लेखिका ने आम भाषा का प्रयोग किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृष्णा सोबती हिन्दी की जानी मानी लेखिका है। आपने उपन्यास और कहानी–दोनों क्षेत्रों में सफलता पाई है। "डार से बिछुड़ी", "मित्रों मरजानी", "सूरजमुखी अंधेरे के", "जिन्दगीनामा" इनके उपन्यास हैं और "यारों के यार-तिन पहाड़", "बादलों के घेरे" कहानी-संग्रह हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में नारी के विभिन्न वास्तविक रूप और पुरुष के कटु रूप प्रस्तुत किए हैं। "यारों के यार" कहानी में आधुनिक पूंजीवादी और व्यावसायिक दृष्टिकोण प्रधान महानगरीय जीवन के बोझ से पिसे क्लर्को के जीवन का सूक्ष्म अध्ययन है। इस कहानी में ऑफिसों में प्रचलित भाषा और वहाँ के आचरण का चित्रण है। "बादलो के घेर" (1980) संग्रह में विभिन्न विषयों पर आधारित 24 कहानियाँ हैं। "सिक्का बदल गया", "बहनें", "एक दिन", "बदली बरस गयी", "बौले बादशाह" आदि इनकी कहानियाँ हैं। इन्होंने नारी की मानसिक एवं भीतरी समस्याओं का चित्रण किया है। इनकी भाषा सरल, सपाट है और पंजाबीपन की छाप से पूर्ण है।

मन्नू भण्डारी जी का हिन्दी की महिला कहानीकारों में एक विशेष स्थान है। आपने हिन्दी जगत को बहुत कुछ दिया है। 'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'श्रेष्ठ कहानियाँ, 'प्रिय कहानियाँ', 'यही सच है', 'त्रिशंकु' –इनके कहानी संग्रह हैं। "आपका बंटी", "स्वामी", "महाभोज" इनके उपन्यास हैं। "एक इंच मुस्कान" (उपन्यास) "अकेली", "एक पुरुष-एक नारी" (कहानी संग्रह) की रचना इन्होंने पति–राजेन्द्र यादव से मिलकर की है। पारिवारिक जीवन में कलह, पति–पत्नी के सम्बन्ध, प्रेम, नारी, समस्या आदि इनकी कहानियों के विषय हैं। "गीत का चुम्बन", "कील और कसक", "यही सच है" में नारी की पुरुष के लिए तड़प और परपुरुष के प्रति आकर्षण का चित्रण मिलता है। "नशा", "क्षय", "तीसरा आदमी", "घुटन" आदि कहानियों में नारी की भावनाओं और समस्याओं का यथार्थ रूप मिलता है। इन्होंने निम्न और मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है। "मैं हार गई", "तीन निगाहों की एक तस्वीर", आदि इनके साठ से पूर्व के कहानी-संग्रह हैं। इन्होंने व्यक्ति के अहं, टूटन और नवीन सम्बन्धों के प्रति आकर्षण आदि का चित्रण किया है। इन्होंने नई भाषा-शैली, व्यंग्य आदि का प्रयोग किया है।

जमीला हाशमी हिन्दी की जानी-मानी लेखिका हैं। इनका बचपन अमृतसर में बीता है। इन्होंने अपने साहित्य में अपने जीवन के आसपास की घटनाओं को ही स्थान दिया है। लेखिका कहती है, "व्यक्तिगत बात अगर छोड़ भी दीजिए तो मेरे अधिकांश लेखन में मेरे बचपन से ही लोगों का चित्रण हुआ है–वही संस्कार घटनाएं, हिन्दू नाम, हिन्दू त्यौहार, पौराणिक घटनाएं......"[4] इन्होंने कई कहानियाँ लिखी हैं जो कई पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई और जिनसे इन्हें पाकिस्तान में लोकप्रियता मिली। "आप बीती जग बीती" इनका कहानी-संग्रह हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन्हें साहित्य के प्रति विशेष रुचि रही है। नए लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए ये हर साल अपने पति-सरदार अहमद अवैशी-के नाम से पाँच हजार रुपयों के पुरस्कार के समारोह का आयोजन करती आ रही हैं। इस समारोह में वही लेखक पुरस्कार पाने का प्रयत्न कर सकते हैं जो नए हों और जिनकी एक ही कृति प्रकाशित हुई हो। "ज़हर का रंग", "आग पुरानी" इनके उपन्यास हैं। इन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिला है। इनकी प्रथम कहानी, "अधूरे ख्वाब" सन् 1952 में प्रकाशित हुई थी।

रजिया फसीह अहमद भी पाकिस्तान की प्रसिद्ध कहानी लेखिका हैं। इन्होंने पाकिस्तान से ही उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और समाजशास्त्र, विषयों में स्नातक स्तर तक शिक्षा पाई हे। "सीमे अबी आपा", "इन्तजारे मौसमे गुल", "एक जहाँ और भी है", "दो पाटन के बीच", "तप्ती छीन", "अक्षर-ए-इश्क" आदि इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

बेगम गुल, पैरों के छाले, तारा, इनके उपन्यास हैं। "सैरे पाकिस्तान" एक बाल उपन्यास है। इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। "आंख का कांटा" नामक कहानी के लिए इन्हें राइटर्स गिल्ड का पुरस्कार दिया गया है। सन् 1965 में इन्हें "आदमजी पारितोषिक" का पुरस्कार मिला। इनकी कहानियाँ सामाजिक समस्याओं, नारी-पुरुष के सम्बन्धों, बदलते मूल्यों, नारी के सघंर्षों पर आधारित हैं। "बेसम मुसाफिर" इनका कहानी-संग्रह है।

नासिरा शर्मा का जन्म सन् 1948 में उत्तर प्रदेश-इलाहाबाद में हुआ। स्नातक स्तर तक उन्होंने इलाहाबाद में भी शिक्षा पाई। इनके स्वर्गवासी पिता प्रोफेसर ज़मीन अली थे। नासिरा जी मुसलमान के शिया फिर्के से सम्बन्धित हैं। ये अच्छे पढ़े-लिखे परिवार में पली-बढ़ी हैं। इनके पिता उर्दू के प्रोफेसर थे।

इन्होंने डॉ॰ शर्मा से विवाह किया, जिनसे इनकी एक लड़की और एक लड़के का जन्म हुआ। आजकल अपने परिवार के साथ जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में रहती हैं। इन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से सन् 1979 में फारसी (Persian), भाषा और साहित्य (आधुनिक) में एम॰ए॰ किया। इसके अतिरिक्त इन्हें हिन्दी, उर्दू, पश्तो और अंग्रेजी भाषा का पूर्ण अधिकार है।

इन्हें ईरानी संस्कृति से अत्यंत रुचि है। इनका "सात नदियाँ एक समुन्दर" नामक उपन्यास और "शामी कागज" कहानी-संग्रह की कहानियाँ ईरानी जनजीवन के संघर्षों, क्रांति पर ही आधारित हैं।

लेखिका होने के अतिरिक्त आप एक पत्रकार भी हैं। इन्होंने ईरान पर अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी भाषा में कई लेख लिखे जो स्वदेशी एवं विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन्होंने ईरान, ईराक, पाकिस्तान, बंगलादेश अफगानिस्तान और भारत के कई नेताओं और बुद्धिजीवियों एवं लेखकों से साक्षात्कार (Interviews) किया है। इन्होंने भारतीय दूरदर्शन के लिए कई सामाजिक फिल्में लिखी हैं। भारतीय रेडियों के लिए भी कई कार्यक्रम किए हैं। इन्होंने इंग्लैण्ड, ईरान, ईराक, फ्रांस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान की यात्राएं की हैं।

लेखिका ने जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में तीन साल फारसी (Persian) पढ़ाने का कार्य भी किया है।

उपन्यास :–

"सात नदियाँ एक समुन्दर", "शालमली", "ठिकरे की मंगनी", "जिन्दा मुहावरे"।

कहानी संग्रह :–

"शामी कागज़" (1980) ईरानी जनजीवन पर आधारित 16 कहानियों का संग्रह है।

"पत्थर गली" (1986) भारतीय मुस्लिम समाज पर लिखा हुआ कहानी-संग्रह है।

"इबने मरियम" (1993) राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक दृश्यों पर आधारित कहानी संग्रह हैं।

इनकी सात अनुदित कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं और आठवीं "गुलिस्ताने सैदी" प्रकाशित होने वाली है। इन्होंने हिन्दी, उर्दू, फारसी में बाल साहित्य लिखा है। इनकी कई कहानियाँ पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई हैं। लेखिका कहती हैं, "उन्होंने बचपन से ही लिखना आरम्भ किया और तभी से प्रकाशित होने लगा। ये दो भाई और तीन बहनें हैं। आगे चलकर लेखिका गाजियाबाद की पत्रिका, "महिला विशेषांक" का संपादन कार्य संभालना चाहती हैं, जिसमें वर्तमान साहित्यकारों का साहित्य प्रकाशित किया जाएगा। लेखिका के अनुसार–इन्होंने भिन्न विषयों पर लेखनी चलाई है, शायद इसीलिए इनके साहित्य का किसी ने भी मूल्यांकन अभी तक नहीं किया।"[5] "बुतखाना", "तकाजा", "आमोख्ता", "खुशबू के रंग", "आबेतोबा", "दस्तक", "खिड़की" आदि कहानियाँ विभिन्न पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई हैं।

कुमारी रजिया तहसीन का जन्म 12 जुलाई, 1936 को उदयपुर में हुआ। विद्याभवन से शिक्षा आरम्भ कर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा उदयपुर में ही प्राप्त की। इन्होंने इतिहास, समाज-शास्त्र और उर्दू–विषयों में बी०ए० किया। इन्हें लेखन कार्य, अध्ययन, यात्रा और उद्यानकर्म (बागवानी) में विशेष रुचि है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखिका होने के अतिरिक्त ये समाज-सेविका भी हैं। माता-पिता के सार्वजनिक कार्यों से प्रेरणा पाकर पढ़ाई के बाद इन्होंने भी समाज-सेवा में भाग लिया। आजकल ये कई सामाजिक संस्थाओं की सदस्या हैं। जैसे–

1. बाल संसार, उदयपुर,
2. गांधी शान्ति संस्था, दिल्ली,
3. महिला मण्डल, उदयपुर,
4. लेखिकाओं की संस्था–लेखिका संघ, दिल्ली (अखिल भारतीय)
5. सेवा मन्दिर उदयपुर की सहलाहकार समिति की सदस्या,
6. बाल साहित्य संस्था (AWIC), दिल्ली।
   (Association of Writers Illustration for Children, New Delhi)
7. सर्वोदय मण्डल, उदयपुर,
8. किशोर कल्याण बोर्ड, उदयपुर–(ऑनररी मजिस्ट्रेट)
9. भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर,
10. विद्याभवन विद्या बंधु संघ, उदयपुर,
11. लोकभारती प्रतिष्ठान-डूंगल्म (चित्तोड़गढ़)
12. राजस्थान राज्य जनतादल, उदयपुर,
13. सांझी, उदयपुर।

इन्होंने जंगल को सजाने संवारने, जंगली जानवरों को बचाने के लिए बहुत काम किया है और कर रही हैं।

इनका कहानी-संग्रह–"शिकारी-शिकारी जंगल से प्यार" शिकार की सच्ची घटनाओं पर आधारित है। "यह ग्रंथ अकेली शिकार कथा नहीं है बल्कि आजीवन प्रकृति प्रेमी और अभ्यासी एक कुटुम्ब परम्परा की मुँह जबानी कहानी है।"[6]

लेखिका के दादा और पिता–तफज्जुल हुसैन तहसीन–जाने-माने शिकारी थे। लेखिका के पिता अपने परिवार समेत शिकार पर जाते थे जिससे लेखिका का जंगल से प्यार हुआ और उन्हें जंगल के सुन्दर दृश्य और अपने पिता को अपनी आँखों से शिकार करते हुए देखने का मौका मिला। लेखिका की माता भी शिकार में रुचि रखती थीं। लेखिका ने संग्रह में अपने पिता और भाइयों के शिकारी की कथाओं को ही लिखा है। इन शिकार कहानियों के नायक लेखिका के पिता है जो 80 साल की उम्र में भी चुस्त, दुरूस्त हैं। "इस पुस्तक में जंगल की बरबादी और जानवरों की समाप्ति पर जहाँ दर्द और टीस भरी झंकार मिलती है, वही आज से 30-40 साल पहले मेवाड़ के घने जंगलों और उनमें विचरते जानवरों की सतरंगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झलक भी दिखाई पड़ती है। साथ ही यह कुदरत के बेहद दिलकश मंजरों की दास्तान भी कहती है, जो दिलोदिमाग को जकड़ लेती है।"[7]

इस संग्रह के लिए इन्हें "केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय" और "राजस्थान साहित्य अकादमी" में पुरस्कृत भी किया गया है। इस संग्रह का उर्दू भाषा में अनुवाद भी हुआ है।

लेखन कार्य इन्होंने बचपन से ही आरम्भ किया, किन्तु सन् 1970 के बाद ही ये उभर आई। इन्होंने रेडियो के लिए कई लघु कथाएं लिखीं हैं और देश के प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। प्रकृति, जंगल, पहाड़, जंगली जानवर, जड़ी बूटी तथा आदिवासी जीवन और उनकी समस्याओं का चित्रण करना इनकी कहानियों की विशेषताएँ हैं।

मध्यप्रदेश के जंगलों में अंग्रेजी शिकारियों द्वारा खेले गए शिकार की अंग्रेजी कहानियों का इन्होंने हिन्दी अनुवाद किया, जो पुस्तकाकार रूप में "रोमांचकारी शिकार कथाएँ" शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

लेखिका अपने पिता और भाइयों की तरह वन्य पशु-पक्षियों के संरक्षण और अध्ययन का काम करती हैं।

शिकार कहानियों को अतिरिक्त ये लेख भी लिखती हैं। "सामाजिक और प्राकृतिक माहौल भरे लेखन के खास मौजू रहते हैं।"[8]

इनकी "लेखन शैली इतनी सरल और प्रवाहित है कि पाठक पढ़ते ही प्रकृति में खो जाता है। मानों आप जंगल में शिकार की सैर में सफर कर रहा हो और प्रकृति का आनन्द ले रहा हो।"[9]

श्रीमती शमुन्निसा खान "शमां" का जन्म 5 जुलाई, 1949 में हुआ। इनके पिता का नाम, अब्दुल हमीद खांन और माता का नाम बानो-बी था। इनकी शिक्षा बी०ए०, बी०एड० (भूगौल) तक हुई है। आप केन्द्रीय विद्यालय झांसी की स्नातक शिक्षिका हैं। इनकी शादी सन् 1974 में सर्कल इंस्पेक्टर जनाब हबीबुर्रहमान खांन से हुई। आप संयुक्त परिवार में रहती हैं और घर में बड़ी बहू हैं। आपकी तीन सन्तान हैं–दो लड़के और एक लड़की, जिनकी उम्र क्रमशः 16, 14, 12, साल है।

सन् 1981 से आप हिन्दी साहित्य की सेवा में जुट गई। आकाशवाणी पोर्टब्लेयर, नागपुर, रायपुर, छतरपुर, भोपाल से आपकी कविताएँ, गज़लें और कहानियाँ प्रसारित हुई हैं। आप रेडियो नाट्य कलाकार भी हैं। आपने केजुअल एनाउन्सर का कार्य भी किया है।

आपने हिन्दी राष्ट्र भाषा केन्द्रीय निदेशालय द्वारा आयोजित 'हिन्दोत्तर नवलेखक शिविर' में भी भाग लिया है। आप "बगर राज भाषा समिति" की सदस्या और "सर्वभाषी लेखक संघ पोर्टब्लेयर" की सेक्रेटरी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थानीय दैनिक पत्रों-पत्रिकाओं "सरिता", "संगम", "अनुमेहा", "सागरतरंग", "दीपलहरी" में आपकी कविताएं, कहानियाँ, गज़लें प्रकाशित होती हैं।

सन् 1987 में आपका कहानी संग्रह–"गुलमोहर खिल गया" प्रकाशित हुआ है और "चिंगारी बुझी-बुझी सी" कहानी-संग्रह प्रकाशित होने वाला है।

लेखन कार्य के अतिरिक्त आप संगीत एवं चित्रकारी में भी विशेष रुचि रखती हैं।

इनकी "सलमा" नामक कहानी से ज्ञात होता है कि ये नारी को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा देना चाहती हैं। "सलमा" की नायिका अपने माता-पिता और गरीबी से विद्रोह करके आत्मनिर्भर होकर सम्मान का जीवन जीने में सफल होती है। नायिका पहले घर-घर जाकर लोगों का काम करती थीं और बदले में उसे चोरी का आरोप ही मिलता। लेकिन "कल की निराश और लक्ष्यविहीन अभावों से जूझते हुए किस्मत को कोसने वाली सलमा ने आज मुहल्ले की सबसे फैशनेबुल महिलाओं और लड़कियों के कपड़े सिलने में एकाधिकार प्राप्त कर लिया।"[10] इस प्रकार वह अपना सपना पूरा करती है।

लेखिका की भाषा सरल, स्पष्ट और अंग्रेजी, उर्दू, तदभव शब्दों से पूर्ण है। मुहावरों, संकेतों के प्रयोग से भाषा सुन्दर हो उठी है।

वर्तमान युग की कई नई उभरती हुई कहानी लेखिकाएं साहित्य को अपना योगदान दे रही हैं, जिससे यह महिला कथाकारों की परम्परा का भविष्य उज्जवल है, जैसे प्रतिमा वर्मा, बदरुन्निसा, सलमा सिद्धिकी, राजी सेठ, इन्दुबाली आदि।

मेहरुन्निसा परवेज़ साठोत्तरी महिला कहानीकारों में विशेष महत्व रखती हैं। इनका नाम प्रमुख महिला कहानी लेखिकाओं के साथ अवश्य लिया जा सकता है।

मेहरुन्निसा जी ने समाज के हर वर्ग, हर उम्र की नारी की समस्या पर लेखनी चलायी है। उनके साहित्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु नारी ही है। अन्य महिला कहानीकारों की भांति आपने भी नारी के स्वाभिमान, पीड़ा, संघर्ष, हार, जीत, ऊब का ही चित्रण किया है। चाहे फिर वह नारी "टोना", "सिढ़ियों का ठेका", "गुरुमंत्र", "देहरी की खातिर", की नायिका की तरह अशिक्षित और निम्नवर्ग की हो, चाहे "आदम और हव्वा", "जुगनू", "वीराने" की नायिका की तरह मध्यवर्ग की हो और शिक्षित एवं आत्मनिर्भर हो।

लेखिका ने नारी की कई प्रकार की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। जैसे "पत्थरवाली गली" और "जंगली हिरनी" की बालिकाएँ अपने जीवन की समस्याओं और दुर्घटनाओं से हार कर टूटकर बिखर जाती हैं। कुछ नायिकाएँ अपने जीवन की समस्याओं से समझौता करने के लिए विवश हैं। वह चाहकर भी मुक्त नहीं हो पाती, विद्रोह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं कर पाती–जैसे "बूँद का हक", "अपने होने का एहसास" एवं "विद्रोह" कहानियों की नायिकाएं।

इस प्रकार लेखिका ने नारी की मानसिक पीड़ा को प्रकट करने का सफल प्रयत्न किया है। लेकिन आधुनिक नारी अपनी समस्याओं को भी समझती है और अपनी शक्ति से भी परिचित है। वह अधूरा और अपमानित जीवन नहीं जी सकती। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति चाहती है, जिसके लिए उसे विद्रोह करना पड़ता है और कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आधुनिक नारी को स्नेह, सम्मान, सहारा, अपनापन सब एक जगह से चाहिए। यदि न मिल पाया तो उसे कुछ भी न लेना स्वीकार है लेकिन भीख, अपमान और उपेक्षा लेना स्वीकार नहीं। "अन्तिम चढ़ाई", "अयोध्या से वापसी", "रेगिस्तान" कहानियों की नायिकाएँ इसी यथार्थ का चित्रण करती हैं।

हिन्दी कहानी साहित्य में ग्रामीण समाज के जोवन के आर्थिक संकट को उभारने की परम्परा है, जिससे स्वतंत्र भारत की अर्थव्यवस्था का चित्रण होता है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए लेखिका ने "सीढ़ियों का ठेका" में ऐसी कई ग्रामीण महिलाओं को चित्रित किया है जो विधवा और असहाय होने के साथ-साथ परिवारजनों के बुरे व्यवहार से भी पीड़ित हैं और भीख मांग कर अपना खर्चा चलाती हैं। "त्यौहार" कहानी में भी ग्रामीण निम्नवर्गीय परिवार का चित्रण हुआ है, जहाँ अम्मा आर्थिक तनाव से पीड़ित होकर ज़कात (दान) स्वीकार करने के लिए विवश हो जाती है।

आर्थिक संकट के कारण ही समाज में बेटी-पत्नी से व्यापार कराने के उदाहरण भी मिलते हैं। मेहरुन्निसा की "ओढ़नी" कहानी की नायिका को बांछड़ा जाति की परम्परा के अनुसार ही केवल इसलिए धंधे पर बिठाया जाता है कि वह धन कमाए और उसी धन से सारे घर का पालन-पोषण हो। कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी "निठल्ले" में भी ऐसे ही दरिद्र परिवार की घोर अमानवीय प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है। माता-पिता अपनी विवाहित पुत्री पचिया को विदा न करके उसके शरीर का सौदा करते हैं। उसी के शरीर की कमाई से घर का खाना-पानी चलता है और पुरुष निठल्ले घर पर बैठे खाते, हज़म करते हैं और नशे के लिए स्त्री से पैसे न मिलने पर उसकी मार पीट भी करते हैं। मेहरुन्निसा की कहानी, "देहरी की खातिर" में भी इसी बात का चित्रण हुआ है कि पुरुष अपना पैसा शराब और जुए में लुटाता है और पत्नी घर के दो समय के खाने का खर्च अपना शरीर बेचकर चलाती है। पति को कोई चिन्ता नहीं कि उसकी पत्नी पैसा कहाँ से लाती है।

आदर्श भारतीय नारी स्वयं को पति के बिना अधूरा समझती है। वह पति को ईश्वर मानती है चाहे वह शराबी, जुआरी होने के साथ-साथ उसकी मारपीट भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करता हो और चरित्रहीन भी हो। वह उस कष्ट को अपना भाग्य मानती है, पति का अत्याचार नहीं। यदि वह इस पीड़ा को सहन करती है तो उसे सामाजिक सम्मान भी मिलता है। नारी की विडम्बना तो यह है कि वह स्वयं भी अपने पति को भूल नहीं पाती चाहे वह कितना ही घृणित क्यों न हो। इसी नारी-विडम्बना का चित्रण मन्नू भण्डारी की कहानी "नशा" और मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी "श्नाख्त" में भी हुआ है। "नशा" कहानी की आनन्दी का पति शंकर निखट्टू, शराबी और मूर्ख भी है। आनन्दी सिलाई, बुनाई, कूटना, पीसना करके कमाती है और मोटे अनाज की सूखी रोटियां पानी के साथ निगल जाती है। लेकिन उसका पति ना तो बिना शराब पिए सो सकता है औ न ही आनन्दी की बनाई जौ की रोटियाँ खाएगा अत: वह शराब और अच्छे खाने के लिए पैसा आनन्दी के छाले पड़े हाथों से ले लेता है। आनन्दी का पुत्र उसे ले जाता है और फिर बहू-बेटे के साथ सुखी जीवन व्यतीत करती है। लेकिन फिर भी वह चोरी छुपे पड़ोसियों के कपड़े सिलती है, स्वेटर बुनती है और बेटे से छुपाकर अपने कमाए हुए बीस रुपए अपने पति शंकर को भेजती है। "श्नाख्त" कहानी की नायिका भी अपने शराबी, निखट्टू, चरित्रहीन पति को नहीं भूल पाती है। उसका पति नशे में अपनी बेटी को भी अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता है। इतना घृणित, निंदनीय पति भयानक मौत पाकर भी पत्नी की करूणा का पात्र बन गया है।

नारी हृदय करूणा, स्नेह, ममता, क्षमा, त्याग, सहनशीलता से भरा हुआ है। लेकिन कभी-कभी पुरुष से इतना तंग आती है कि वह उसकी मृत्यु की कामना करने लगती है। पुरुष के कठोर शासन से मुक्ति पाने का रास्ता न मिलने पर वह उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करती है। मन्नू भण्डारी की "क्षय" कहानी में कुंती अपने पिता-माता-भाई के पालन-पोषण के बोझ और अन्य समस्याओं से पीड़ित होकर कराह उठती है,-"हे भगवान ! अब तू पापा को उठा ले ! मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। मैं टूट चुकी हूं।"[11] मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी "सिर्फ एक आदमी" की सुमी अपने पिता से विद्रोह करके और पिता की इच्छा के विरुद्ध अपने प्रेमी से विवाह नहीं करना चाहती और पिता उसे विवाह की अनुमति देते नहीं। सुमी अपने पिता के कठोर शासन और कटु व्यवहार से भी पीड़ित है। विवश होकर सुमी अपने प्रेमी से कहती है, "अतुल, क्या तुम बप्पा की मौत तक इंतजार नहीं कर सकते? जिस दिन बप्पा मरेंगे, मैं तुम्हारे पास चली आऊंगी, बस !"[12]

लेखिकाओं ने कामकाजी अविवाहित महिला के जीवन का करूण चित्र प्रस्तुत किया है। ऐसी कई नारियां हैं जिन्हें विवश हो कर घर से बाहर जाकर नौकरी करके अपने पति की गृहस्थी को चलाना पड़ता है। मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी "विद्रोह" की नायिका और मन्नू भण्डारी की कहानी "क्षय" की नायिका-दोनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमाऊ हैं और अपने माता-पिता, भाई-बहनों का पालन पोषण करती हैं। इस बोझ से, अपने अकेलेपन से वह कुंठित होती है और उनका नारीत्व तड़प उठता है।

उषा प्रियंवदा की कहानी "जिंदगी और गुलाब के फूल" में भी कमाऊ पुत्री घर का खर्च चलाती है। मेहरुन्निसा की "अकेला गुलमोहर" की नायिका की शादी उसका भाई इसलिए नहीं करता कयोंकि वह कमाऊ है और शादी के बांद वह घर खर्च के पैसे देना बन्द कर सकती है।

उषा प्रियंवदा की "वापसी" और मेहरुन्निसा परवेज़ की "उसका घर" में गृहस्वामी की उपेक्षा और अपमान का चित्रण हुआ है।

उषा प्रियंवदा की कहानी "मोहभंग", मन्नू भण्डारी की "तीसरा आदमी" और "बंदे दरवाजों का हाथ" और मेहरुन्निसा परवेज़ की "बंजर दोपहर" और "अपने अपने दायरे", "खाली आंखों की पीड़ा" में पति-पत्नी के खोखले सम्बन्ध, आपसी ऊब का चित्रण हुआ है।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानी "भूख" और मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी "एक और सैलाब" की नायिकाओं के पास पति के इलाज और बच्चों को खिलाने के लिए धन नहीं है। "भूख" की नायिका अपना शरीर बेचने के लिए विवश हो जाती है और "एक ओर सैलाब" की नायिका की मानसिक रूप से अपना शरीर बेचने के लिए तैयार है।

मन्नू भण्डारी की "ऊंचाई", निरूपमा सेवती की "ठहरी हुई खरोंच", मृदुला गर्ग की "कितनी कैदें" और मेहरुन्निसा परवेज़ की "चुटकी भर समर्पण" में नारी की यौन-स्वच्छन्दता का चित्रण हुआ है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लगभग सभी लेखिकाएं एक ही से विषयों पर अपनी लेखनी चलाती हैं। उनका उद्देश्य केवल नारी ह्रदय की कोमलता, पीड़ा, तड़प, घुटन, समस्याओं, विद्रोह और बदलाव का चित्रण करना रहा है।

मेहरून्निसा परवेज़ के पात्र किसी संवेदना या अनुभूति या बाहरी दबाव, भीतरी तनाव से पीड़ित हैं। कुछ पात्र मानों जीवित रहना झेल रहे हों जैसे-"बंजर दोपहर" की सपना, और "विद्रोह" की नायिका। "सलाखों में फंसा आकाश" की नायिका तो जीवित रहने की पीड़ा से मुक्त होना चाहती हैं।

अन्य लेखिका की भांति मेहरुन्निसा ने भी नामहीन पात्रों का सृजन भी किया है, जिनके लिए "वह" शब्द का प्रयोग हुआ है।

कई पात्र निराश, हताश, ऊबे हुए और थके हुए हैं। जैसे "जाने कब" और "अपने होने का एहसास" की नायिकाएँ।

"अंतिम चढ़ाई", "क्यों नहीं" "अकेला गुलमोहर" की नायिकाएं स्वाभिमानी, सुलझी हुई, दृढ़ निश्चय वाली नायिकाएँ हैं।

लेखिका ने आवश्यकतानुसार कहीं लघु, कहीं दीर्घ, कहीं भावपूर्ण, कहीं तर्कपूर्ण,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं सरस, कहीं नीरस, कहीं सारगर्भित, कहीं शिथिल, कहीं सोद्देश्य या कहीं संवादों के लिए रचे गए संवादों का प्रयोग किया है। अतः इनके संग्रहों में हर तरह के संवादों का चित्रण हुआ है। लेखिका ने अलंकृत, व्यावहारिक और लंबे वार्तालापों का प्रयोग भी किया है। लंबे संवाद किसी आवश्यक घटना, भाव, मानसिक स्थिति का चित्रण करने के लिए ही लिखे गए हैं।

आपने अधिकतर निम्नवर्ग और मध्यमवर्ग को लेकर कहानियाँ लिखी हैं। आपने नारी की विविध विडम्बनाएं, सामाजिक स्थिति, आर्थिक संकट, अंधविश्वासों आदि का मिश्रण किया है।

समाज में पलने वाले अंधविश्वासों का एक उदाहरण दृष्टव्य हैं–

"एक ओझा ने टोटका बताया था कि एक आँख में काज़ल लगाओ, दूसरी में नहीं, कोई पूछे तो कहो, तुम ले लो। बस उसी समय से बुखार चला जाएगा।..... .....किसी ने बताया कि दरगाह के पीछे लगी बेल के नीचे दीया रखकर बेल तोड़ लो। ऐसा करने से बुखार चला जाता है।.........."[13]

लेखिका ने नौकरी पेशा वर्ग, श्रमिक वर्ग, शहर के आधुनिक परिवेश, ग्रामीण, एवं कस्बाई परिवेश को चित्रण भी किया है। इन्होंने पुनी त्योहार, तारा गीत, दियारी त्योहार, तारा त्यौहार, गरबा मैला, गरबा नृत्य, बाली मेला आदि में मनाए जाने वाले मेलों और त्यौहारों का उल्लेख किया है। लेखिका ने कई लोकगीत कहानियों में लिखे हैं। गांव के विवाह समारोह में गाए जाने वाले, मेलों में गाए जाने वाले, शहरों में विवाह या सगाई समारोह में गाए जाने वाले और अन्य लोकगीत लेखिका ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किए हैं। एक लोकगीत उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

"आहा मोरे लो सोई, डांगे मारे काच गोई।
मुई तोते खोजु अहीं आकुल होई।।
मोरो मात कोटनीन।
मुंडे बासी पेज बोही।।"[14]

यह गीत एक प्रेम दीवानी अपने प्रेम में मस्त होकर गाती है।

जहां लेखिका ने शहर के भीड़-भाड़ वाले, और शोर-शराबे से भरे वातावरण का चित्रण किया है, वहीं गांव के शान्त, सुन्दर वातावरण को भी प्रस्तुत किया है। लेखिका ने प्रकृति चित्रण भी किया है। कई बार प्रकृति चित्रण कथा को प्रवाह देने में भी सहायक हुआ है। उदाहरण–".............ठंडी-ठंडी हवा कितनी भली लग रही है। रात की हवा कितनी सुहानी लगती है। चारों तरफ सन्नाटा, जैसे किसी ने जादू की लकड़ी घुमा दी है।"[15]

लेखिका ने परम्परागत "वर्णनात्मक पद्धति" के अनुसार ही कहानियाँ लिखी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने "फ्लैश बैक पद्धति" अर्थात पूर्वदृश्य पद्धति, प्रश्न शैली, डायरी पद्धति, पत्र पद्धति, का भी प्रयोग किया है। लेखिका ने सामाजिक कहानियों का सृजन किया है।

मन्नू भण्डारी की "सज़ा", "तीन निगाहों की एक तस्वीर" आदि कहानियों की भांति मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में भी घटनाएं मिश्रित रूप ले चलती हैं। अर्थात् कहानी में जो घटनाएँ बाद की है, उनका उल्लेख पहले हैं और पूर्व की घटनाओं का विवरण कथा के बीच में या अन्तिम भाग में मिलता है।

प्रतीकात्मकता, सांकेतिकता, चित्रात्मकता, गंभीर चिन्तन प्रधान भाव इनकी कहानियों की विशेषताएँ हैं। "माना डाल सूखी है, पर उस पर घोंसला तो है, जिस पर थक-हारकर लौटा तो जा सकता है।"[16] "सूखी डाल" एक ऐसे पति का प्रतीक है, जिससे पत्नी को स्नेह नहीं मिलता और सन्तान भी नहीं मिल सकती, "घोंसला" घर और सहारे का प्रतीक है, जहाँ वह (पत्नी) जीवन भर रह सकती है और जीवन की कठिनाइयाँ से हार कर सहारा ले सकती है। इसी प्रकार कई प्रतीकों का प्रयोग मेहरुन्निसा परवेज़ ने किया है। इसके अतिरिक्त "चिड़िया", "मोर्चा" आदि प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

मेहरुन्निसा जी ने प्रतीकात्मक शीर्षकों का प्रयोग भी किया है। जैसे "ओढ़ना", "तीसरा पेज" आदि। इसी प्रकार का उदाहरण उषा प्रियम्वदा का "मछलियाँ" शीर्षक है।

लेखिका ने कहानियों में उपमाओं को पूर्ण स्थान दिया है। कुछ उपमाएं निम्नलिखित हैं–

"गिद्ध सी आंखों वाली"[17] "जिराफ सी गर्दन"[18] "उसके शरीर से प्यार की गंध महुवे की गंध की तरह उठने लगी थी।"[19] "आंखे रेगिस्तान-सी सूख गई थी।"[20] "मन जिद्दी बच्चे-सा ऐंठ कर जाता"[21], "श्मशान सी सूनी आंखें"।[22]

अन्य अलंकारों की छटा भी लेखिका की कहानियों में मिलती है, जिससे उनकी भाषा सुन्दर और ओजपूर्ण हो गई है। "ढेर फूलों के ढंके वृक्ष मौन खड़े थे मानों किसी बहुत बड़े आदमी के शव को मौन श्रद्धांजलि दे रहे हो।" (उत्प्रेक्षा)[23] "जैसे हवा तक को लकवा मार गया हो।" (मानवीकरण)[24] "निस्तब्धता खुद बौराई-सी लग रही थी।"[25] (मानवीकरण) "सूनापन घर की तपती दीवारों पर उलटा लटका लंबी-लंबी सांसे ले रहा था।" (मानवीकरण)[26] "घर की दीवारों पर निस्तब्धता ने अपने बड़े-बड़े दाँत गाड़ दिए थे।" (मानवीकरण)[27] "धूप का एक टुकड़ा खिड़की की सलाख को पकड़ कर कमरे में झांकना चाहता है।" (मानवीकरण)[28] "वरना आदमी हर जगह जीतकर भी जिन्दगी की लड़ाई हार जाता है।" (विरोधाभास")[29]

सूक्ति अंग्रेजी के "एकोरिज्म" का समानार्थक है। साहित्य में लघु अनुभव,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लघु सत्य का प्रचलन चला। सूक्तियां इसी "लघुसत्य" की अभिव्यक्ति का साधन हैं। लेखिका ने भी अपने व्यक्तिगत जीवनानुभवों को, सामाजिक स्थिति को व्यक्त करने के लिए सूक्ति वाक्यों का प्रयोग किया है।

1. "औरत का मरद के बाद बेटा ही वह खूँटा होता है जिससे वह बंधी रहती है"[30]
2. "मर्द नाम का जो जानवर होता है न, वह दूर से देखने में अलग-अलग आकर्षक लगता है, पर जब उसके पहले में जाओ तो लगता है अरे वही है, वही एक तरह का आलिंगन।.........."[31]
3. "इन्सान को कदम-कदम पर अपनों की जरूरत पड़ती है, ताकि अंधेरे का अहसास कम हो। पर लोगों के साथ रहने पर भी, चलने पर भी, आदमी को अपना अंधेरा तो खुद ही झेलना पड़ता है।"[32]
4. "भगवान भी कभी-कभी कितना निर्दयी हो जाता है। कभी-कभी मुँह बन्द कलियों की पांखुरियों को खिलाना ही भूल जाता है।"[33]
5. "अमीरों के यहाँ जायदाद का बंटवारा होता है पर मध्यम परिवार वाले के यहाँ अपने सुखों को बंटवारा होता है।"[34]
6. "औरत का शक तो चींटी काटे की पीड़ा देता है, पर मर्द का शक तो सांप काटा ज़हर होता है। जान लेकर ही पीछा छोड़ता है।"[35]

सुन्दर शब्दावली, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, युग्म शब्द आदि से लेखिका ने कहानियों में सौन्दर्य का समावेश किया है। उर्दू, फारसी, शब्दो का बाहुल्य इन्हं अन्य लेखिकाओं से भिन्न करता है। लेखिका की अधिकांश कहानियाँ लम्बी हैं और उनमें कृत्रिम चिन्हों (.........) का प्रयोग हुआ है।

लेखिका ने नारी वर्ग की समस्याओं और कठोर सत्यों को उभारकर उनकी स्थिति का चित्रण किया है। उन्होंने नारी को छोटे-छोटे दुख भूल कर दृढ़ होकर अपना अस्तित्व बनाने और स्वावलंबी होने की शिक्षा दी है। पुरानी घिसी-पिटी समस्याओं, जिन्हें नारी झूझती आई है, उनसे विद्रोह करके स्वयं को मुक्त करने की शिक्षा दी है। इसके अतिरिक्त समाज में पलने वाली बुराइयों, छल, कपट, विश्वासघात का चित्रण भी किया है।

मेहरुन्निसा परवेज़ और उनकी समकालीन लेखिकाओं की तुलना की जाए तो कई समानताएं भी मिलती हैं और कई विभिन्नताएं भी मिलती हैं। कथ्य, चरित्र चित्रण, उद्देश्य लगभग सभी महिला लेखिकाओं का एक सा है। लेकिन परिवेश का चित्रण करने, मुस्लिम वर्ग की समस्याओं को उभारने, कहानी लिखने के ढंग आदि की दृष्टि से मेहरुन्निसा अन्य कहानी लेखिकाओं से भिन्न है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेहरुन्निसा परवेज़ अपनी बात को पाठकों तक पहुंचाने में और अपनी कहानियों को सोद्देश्य बनाने में सफल हुई हैं। लेखिका 1963 से निरन्तर हिन्दी साहित्य को अपना योगदान दे रही हैं और आशा है वे दीर्घ काल तक हिन्दी साहित्य पर अपनी छाया रखेंगी।

संदर्भ

1. उर्मिला गुप्ता - "हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में महिलाओं का योग", पृ॰ 9, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-7, (1966).
2. उर्मिला गुप्ता - "हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में महिलाओं का योग", पृ॰ 10, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, (1966).
3. निरूपता सेवती - "आतंक बीज" संग्रह के आमुख से, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, (1975).
4. धर्मयुग (पत्रिका) के अंक 8 दिसम्बर, 1985, पृ॰ 28.
5. साक्षात्कार नासिरा शर्मा से–तिथि - 17 जुलाई, 1992.
6. रज़िया तहसीन - "शिकारी शिकार जंगल से प्यार" संग्रह के पुरावचन से तहसीन प्रकाशन, उदयपुर, पृ॰ 7.
7. रज़िया तहसीन - "शिकारी शिकार जंगल से प्यार", संग्रह के आमुख से, तहसीन प्रकाशन, उदयपुर।
8. पत्र-व्यवहार से।
9. रज़िया तहसीन - "शिकारी शिकार जंगल से प्यार", संग्रह के पुरावचन से, तहसीन प्रकाशन, उदयपुर, पृ॰ 7.
10. "सतरंग" पत्र के अंक - झांसी 25 अगस्त, 1992 में प्रकाशित "शमा" खान की कहानी, "सलमा", पृ॰ 7.
11. मन्नू भण्डारी - "यही सच है" संग्रह में संकलित कहानी, "क्षय" पृ॰ 9, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1966.
12. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "सिर्फ एक आदमी", पृ॰ 18, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
13. मेहरुन्निसा परवेज़ - "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर", पृ॰ 31, सत्साहित्य प्रकाशन दिल्ली, 1991.
14. मेहरुन्निसा परवेज़ - "गलत पुरुष" संग्रह में संकलित कहानी, "जंगली हिरनी", पृ॰ 99, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1977.
15. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "वीराने", पृ॰ 84, आर्य बुक डिपो, दिल्ली, 1990.
16. वही, वही संग्रह - कहानी "चुटकी भर समर्पण", पृ॰ 119.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17. मेहरुन्निसा परवेज़ - "आदम और हव्वा" संग्रह में संकलित कहानी, "श्नाख्त", पृ॰ 27.
18. वही, "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "विद्रोह", पृ॰ 171.
19. वही, "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "दोहरी की खातिर", पृ॰ 27.
20. वही, वही कहानी "रगिस्तान", पृ॰ 104.
21. वही, "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "अन्तिम चढ़ाई", पृ॰ 12.
22. मेहरुन्निसा परवेज़ - "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "चुटकी भर समर्पण", पृ॰ 116.
23. वही, वही संग्रह - कहानी "चमड़े का खोल", पृ॰ 56.
24. वही, "अंतिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक", पृ॰ 43.
25. वही, "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "छोटे मन की कच्ची धूप", पृ॰ 71.
26. वही, "सोने का बेसर", संग्रह में संकलित कहानी, "जाने कब", पृ॰ 178.
27. वही, वही संग्रह - कहानी, "जाने कब", पृ॰ 178.
28. वही, पृ॰ 178.
29. वही, "अन्तिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक", पृ॰ 40.
30. वही, "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "त्यौहार", पृ॰ 27.
31. वही, "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "खाली आंखों की पीड़ा", पृ॰ 165.
32. मेहरुन्निसा परवेज़ - "अंतिम चढ़ाई" संग्रह में संकलित कहानी, "बूंद का हक", पृ॰ 42.
33. वही "एक और सैलाब" संग्रह में संकलित कहानी, "उसका घर", पृ॰ 66.
34. वही, "अयोध्या से वापसी" संग्रह में संकलित कहानी, "अकेला गुलमोहर", पृ॰ 95.
35. वही, "सोने का बेसर" संग्रह में संकलित कहानी, "सोने का बेसर", पृ॰ 29.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिशिष्ट

(क) सहायक ग्रन्थ सूची

1. कमलेश्वर, "नई कहानी की भूमिका", अक्षर प्रकाशन, दिल्ली द्वितीय, संस्करण : 1963।
2. कौल, (डॉ०) सोमनाथ, "स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी विकास एवं मूल्यांकन", आर्याना पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1989.
3. गुप्ता (डॉ०) उर्मिला, "हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में महिलाओं का योग", राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1996.
4. गुप्ता (डॉ०) उर्मिला, "स्वातंत्रयोत्तर कथा लेखिकाएं", राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1967.
5. तहसीन, रजिया, "शिकारी शिकार जंगल से प्यार", तहसीन प्रकाशन, 41 पंचवटी, उदयपुर।
6. परवेज़, मेहरुन्निसा–
   (1) "अंतिम चढ़ाई" कहानी संग्रह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982.
   (2) "अयोध्या से वापसी" कहानी संग्रह, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर, 1991.
   (3) "आदम और हव्वा" कहानी संग्रह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972.
   (4) "आंखों की दहलीज", उपन्यास, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियांगज, दिल्ली, 1969.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(5) "उसका घर" उपन्यास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972
(6) "एक और सैलाब" कहानी संग्रह, आर्य बुक डिपा, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली, 1990.
(7) "कोरजा" उपन्यास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली 1977.
(8) "ग़लत पुरुष", कहानी संग्रह, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1977.
(9) "सोने का बेसर", कहानी संग्रह, सत्साहित्य प्रकाशन, 205-बी चावड़ी बाज़ार, दिल्ली, 1991.

7. भण्डारी, मन्नू, "यही सच है" कहानी-संग्रह, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1966.
8. मदान, इन्द्रनाथ, "हिन्दी कहानी अपनी ज़ुबानी", राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1968.
9. शर्मा, (डॉ॰) ब्रजमोहन, "कथा लेखिका, मन्नू भण्डारी" कादम्बरी प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली-110007, 1991.
10. सराफ (डॉ॰) रामकली, "नयी कहानी : परिवेश और परिप्रेक्ष्य" विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौंक, वाराणसी, 1983.
11. सेवती, निरूपमा, "आतंक बीज" कहानी संग्रह, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1975.

(ख) पत्र-पत्रिकाओं की सूची

1. "ऋतुचक्र"/मार्च-जून/1989, मेहरुन्निसा परवेज़ का वक्तव्य। शीर्षक "मुझे, मां से मिली दर्द की पहचान", पृ॰ 43.
2. "धर्मयुग" साप्ताहिक पत्रिका, अंक 29 अक्टूबर 1989 "ज्योति कथाएं" शीर्षक के अन्तर्गत लिखा हुआ मेहरुन्निसा परवेज़ का लेख-"एक बिंदू शब्द कोश बन गया।" पृ॰ 17.
3. "धर्मयुग", अंक 8 दिसम्बर 1985, पृ॰ 28.
4. "सतरंग" (पत्र), झांसी 25 अगस्त 1992 में प्रकाशित "शमा" खान की कहानी, "सलमा" पृ॰ 7.

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 5697
Dated 17-5-03
G.M.C.E.J
5697
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'नारी अपनी समस्या समझते हुए भी कुछ नहीं कर पाती' मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह कोई विद्रोह नहीं कर पाती, वह तड़प से भरी दोहरी जिदंगी जीती है लेकिन किसी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती।

दुर्भाग्यवश उसकी शादी किसी और से हो जाए तो वह आदर्श बेटी का कर्त्तव्य निभाते हुए सब कष्ट चुपचाप सहती है। समाज भी नारी की इच्छा जानने की आवश्सकता नहीं समझता। बल्कि अपनी इच्छानुसार, अपनी सुविधा देखकर नारी के जीवन का निर्णय लिया जाता है।

"जो व्यक्ति खुद स्वावलम्बी होगा, वही दुनिया का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकता है और आत्मनिर्भर होने के लिए साहस, विश्वास एवं परिश्रम की अति आवश्यकता है। छोटी--छोटी विपत्तियां जो हमेशा इन्सान को कमजोर कर देती हैं, इनसे परे हो जाओ, अपने को ठोस बना लो।"

कीमत रुपये 300/-

मोहित पब्लिकेशन्स

4675/21 गणपति भवन, अंसारी रोड
दरिया गंज, नई दिल्ली–110002
दूरभाष: 3255141, 3284136

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant